मूल्य आधारित शिक्षा

मूल्य आधारित शिक्षा

रमेश पोखरियाल 'निशंक'

प्रभात प्रकाशन

प्रकाशक • **प्रभात प्रकाशन प्रा. लि.**
4/19 आसफ अली रोड,
नई दिल्ली-110002
सर्वाधिकार • सुरक्षित
संस्करण • प्रथम, 2021
मूल्य • तीन सौ रुपए
मुद्रक • आर-टेक ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली

MOOLYA AADHARIT SHIKSHA
by Shri Ramesh Pokhriyal 'Nishank' ₹ 300.00
Published by Prabhat Prakashan Pvt. Ltd., 4/19 Asaf Ali Road, New Delhi-2
e-mail: prabhatbooks@gmail.com ISBN 978-93-90366-57-6

दो शब्द

हाल ही में 'यूनेस्को' की महानिदेशक मुझसे भेंट करने आईं। उन्होंने मुझसे वैश्विक परिवेश की चुनौतिपूर्ण कठिनाइयों पर चर्चा की। उन्होंने इस बात पर चिंता जताई कि विद्यालयों में अनुशासनहीनता एवं हिंसक व्यवहार की घटनाएँ निरंतर बढ़ रही हैं। उनकी इस चिंता पर मेरा यह आग्रह था कि अगर हम अपनी शिक्षा को मूल्य-आधारित और संस्कार-आधारित बना पाएँ तो हम इस प्रकार की सभी समस्याओं पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि यूनेस्को या संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन, विभिन्न देशों, समुदायों, संस्कृतियों और नागरिकों के बीच मानवीय मूल्यों की स्थापना को संभव बनाने के लिए एक सशक्त एवं व्यापक मंच प्रदान करता है। सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति, विश्व में मानवीय अधिकारों का सम्मान, गरीबों, पिछड़ों, वंचितों के अधिकारों का संरक्षण, सामाजिक, आर्थिक विकास की अवधारणा को सर्वसुलभ कराना—ये यूनेस्को के महती उद्देश्य हैं। मैंने महानिदेशक महोदया को यह जानकारी भी दी कि शिक्षण के 'मानवतावादी' पहलुओं पर जोर देते हुए भारत ने अपनी नई शिक्षा नीति में यह स्पष्ट किया है कि शिक्षा का तात्पर्य अध्यापकों, किताबों से प्राप्त जानकारी और सूचनाओं का संप्रेषण मात्र नहीं है। उन मूल्यों, योग्यताओं और प्रवृत्तियों को विकसित करना भी है, जो 'शांतिपूर्ण, न्यायोचित, समावेशी और टिकाऊ' समाज के निर्माण के लिए विश्व समुदाय को एकत्र एवं प्रेरित कर विश्व-कल्याण में योगदान देने के लिए संकल्पबद्ध कर सकें।

इसी संदर्भ में बातों-बातों में ऐसी किताबों पर चर्चा हुई, जो विद्यार्थियों

को मूल्य-आधारित शिक्षा का सही मतलब समझा सकें। भारतीय ज्ञान-परंपरा में मूल्यपरक शिक्षा का बड़ा महत्त्व है। मैंने महसूस किया कि विद्यार्थियों के लिए ऐसी पुस्तकें सर्वसुलभ होनी चाहिए, जो सरल, सहज भाषा में उन्हें मूल्यों का मतलब समझा सकें। इसके साथ ही मूल्यों का भारतीय और अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य भी प्रस्तुत कर सकें। मूल्य-आधारित शिक्षा क्या है? संस्कार युक्त शिक्षा क्या है?

एक अध्यापक होने के नाते मैं यह महसूस कर सकता हूँ कि शिक्षा संपूर्ण जीवन का सार है और शिक्षा की आधारशिला संस्कार और मूल्य होते हैं। संस्कारों से, मूल्यों से व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्माण एवं परिमार्जन होता है। सुखी एवं सफल जीवन की आधारशिला का निर्माण करने में मूल्य अत्यंत महत्त्वपूर्ण योगदान देते हैं। मूल्य-आधारित शिक्षा का अर्थ छात्रों को नैतिक मूल्यों, धैर्य, ईमानदारी, प्रेम, सद्भावना, दया, करुणा, मानवता, इत्यादि सार्वभौमिक मूल्यों को सिखाना है। मूल्य शिक्षा का संपूर्ण उद्देश्य विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में निहित है। वर्तमान समय में शिक्षा के स्तर में जो गिरावट परिलक्षित हो रही है, उसका बहुत बड़ा कारण है कि हमने शिक्षा का विकास विज्ञान व तकनीकी आधारित शिक्षा पर तथा आर्थिक समृद्धि प्रदान करनेवाली शिक्षा पर किया और उसके सुखद परिणाम आज विश्व के सामने हैं कि संसार की अनेक सॉफ्टवेयर कंपनियों के प्रमुख भारत से शिक्षा ग्रहण कर चुके हैं या भारतीय मूल के हैं। चिंताजनक बात यह है कि हमने शिक्षा की भारतीय अवधारणा 'सा विद्या या विमुक्तये' को नितांत विस्मृत कर दिया है तथा पश्चिम की अवधारणा 'Knowledge is Power' पर पूरा जोर दे दिया, जबकि आवश्यकता है इन दोनों उद्देश्यों में उचित सामंजस्य स्थापित करने की। शिक्षा को मात्र शक्ति या धन-प्राप्ति का माध्यम मात्र मानने के कारण धीरे-धीरे यह रोजगारपरक तो हुई, परंतु वास्तविक अर्थों में जीवनोपयोगी न बन पाई। किसी भी समाज या देश की प्रगति के लिए यह आवश्यक है कि बच्चों में शिक्षा के अतिरिक्त अन्य सभी मानवीय गुण विकसित होने चाहिए, ताकि वे समाज को, देश को अधिक लोकतांत्रिक एवं सामंजस्यपूर्ण बना सकें। किसी भी विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और

आध्यात्मिक आदि समस्त पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करने से ही संभव होगा। मूल्य-आधारित शिक्षा से न केवल मानवीय गुणों का विकास होगा, बल्कि हम अपनी नागरिकता के प्रति जिम्मेदारी को बेहतर ढंग से समझ पाएँगे। सोचने और जीने का तरीका लोकतांत्रिक स्तर पर विकसित करने के लिए यह आवश्यक है कि हम मूल्यों पर आधारित शिक्षा के माध्यम से धैर्य, ईमानदारी, नैतिक मूल्यों आदि का विकास करने में सफलता पा सकें।

नैतिकता पर आधारित शिक्षा हो तो उसमें मूल्य अपने आप आ जाएँगे। गुणवत्तापरक विज्ञान एवं तकनीकी शिक्षा, जहाँ तेजी से बदलते वैश्विक परिवेश के लिए विद्यार्थियों को तैयार करती है, वहीं मूल्यों पर आधारित शिक्षा उन्हें जीवन की वास्तविक चुनौतियों का मुकाबला करने हेतु तैयार करती है। प्रतिस्पर्धी अर्थव्यवस्था में बच्चों को अवसरों और संभावनाओं का लाभ उठाने योग्य बनाने के साथ ही यह भी आवश्यक है कि उनके भीतर मानवीय मूल्यों को स्थापित किया जाए। आज के माता-पिता को इस बात से अवगत होने की आवश्यकता है कि बचपन में ही बच्चों में सकारात्मक मानवीय मूल्यों की नींव पड़ जानी चाहिए, क्योंकि उस समय बच्चों का मन-मस्तिष्क अत्यंत ग्रहणशील होता है।

आज हम भौतिकतावादी युग की चकाचौंध में एक आधुनिक, परंतु बनावटी जीवन जी रहे हैं। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि हम भोग-विलासिता से भरे जीवन में रमकर मानवीय मूल्यों से दूर चले गए हैं। हम भले ही अपने आप को विज्ञान प्रौद्योगिकी और तकनीक की दृष्टि से अत्यंत सक्षम और श्रेष्ठ मानते हों, परंतु सच्चाई यह भी है कि जैसे-जैसे विज्ञान ने प्रगति की है, हमारी सामाजिक संरचना, हमारे व्यवहार में परिवर्तन आया है। हमारा आचार-व्यवहार लगातार बदला है और निरंतर बदल रहा है। हम लोगों की जीवन-शैली दिन-प्रतिदिन बदल रही है। ऐसे में कहीं-न-कहीं हमने चिर काल से स्थापित, स्वयं सिद्ध जीवन-मूल्यों को भुला दिया है।

मैं हमेशा से इस बात का प्रबल पक्षधर रहा हूँ कि शिक्षा और जीवन के लक्ष्य में अंतर नहीं होना चाहिए। आजादी के बाद से शिक्षा का संख्यात्मक रूप से काफी विस्तार हुआ, लेकिन कई मायनों में शिक्षा का यह विस्तार एकांगी

ही रह गया। उच्च शिक्षा के संवर्धन हेतु बनाए गए विभिन्न आयोगों ने नैतिक मूल्यों की बात तो की, लेकिन शिक्षा में इसका समुचित रूप से समावेश नहीं हो सका। नैतिक मूल्यों पर आधारित शिक्षा के लिए हमें समग्र शिक्षा क्षेत्र में तथा इसके परिवेश में बदलाव की आवश्यता है। हमें इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि केवल कहने से, बोलने से, चाहने भर से अँधेरा दूर नहीं होगा। जरूरत है हर विद्यार्थी के भीतर मूल्यों के दीप प्रज्वलित करने की और मूल्यों से ही शिक्षा प्रकाशमय होगी, तभी देश प्रकाशमय बन सकेगा। भौतिकतावादी परिवेश का प्रभाव इस कदर है कि आज हर विद्यार्थी कम-से-कम समय में अमीर होना चाहता है। देखा जाए तो हमारे विद्यार्थी अपनी रुचि के अनुसार नहीं, वरन् निकट भविष्य में अपने को आर्थिक रूप से सक्षम बनाने की क्षमता को देखकर संस्थाएँ पाठ्यक्रमों का चुनाव करते हैं। आज शैक्षिक संस्थान शिक्षा को अर्थ से जोड़ते हुए व्यवसायी दृष्टि से इसे उद्योग की तरह से देखते हैं और शिक्षक भी अपनी आवश्यकता की पूर्ति से प्रेरित रहते हैं।

आज अपने अध्यापक वर्ग से पूछा जाए कि मूल्य-आधारित शिक्षा क्या है तो कम लोग ही हमें संतोषजनक उत्तर दे पाएँगे। जीवन का सार शिक्षा और संस्कार है, यह वही महसूस कर सकता है, जो स्वयं संस्कारवान है। छात्रों के ज्ञानार्जन का उद्देश्य मात्र धन कमाना रह गया है। शिक्षा या ज्ञान का इसके अतिरिक्त कोई उद्देश्य हो सकता है, यह उनकी कल्पना से परे है। आवश्यकता इस बात की है कि हम इस सत्य पर दृढ़ विश्वास करें कि 'न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते' (श्रीमद्भगवद्गीता IV, 38) इस संसार में ज्ञान के सदृश पवित्र करनेवाला कुछ भी नहीं है। शिक्षा की पूर्णता कभी भी सूत्रों और समीकरणों, भाषा, सीखने तक सीमित नहीं। शिक्षा व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करती है। यह आत्मिक विकास के साथ स्वभाव में कौशल, विनम्रता और शिष्टाचार को समाहित करती है। मानवता व परोपकार इत्यादि मानवीय गुणों को सम्मिलित करती है। भारतीय संस्कृति में सदैव से 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की अवधारणा जैसे वैश्विक मूल्यों का बोलबाला रहा। 'अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचन द्वयम्। परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम्।' ने सदैव परोपकार व मानवतावादी मूल्यों की सनातन जीवन-पद्धति में महत्ता सिद्ध की।

आज के माता-पिता की आकांक्षा मात्र बच्चों को अच्छे ग्रेड/अंक तक ही सीमित रहती है, ताकि शिक्षा रूपी निवेश पर अच्छा रिटर्न हासिल हो सके। संस्थान कैसे हों, पाठ्यक्रम क्या हो, सबकुछ पैसे से प्रेरित रहता है। हमें यह समझता होना कि विद्यालय समाज का प्रकाश स्तंभ है। यह पहला पोर्टल है, जहाँ पर बच्चों को इच्छा अनुसार ढाला जा सकता है। मनुष्य अपने परिवेश से जीवंत उदाहरणों से सीखता है। व्यावहारिक, संस्कारयुक्त, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के बिना शिक्षा का एकमात्र उद्देश्य भटक जाता है।

हमें यह समझना है कि शिक्षा मात्र सूत्रों और समीकरणों, किताबी ज्ञान तक सीमित नहीं है, यह व्यावहारिक जीवन जीने की कला होने के साथ-साथ हमारे आत्मिक विकास से संबंध रखती है। नैतिकता, विनम्रता और शिष्टाचार, सभी इस शिक्षा के अत्यंत महत्त्वपूर्ण हिस्से हैं। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि माता-पिता के रूप में हमने शिक्षा को मात्र अच्छे अंकों तक सीमित कर दिया है। हम अपने निवेश पर अच्छा रिटर्न प्राप्त करने की दौड़ में यह आकलन करना भूल जाते हैं कि हमारे बच्चों ने नैतिक मूल्यों को सीखा ही नहीं। कई बार मन में सोचता हूँ कि आप किसी बूढ़े व्यक्ति को सड़क पार करने में मदद करेंगे या नहीं, यह बात इस बात पर निर्भर करता है कि आप का नैतिक व्यवहार कैसा है? आपके संस्कार कैसे हैं? आप किसी गरीब से कैसा व्यवहार करते हैं, आप महिलाओं का कितना सम्मान करते हैं? यह आपकी अंक-तालिकाओं पर निर्भर नहीं करता। आज बच्चों के चरित्र में उन शाश्वत मूल्यों को विकसित करने की आवश्यकता है, जिससे वह जीवन की किसी भी चुनौती का मुकाबला कर सके। वैसे भी प्रत्येक पीढ़ी को लोकतांत्रिक सिद्धांतों, मूल्यों, विचारों, अधिकारों और जिम्मेदारियों की अंतर्निहित अवधारणाओं को सीखने और सिखाने की नितांत आवश्यकता है।

मूल्य सभी के जीवन में सुधार करने के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं। जो कोई व्यक्ति अपने जीवन में मूल्यों को समझ लेता है, वह अपने जीवन में बनाए गए विभिन्न विकल्पों की जाँच और नियंत्रण कर सकता है। दुर्भाग्य से औद्योगीकरण, प्रतिस्पर्धा और अस्तित्व की लड़ाई में हम नैतिक मूल्यों के प्रति ढिलाई बरतते रहे हैं। प्रौद्योगिकी, तकनीक, उच्च जीवन-शैली का उदय होने

से जीवन स्तर तो जरूर ऊपर उठ सकता है, भौतिकता से समृद्ध बन सकता है, परंतु स्वार्थ पूर्ति से हम धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक भ्रष्टाचार, शैक्षिक क्षेत्रों में अनेक चुनौतियों का सामना करते हैं।

आज के व्यक्तिपरक समाज में पारिवारिक मूल्यों का विघटन होता जा रहा है, जिस कारण युवाओं में अकेलापन, अवसाद, भटकाव इत्यादि बढ़ता जा रहा है। इस तथ्य की ओर ध्यान देना आवश्यक है कि बालकों को मात्र धर्नाजन-यंत्र (Money Making Machine) बनाने की तरफ ध्यान न देकर उनमें उदात्त सकारात्मक सामाजिक मूल्य विकसित किए जाने चाहिए, क्योंकि यह प्राय: देखा गया है कि मूल्यों की कमी के कारण किशोर अपराधी बन रहे हैं। मूल्यों के अभाव के कारण पारिवारिक अव्यवस्था ने उन्हें भटका दिया है। वे ड्रग एडिक्ट बन जाते हैं या फिर शराब का सेवन करते हैं, जुआ खेलते हैं और असामाजिक गतिविधियों में लग जाते हैं।

एक विकासोन्मुखी, शांतिपूर्ण समाज के लिए समूचा परिदृश्य बदलना होगा। इसमें हमारे विद्यालयों एवं शिक्षकों की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। शिक्षक भविष्य की पीढ़ी को आकार देते हैं। एक शिक्षक के रूप में हमारी जिम्मेदारी है कि हम बच्चों के भीतर मूल्यों को रोपित करें। अनैतिक कार्यों का पालन करके अनुचित तरीकों से इच्छाओं की पूर्ति करना युवा पीढ़ी की आदत में शुमार हो चुका है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में मूल्यपरक शिक्षा को महत्त्व देना अत्यंत आवश्यक है, ताकि आनेवाली पीढ़ियाँ संस्कारित हो सकें।

यह हमारा सौभाग्य है कि 34 साल बाद भारत में आई नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी हम मानवतावादी मूल्यों का समावेश करने हेतु कटिबद्ध हैं, जिससे कि भविष्य का भारत एक सुखी, संपन्न व मानव मात्र के लिए कल्याणकारी जीवन की अवधारणा के लक्ष्यों को पूरा करने हेतु अग्रसर हो तथा संपूर्ण विश्व में शांति, प्रेम व भाईचारे की स्थापना हेतु हम ध्वजवाहक बन सकें। वैसे भी भारतीय शिक्षा परंपरा में मूल्यपरक शिक्षा का अत्यंत महत्त्व है। मानवीय मूल्य शाश्वत तथा सार्वकालिक सत्य हैं। यह मात्र भारत ही नहीं, वरन् विश्व के हर कोने में प्रासंगिक हैं। भारतीय शिक्षा पद्यपि प्राचीनकाल से ही 'सत्यं शिवं सुन्दरम्' व 'वसुधैव कुटुम्बकम्' जैसे शाश्वत एवं सार्वभौमिक मूल्यों पर

आधारित रही है। इसमें संपूर्ण भूमंडल को एक परिवार मानते हुए समष्टि के लिए कल्याणकारी, शुभ आचरण पर जोर दिया जाता रहा है। जीवन-मूल्यों के बारे में अपने केवल गुणवत्तापरक एवं मूल्यपरक शिक्षा द्वारा किसी भी राष्ट्र समाज के सामाजिक आर्थिक जीवन में नए युग का सूत्रपात में किया जा सकता है। तेजी से बदलते वैश्विक परिवेश में पहले की अपेक्षा मूल्य आधारित शिक्षा का महत्त्व काफी बढ़ गया है। विश्व में शांति, समृद्धि और विकास के लिए शिक्षा में मूल्यों का समावेश आवश्यक है, आशा की जानी चाहिए कि यह नई शुरुआत भारत से शुरू होगी।

—रमेश पोखरियाल 'निशंक'

अनुक्रम

दो शब्द *5*

1. मूल्यपरक शिक्षा—एक परिचय 15
2. मूल्य-शिक्षा की आवश्यकता 27
3. मूल्य-आधारित शिक्षा के उद्देश्य 39
4. मूल्यों के प्रकार 61
5. मूल्य-आधारित शिक्षा में विद्यालय/शिक्षक की भूमिका 84
6. राष्ट्रीय मूल्य-आधारित शिक्षा 113
7. भारतीय ज्ञान परंपरा में मूल्य-आधारित शिक्षा 122
8. वैश्विक चुनौतियाँ और मूल्यपरक शिक्षा 132

1

मूल्यपरक शिक्षा–एक परिचय

मानव सृष्टि की सर्वोत्तम कृति है। प्रत्येक मानव एक-दूसरे से भिन्न होता है। उसका आचार-विचार, व्यवहार सब किसी दूसरे प्राणी से शतश: मेल नहीं खाता। इसका कारण है—व्यक्तियों के जीवन-मूल्यों की भिन्नता। मूल्य मानव के वह मूलभूत गुण हैं, जो उसको जीवन के उद्देश्य निर्धारण करने में सहायक होते हैं। मानव का उसके आसपास के सामाजिक वातावरण के साथ कैसा संबंध होगा, इसके निर्धारण में मूल्य अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। समाज में व्यक्तियों के आचरण में जो विभिन्नता परिलक्षित होती है, जिसके आधार पर उनके मानवीय गुणों का आकलन किया जाता है, उसके मूल में भी मूल्य ही हैं। सृष्टि के प्रारंभ से ही, अनादि काल से मूल्य अस्तित्व में रहे हैं, परंतु परिवर्तनशील समय के साथ तारतम्य स्थापित करते हुए मूल्यों में भी परिवर्तन होना नितांत स्वाभावित है। तथापि मूल्यविहीन समाज की परिकल्पना कठिन ही नहीं, वरन् असंभव है। यह सर्वविदित सत्य है कि किसी भी राष्ट्र की उन्नति देश के प्राकृतिक संसाधनों के अतिरिक्त विज्ञान व तकनीकी के उच्च स्तर पर निर्भर करती है, परंतु देश के नागरिकों के उच्च मूल्यों के अभाव में देश के लिए अपनी प्रगति अक्षुण्ण रख पाना कठिन होगा।

आज हम वैज्ञानिक, तकनीकी और प्रौद्योगिक दृष्टि से उन्नत विश्व में रह रहे हैं। यह सर्वविदित तथ्य है कि इस विकास-यात्रा से समाज में व्यापक परिवर्तन आया। लोगों का दिन-प्रति-दिन का जीवन बदल रहा है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी ने संपूर्ण ब्रह्मांड को एक सूत्र में बाँध दिया है। मूल्य-आधारित शिक्षा विद्यार्थियों के आध्यात्मिक, नैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास के लिए

एक सुनिश्चित आधारशिला प्रदान करती है। विद्यार्थियों की प्रार्थना, कक्षाओं के माध्यम से जीवन के सकारात्मक मूल्यों से परिचित करने की बात हो, विद्यार्थियों को यह पता चलता है कि उनके और उनके जीवन के लिए क्या उद्देश्य हैं और उनके पास अन्य लोगों और व्यापक दुनिया के लिए क्या अनुप्रयोग है। शैक्षणिक संस्थाओं में साझा व्यवहार, साझा भाषा और आध्यात्मिक प्रतिबिंब में इन मूल्यों का प्रवर्तन विद्यार्थियों को उनकी संज्ञानात्मक समझ और उनके व्यक्तिगत 'इनर करिकुलम' दोनों को विकसित करने में सक्षम बनाता है। मेरा मानना है कि मूल्य-आधारित शिक्षा का अभ्यास स्कूल की नैतिकता और संस्कृति को प्रभावित करता है। एक विद्यार्थी का पूरी संस्था का अनुभव आध्यात्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास की नई उड़ान को संभव बनाता है। मार्टिन लूथर किंग जूनियर ने कहा है—"बुद्धिमान और चरित्र ही सच्ची शिक्षा का लक्ष्य है।"

मूल्यों की अवधारणा

वे अवधारणाएँ या मानक, जो मूल्यांकन करते हैं कि किसी व्यक्ति की भावनाएँ, विचार, कार्य व गुण वांछनीय हैं अथवा अवांछनीय और अगर हम पृथक् दृष्टिकोण से देखें तो प्रशंसनीय हैं या निंदनीय। मूल्य परक शिक्षा वास्तव में हमें यह क्षमता देती है कि हम अच्छे बुरे की पहचान कर सके।

'मूलेन आनाम्यते अभिभूयते मूलेन समं वा इति मूलम् ?'

पारदर्शी, प्राकृतिक एवं न्यायोचित आदान-प्रदान का तात्त्विक ज्ञान मूल्य की परिधि में आए है। व्यवहार में 'मूल्य' वस्तु भाव की उस क्षमता को व्यक्त करता है, जो मानव की उपयुक्त, न्यायसंगत आवश्यकताओं और इच्छाओं को संतुष्टि प्रदान करता है, परंतु उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में 'मूल्य' शब्द अर्थशास्त्रीय सीमाओं से निकलकर दर्शन, तर्क, धर्म, मनोविज्ञान के क्षेत्र में उपयोग हुआ है। जार्ज सांत्यना के अनुसार, "'मूल्य' जब अंत: प्रेरणा से प्रकट होता है और जब अंतर्प्रेरणा संज्ञान एवं संवेदना से निबंधित हो जाती है तो वे मूल्य अपने सही अस्तित्व में आते हैं।"

इन प्रवृत्तियों तथा उद्देश्यों की आपूर्ति के लिए मूल्यों को निम्न भागों में वर्गीकृत किया गया है। NCERT ने Document of Social, Moral

and Spiritual Values in Education में 83 ऐसे मूल्यों का उल्लेख किया है, जिनमें से कुछ निम्नलिखित हैं—अनुशासन, सहनशीलता, समानता, विश्वसनीयता, साहस, जिज्ञासा, अहिंसा, राष्ट्रीय एकता, देशहित, स्वच्छता, आज्ञाकारिता व अन्य।

परंतु मानव जीवन नकारात्मक मूल्यों से अछूता भी नहीं है और कहीं-न-कहीं नकारात्मक मूल्यों की वजह से ही सकारात्मक मूल्यों का वास्तविक महत्त्व ज्ञात होता है—हिंसा, कायरता, अन्याय, घृणा, धनलोलुपता इत्यादि नकारात्मक मूल्य हैं। इन नकारात्मक मूल्यों के विपरीत सहनशीलता, परोपकार, कर्तव्यपालन, शुद्ध आचार-व्यवहार, दूसरों का आदर करना, व्यक्तिगत स्वतंत्रता, कानून का नियम और जनतंत्र के मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता सब सकारात्मक मूल्य हैं और मूल्यपरक शिक्षा के अभिन्न अंग हैं। मुझे लगता है कि मूल्यपरक शिक्षा आपके भीतर संवेदनशीलता विकसित करती है और दूसरे को बेहतर तरीके से समझने का अवसर प्रदान करती है। महान् दर्शानिक एरिस्टोटल ने कहा है कि सामुद्रयों का भाग्य युवाओं की शिक्षा पर निर्भर है।

एक अध्यापक होने के नाते मूल्यों की एक श्रृंखला पर विचार करने के माध्यम से विद्यार्थियों को स्वस्थ जीवन-शैली, रिश्तों को विकसित करने और लोगों के बीच मतभेदों का सम्मान करने, नागरिकों के रूप में एक सक्रिय भूमिका निभाने और अपनी प्रतिभा और कौशल का अधिकतम लाभ उठाने के लिए आत्मविश्वास और जिम्मेदारी विकसित करने की क्षमता विकसित होती है।

चार्ल्स डार्विन द्वारा विकासवाद के सिद्धांत में भी कहा गया है कि परिवर्तन, जो एक जीव को अपने पर्यावरण के लिए बेहतर अनुकूलन करने में मदद करता है, वही जीवित रहने में मदद करेगा, बाकि जीव विलुप्त हो जाएँगे। इसी सिद्धांत के आधार पर शिक्षा के क्षेत्र में भी सकारात्मक विकास आवश्यक है। शिक्षा में यह प्रतिमान विस्थापन हर युग में होता है। बदलते युग के साथ शिक्षा की सामग्री, संदर्भ और प्रणाली निरंतर परिवर्तित होती रहती है। इस बदलाव में एक चीज, जो निरंतर जीवित रहती है, वह है—मानव और मानवता। मानवता का आधार है—मूल्य। मानव स्वभाव और व्यवहार की नींव उसके दृष्टिकोण और कौशल द्वारा परिभाषित की जाती है। यह दृष्टिकोण और कौशल मूल्यों की नींव

पर ही अपने भवन का निर्माण करते हैं।

साधारणत: मूल्य एक व्यक्ति या समाज के अच्छे व्यवहार के बारे में विश्वास है और उनके निर्णय का मुख्य प्रयोजन हैं। मूल्य के आधार पर ही व्यक्ति अपनी प्राथमिकताओं और महत्त्व को परिभाषित करता है। मूल्य, मूल आस्था या धारणा का प्रतिनिधित्व करता है, जो कि व्यक्ति के अस्तित्व की एक विशिष्ट आचरण-विधि के स्वरूप की रचना करता है। मूल्य ही व्यक्तिगत और सामाजिक विचार और व्यवहार को परिभाषित करता है।

प्रत्येक व्यक्ति की एक मूल्य प्रणाली होती है, जिसके आधार पर वह जीवन में निर्णय लेता है। उसी प्रकार प्रत्येक समाज भी अपने लिए एक मूल्य प्रणाली निर्धारित कर लेता है तथा इस मूल्य प्रणाली के आधार पर ही समाज अपने सदस्यों के आचरण व व्यवहार को श्रेणीबद्ध करता है। समाज की यह मूल्य प्रणाली ही संस्कृति कहलाती है। मूल्य ही मनुष्य के जीवन के आदर्श, लक्ष्य, गंतव्य एवं साध्य बनते हैं, जिनकी प्राप्ति हेतु मानव सतत प्रयत्नशील रहता है।

इस संदर्भ में सबसे पहले मूल्यों का भली प्रकार अर्थ समझना आवश्यक है। ऊपर दिए गए वर्णन से यह स्पष्ट होता है कि मूल्य मानव-जीवन के वह आदर्श या लक्ष्य हैं, जिन्हें प्राप्त करना वह अपने जीवन का ध्येय बना लेता है। इसके साथ ही यह भी स्पष्ट है कि यह मूल्य ही उसके जीवन को यथार्थता प्रदान करते हैं। जिस प्रकार जीवन की विभिन्न वस्तुओं के प्रति अलग-अलग व्यक्तियों की अवधारणाएँ अलग-अलग होती हैं। इसके आधार पर हम यह कह सकते हैं कि उनकी दृष्टि में दोनों का मूल्य अलग-अलग है। एक व्यक्ति किसी लक्ष्य की प्राप्ति में अपना संपूर्ण जीवन लगा देता है, परंतु दूसरा व्यक्ति उस बारे में सोचता तक नहीं। इसको एक उदाहरण द्वारा समझते हैं। हम सब जानते हैं कि प्राचीनकाल में सत्यवादी राजा हरिश्चंद्र को अपने सत्य का पालन करने के लिए अपना राज्य, पत्नी व पुत्र तक को त्यागना पड़ा था। उनकी दृष्टि में सत्य का मूल्य राज्य, पत्नी व पुत्र से भी अधिक था, परंतु उन्हीं परिस्थितियों में कोई अन्य व्यक्ति यह करता, इसमें संशय है, क्योंकि सामान्य व्यक्ति की दृष्टि में सत्य राज्य से अधिक मूल्यवान नहीं होगा, अत: इससे यह सिद्ध होता है कि

मूल्य व्यक्तिनिष्ठ होते हैं। इसके साथ ही यह भी विचारणीय तथ्य है कि मूल्यों की एक श्रेणी ऐसी होती है, जो देश, काल के हिसाब से बदलती रहती है, जो मूल्य आज से सौ (100) वर्ष पूर्व के भारतीय समाज में जीवन की आधारशिला थे, बहुत संभव है कि उनमें से अनेक मूल्य अप्रासंगिक हो गए हों, अर्थात् उनकी समाज की दृष्टि में उपयोगिता न रह गई हो।

भारतीय दर्शन में मूल्य मीमांसा का प्राचीनकाल से ही अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है, जबकि इसके विपरीत पश्चिमी देशों में तुलनात्मक रूप से मूल्य मीमांसा अधिक विकसित नहीं हो पाई, जबकि सर्वविदित तथ्य है कि प्लेटो, सुकरात, अरस्तू, शापेनहावर एवं स्पिनोजा इत्यादि ने अपने दर्शन द्वारा मूल्यों की अवधारणा से पश्चिमी जगत् ही नहीं, वरन् संपूर्ण विश्व को लाभान्वित किया। मूल्य प्रमुखत: नैतिक, सामाजिक, सौंदर्यपरक, धार्मिक इत्यादि माने जाते हैं, परंतु यह मात्र यहीं तक सीमित नहीं है, वरन् आर्थिक, राजनैतिक, उपयोगितावादी इत्यादि भी हैं। इस पर हम आगे के अध्याय में विस्तार से चर्चा करेंगे। मुख्यत: मूल्य की अवधारणा नैतिक शास्त्र व धर्म से संबंधित है। धर्म, दर्शन व शिक्षा तीनों आपस में संबंधित हैं और तीनों का ही मूल्यों से संबंध है। तीनों ही मानव जीवन को उन्नत बनाने हेतु आवश्यक सोपान के रूप में कार्य करते हैं। धर्म एवं दर्शन का उद्देश्य नैतिक मूल्यों का विकास कर मानव के जीवन को अर्थपूर्ण (Meaningful) बनाना है तो शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति का सर्वांगीण विकास कर उसके व्यक्तित्व में सकारात्मक परिवर्तन कर, उसे समाज में भली प्रकार सामंजस्य स्थापित करने योग्य बनाना है। सर्वांगीण विकास में जीविकोपार्जन हेतु कौशल प्राप्त करना भी सम्मिलित है। इन तीनों का संयोग जीवन में सार्थकता लाता है। अन्यथा एक धनी व्यक्ति यदि वह नैतिक मूल्यों से रहित हो, समाज में वास्तविक अर्थ में सम्मान नहीं पाता। इसी प्रकार एक उच्च नैतिक मूल्यवाला व्यक्ति यदि समस्त मानवीय मूल्यों दया, करुणा, सौंदर्य–बोध, इत्यादि से परिपूर्ण है, परंतु उसमें जीविकोपार्जन हेतु आवश्यक कौशल का अभाव हो तो वह व्यक्ति भी समाज के उत्थान में, राष्ट्र के उत्थान में पूर्णत: योगदान नहीं दे पाएगा।

मूल्य मात्र आदर्श अवधारणा ही नहीं, अपितु सशक्तीकरण के कारक हैं।

धार्मिक कट्टरवाद, पर्यावरण में गिरावट, विज्ञान और प्रौद्योगिकी का दुरुपयोग, असमानताएँ, जनसंचार माध्यमों का दुष्प्रभाव, वैश्वीकरण, व्यवसायीकरण जैसी कुरीतियों के विरुद्ध मूल्य और मूल्यपरक शिक्षा एक सार्थक अस्त्र हैं। मूल्यपरक शिक्षा का मुख्य उद्देश्य ही आनेवाली पीढ़ी को स्पष्ट दृष्टिकोण और कौशल के साथ सशक्त बनाना है। समकालीन परिवेशों में स्पष्ट दृष्टिकोण और कौशल का उपयोग करने की क्षमता प्रदान करना है। मूल्यों को विचारों के स्रोत और मार्गदर्शक सिद्धांतों के रूप में परिभाषित किया जाता है, जो किसी भी व्यक्ति के अच्छे आचरण और सकारात्मक व्यवहार के लिए अनिवार्य है।

कोविड-19 महामारी और मूल्यों का महत्त्व

मूल्य ही व्यक्ति के विचारों और भावनाओं को जोड़ सकारात्मक कर्तव्य का पथ-प्रशस्त करते हैं। मूल्य एक बीज की भाँति शिशु के हृदय में रोप दिया जाता है, जो पहले विचारों के रूप में अंकुरित होता है और उसके कृत्यों के पौधे को सींचते हुए व्यवहार के पेड़ जैसा चारों दिशाओं में अपनी शाखाएँ फैलाता है। प्रौद्योगिकी के कारण तेजी से सिकुड़ते हुए विश्व ने गाँव का स्वरूप ले लिया है, ऐसी स्थिति में संसार के एक छोर में होनेवाले बदलाव दूसरे को अछूता नहीं छोड़ते। इसका उदाहरण वैश्विक त्रासदी कोविड-19 है। इस 'वैश्विक आपदा' ने समस्त मानवजाति को विक्षुब्ध कर दिया है। कोविड-19 महामारी के वैश्विक आपातकाल ने हम सभी को अप्रत्याशित अनिश्चितता के दौर में धकेल दिया है, जिससे हमारा दैनिक जीवन, हमारे क्रियाकलाप, हमारी आर्थिक गतिविधियाँ सब प्रभावित हुई हैं। इस संक्रमण ने हमारे शिक्षा जगत् के लिए बड़ी चुनौती खड़ी कर दी है। विश्व की आबादी के एक-तिहाई से अधिक लोग किसी-न-किसी प्रतिबंध के तहत अपने घरों में कैद हैं। जाहिर है, आपदा की इस घड़ी ने सबको झकझोरकर रख दिया है। देश भर में लोगों का दैनिक जीवन ठहर सा गया मालूम होता है। किस प्रकार एक देश में फैले संक्रामक रोग ने संपूर्ण विश्व को अपनी गिरफ्त में ले लिया, यह प्रमाणित करता है कि कोई भी देश एकल नहीं, अपितु समस्त पृथ्वी एक अस्तित्व में गुँथ गई है। विश्व कल्याण और जीवन की गुणवत्ता के पक्ष में वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति को विनियमित करना उतना

ही आवश्यक है, जितना पौधे से अवांछित खर-पतवारों की छँटाई करना। जिस प्रकार निराशा में भी एक उम्मीद की किरण होती है, उसी प्रकार आपदा का समय हमें प्रकृति, विज्ञान और विकास को एक साथ जीने और गंभीरता से लेने की दिशा में प्रेरित करता है। अनियमित या अनियंत्रित विज्ञान और विकास की होड़, मानव सभ्यता ही नहीं, अपितु मानव अस्तित्व को भी घातक विनाश की ओर ले जाती है। हिंसा, आतंकवाद, प्रदूषण, प्रतिद्वंद्विता और परमाणु बम के भय से ग्रसित दुनिया के तमाम देश अपने विकास और आर्थिक क्षमताओं का दंभ भरते रहे और एक छोटे से विषाणु ने सबको घुटने पर ला दिया। इससे सिद्ध होता है कि विश्व में व्याप्त विलासिता और गरीबी के बीच की निरंतर बढ़ती खाई मनुष्य में निराशा, अवसाद, अकेलापन, जीवन की लक्ष्यहीनता भ्रमित मूल्य प्रणाली और मूल्यों के क्षरण का कारक बनती है। यही कारक अकसर शराब, नशीली दवाओं की लत और आत्महत्या का एक गंभीर मनोवैज्ञानिक कारण बनकर भी उभरता है। ऐसी स्थिति में मानवता के भविष्य का अनुमान लगाना दुष्कर लगता है।

संपूर्ण विश्व में कोरोना वायरस महामारी की वजह से सामाजिक स्वास्थ्य के लिए आपातकाल एवं अनिश्चितता का वातावरण बना है। दुनिया के लगभग 210 देशों में कोरोना वायरस (कोविड-19) संक्रमण की वजह से मानव जीवन बुरी तरह अस्त-व्यस्त एवं प्रभावित हुआ है। पूरा विश्व कोरोना के दुष्चक्र से निकलने के लिए असाधारण कदमों और उपायों की जरूरत महसूस कर रहा है। दुर्भाग्य से विश्व के एक-तिहाई से अधिक लोग लॉकडाउन की वजह से अपने घरों पर बैठने के लिए मजबूर हैं। त्रासदी का आलम यह है कि बड़े एवं अत्याधुनिक अस्पतालों तथा उत्कृष्ट सामाजिक सुरक्षा वाले हमारे समृद्धतम राष्ट्र आज कोविड-19 की पीड़ा से सबसे ज्यादा मजबूर एवं परास्त दिखाई दे रहे हैं। अमेरिका, इटली, स्पेन, जर्मनी, फ्रांस, बेल्जियम और चीन जैसे शक्तिशाली देश भी इस संक्रमण के समक्ष लाचार दिखाई दे रहे हैं।

कोविड-19 संकट का चुनौतिपूर्ण समय सामाजिक बंधन और लोगों को जोड़ने और उनकी मदद करने के अन्य तरीकों के लिए एक शानदार अवसर प्रदान करता है। मुसीबत के इस समय में 'हम एक साथ हैं' की भावना हमें

अपने सामाजिक पक्ष को फिर से जोड़ने और अधिक सामाजिक सामंजस्य बनाने का मौका देता है।

अगर हम अजर-अमर भारतीय संस्कृति के शाश्वत मूल्यों पर दृष्टिपात करें तो हम पाएँगे कि भारतीय जीवन-शैली और सांस्कृतिक प्रथाएँ प्रकृति की रक्षा के विज्ञान पर आधारित हैं और ग्लोबल वार्मिंग जैसे पर्यावरणीय मुद्दों को हल करने के लिए महत्त्वपूर्ण हैं। भारतीय दर्शन, जीवन-शैली, परंपराएँ और सांस्कृतिक प्रथाएँ प्रकृति की रक्षा के विज्ञान पर आधारित हैं। हम सबको संकट की इस घड़ी में 'हम एक साथ हैं' की भावना से सामाजिक सहयोग की नई इबारत लिखनी होगी।

मूल्य क्या है? हिंदू जीवन-शैली मानव जीवन की गुणवत्ता वृद्धि हेतु चार पुरुषार्थ या मुख्य मूल्य प्रदान करती है। वे चार पुरुषार्थ मानवीय मूल्यों के निर्माण को मूर्त रूप देते हैं—

- अर्थ (धन के आर्थिक मूल्य),
- काम (सुख का मनोवैज्ञानिक मूल्य),
- धर्म (नैतिक मूल्य),
- मोक्ष (मुक्ति)।

यहाँ यह विचारणीय तथ्य है कि इन चारों पुरुषार्थों में से 'काम' तथा 'अर्थ' यदि शरीर के स्तर पर महत्त्व रखते हैं तो 'धर्म' व 'मोक्ष' मानव की आत्मा का गंतव्य है। जीवन की संपूर्णता के लिए इन चारों का संतुलन नितांत आवश्यक है। शिक्षा मात्र 'काम' व 'अर्थ' के उद्देश्यों की पूर्ति का साधन न बने, वरन् वह व्यक्ति के 'धर्म' व 'मोक्ष' की प्राप्ति का मार्ग भी प्रशस्त करे। यहाँ 'धर्म' शब्द को मानव धर्म के रूप में रेखांकित किया जाए तो अधिक समीचीन होगा। अर्थात् शिक्षा का पाठ्यक्रम इस प्रकार निर्धारित किया जाना चाहिए कि जीवनोपार्जन के साथ ही व्यक्ति में समाज, राष्ट्र व अंततः विश्व कल्याण के भाव जाग्रत् हों।

सार्थक जीवनयापन मात्र मूल्ययुक्त आचरण के माध्यम से होता है, जिसके लिए मूल पापों के खिलाफ खड़ा होना अनिवार्य है। जैसा कि महात्मा गांधी ने हमें सात पापों के प्रति आगाह किया है, जो हमें नष्ट कर सकते हैं—

- अंतरात्मा के बिना खुशी,

- सिद्धांतों के बिना राजनीति,
- भक्ति के बिना प्रार्थना,
- चरित्र के बिना शिक्षा,
- काम के बिना धन,
- मानवता के बिना विज्ञान और
- बिना नैतिकता के वाणिज्य।

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में निर्णय लेते समय मूल्य ही मुख्य आधार बनते हैं। जहाँ भी व्यक्ति दो विकल्पों में से किसी एक का चयन करता है, इस चयन से सिद्ध होता है कि चुनी गई वस्तु का उसकी दृष्टि में अधिक मूल्य है।

शिक्षाविद् और आधुनिक विचारकों ने आधुनिक शिक्षा में समग्र विकास की कमी और मूल्यों के निरंतर घटते स्तर को एक चिंता का विषय बताया है। इस दिशा में व्यक्ति विकास का कार्य, शिक्षा का ही दायित्व है। शैक्षिक अनुभव को बढ़ाने के लिए शिक्षा प्रणाली अकसर गैर-संज्ञानात्मक डोमेन की उपेक्षा करती है और केवल शिक्षा के संज्ञानात्मक डोमेन पर ध्यान केंद्रित करती है। जिसके परिणामस्वरूप मानव हृदय में दया, शांति, नैतिकता और आध्यात्मिकता के भावों का अभाव हो गया है। व्यावहारिक जरूरतों को पूरा करने की प्रतिस्पर्धा ने ज्ञान और कौशल को मात्र उपभोग की वस्तु बना दिया है। शिक्षा वैश्विक नागरिक बनाने की एक प्रक्रिया है, न कि भौतिकवादी उपलब्धि, जिसे प्रदर्शन में प्रदर्शित किया जा सकता है। शिक्षा का सबसे अच्छा प्रदर्शन एक व्यक्ति का मूल्य-आधारित विचार है, जो उसके द्वारा किए गए कार्यों में परिवर्तित हो जाता है और इस प्रकार आदतों का निर्माण करता है। इन आदतों से व्यक्ति, परिवार, समाज और समुदाय का व्यवहार एवं व्यावहारिक दृष्टिकोण बनता है, जो किसी भी सभ्यता का आधार होता है।

विश्व के बृहत्तम शिक्षा तंत्र का हिस्सा होने के कारण मुझे लगा कि मुझे भी इस महत्त्वपूर्ण विषय पर अपने अनुभव साझा करने चाहिए, क्योंकि वैश्विक नागरिक और नेतृत्व का निर्माण तभी संभव है, जब हमारे बच्चों के भीतर मूल्य और सुसंस्कार स्थापित हों।

अगर हम सबको अपने अस्तित्व को बचाए रखना है तो अपने परंपरागत

मूल्यों को जीवन में अपनाकर प्रकृति के साथ पूर्ण समन्वय बनाना होगा। तेजी से बदलते हुए वैश्विक परिवेश में यह उत्साहजनक है कि आज संपूर्ण मानवता इस बात को मानने लगी है कि भारतीय जीवन-शैली और सांस्कृतिक प्रथाएँ प्रकृति की रक्षा के विज्ञान पर आधारित हैं। हमारी जीवन-शैली, सांस्कृतिक परंपराएँ विज्ञान की हर कसौटी पर खरी उतरती हैं, अगर हम अपने रीति-रिवाजों, अपनी मान्यताओं पर गहनता से विचार करें तो पाएँगे कि हमारे दूरदृष्टा ऋषि-मुनियों की सोच पूरी तरह से वैज्ञानिक और नवाचार युक्त थी। मौसम परिवर्तन जैसे जटिल पर्यावरणीय मुद्दों को हल करने के लिए हमारी सोच अत्यंत व्यावहारिक और कारगर है। यजुर्वेद में *'द्यौः शान्तिरंतरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिब्रह्म शान्तिः सर्वं शान्तिः, शान्तिरेव शान्तिः, सामा शान्तिरेधि॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥'* (शुक्ल यजुर्वेद, 36/17)

शांतिपाठ के माध्यम से हमारे ऋषि सर्वशक्तिमान से समस्त पृथ्वी, वनस्पति, परब्रह्म सत्ता, संपूर्ण ब्रह्मांड, कण-कण में शांति की प्रार्थना करते हैं। इतिहास साक्षी है कि हजारों साल पूर्व वैदिक काल से आज तक मुनियों, चिंतकों और मनीषियों द्वारा विभिन्न माध्यमों से पर्यावरण के संरक्षण संवर्धन हेतु अपनी चिंता को अभिव्यक्त किया गया। इन लोगों द्वारा मानवजाति को पर्यावरण के प्रति सचेत करने का प्रयत्न किया जाता रहा है। वैदिक ऋषियों ने लोगों को प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित कर समग्र तरीके से पर्यावरण और इसके प्रत्येक घटकों के महत्त्व को प्रतिपादित तो किया ही है, साथ ही मनुष्य के जीवन में उनके पर्यावरणीय महत्त्व को भी भलीभाँति स्वीकार किया है।

स्वच्छ वातावरण की महत्ता को आज भी हम महसूस कर सकते हैं। पर्यावरण पर लॉकडाउन का असर साफ दिखने लगा है। वर्षों बाद अब साफ नीला आसमान दिखने लगा है, साथ ही वर्षों पहले खो चुका पक्षियों के मधुर स्वर का कलरव अब अनायास ही दोबारा सुनाई देने लगा है। आज पूरा विश्व समुदाय पूरी शिद्दत से महसूस करता है कि (सामान्य परिस्थितियों में) हम सबको एक स्थिर संतुलन बनाए रखने के लिए गंभीर प्रयास करने चाहिए। हमें केवल उतना ही संसाधनों का उपभोग करना चाहिए, जितना हमारे लिए

आवश्यक हो। वैज्ञानिक भी इस बात का समर्थन करते हैं कि माँ वसुधा हम सबकी भूख एवं आवश्यकता पूर्ति करने में सक्षम है, परंतु हमें संसाधनों का विवेकपूर्ण दोहन करना चाहिए। उपनिषदों में भी कहा गया है—

तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्। (ईशोपनिषद्)

दुर्भाग्य से हमने भौतिकवाद की चकाचौंध में अपने क्षुद्र स्वार्थों के लिए संसाधनों का अंधाधुंध शोषण किया है। फिर सतत विकास लक्ष्यों के प्राप्ति का रास्ता भी तो यहीं से होकर गुजरता है। प्रकृति का संरक्षण ही हमें जीवन प्रदान करता है। वस्तुतः देखा जाए तो प्रकृति के अनुरूप प्रवृत्ति ही संस्कृति है। प्रकृति के विपरीत प्रवृत्ति विकृति को जन्म देती है। संस्कृति जहाँ सृजनात्मक है, वहीं विकृति विध्वंस करती है। यह विध्वंस चाहे हमारे प्राकृतिक संसाधनों (जल, जमीन, जंगल) का हो, हमारे सद्विचारों, मानवीय संवेदनाओं का या फिर हमारे शाश्वत मूल्यों का हो। इसे अपना सौभाग्य मानता हूँ कि मेरा जन्म हिमालय में हुआ। वह हिमालय, जो भारत की संस्कृति, भारत की अस्मिता का गौरव स्तंभ है। माँ भारती को महिमामंडित करने वाला कोई भी आयाम हो—भौगोलिक या प्राकृतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आध्यात्मिक या नैतिक, ये सब हिमालय से प्रेरित होते हैं। अद्भुत नैसर्गिक सौंदर्य से परिपूर्ण यह हिमालय, जहाँ एशिया का वाटर टावर है, वहीं अध्यात्म और योग की पहली पाठशाला है। भारत की संस्कृति का प्राण हिमालय, असीम प्राकृतिक संसाधनों का भंडार है। गंगा-यमुना सहित इसकी अमृतमयी जलधाराएँ नवजीवन का संचार करती हैं। वर्ष 2009 में समस्त जलधाराओं के संरक्षण, संवर्धन हेतु गंगोत्तरी से 'स्पर्श गंगा अभियान' की शुरुआत की गई, जो आज जल संरक्षण की दिशा में एक सफल अंतरराष्ट्रीय अभियान बन चुका है।

मानव गतिविधियों और प्रकृति पर उसके प्रभाव का विश्लेषण किया जाए तो यह निश्चित है कि हमें प्रकृति के साथ अपने संबंधों पर पुनर्विचार करने की आवश्यकता है। इस बात में जरा भी संदेह नहीं है कि कोविड-19 से उपजे हालात सुरक्षित, स्वच्छ और टिकाऊ प्राकृतिक पर्यावरण में रहने की अहमियत को न केवल रेखांकित करते हैं, बल्कि उसकी अनिवार्यता परिलक्षित करते हैं।

उम्मीद और प्रार्थना है कि कोरोना वायरस नियंत्रित हो जाएगा और जीवन

जल्द ही सामान्य हो जाएगा। हम फिर से अपनी पुरानी भाग-दौड़ वाली जिंदगी में लौट जाएँगे। पुनः हम व्यस्तता, प्रतिस्पर्धा, अपना सर्वोत्तम देने की ललक में मशगूल हो जाएँगे। हाँ, संकट के इन दिनों से कुछ सीख पाएँ तो हम मानवता का कल्याण सुनिश्चित कर सकते हैं। मेरा मानना है कि संक्रमण की इस कठिन घड़ी में संपूर्ण मानवता को कोरोना के दंश से सीख लेने की अत्यंत आवश्यकता है। हमें समझना चाहिए कि अगर हम प्रकृति से खिलवाड़ बंद नहीं करेंगे तो वह दिन दूर नहीं, जब इनसानों के रूप में हमारा अस्तित्व खतरे में पड़ जाएगा। अगर इन विषम परिस्थितियों के अनुभव से अपने भीतर प्रकृति से बेहतरीन सामंजस्य स्थापित करने की भावना विकसित कर सकें और समझदारी से संसाधनों का उपयोग करने का संकल्प ले सकें तो हमारी काफी समस्याएँ स्वतः ही हल हो जाएँगी। आज आवश्यकता है कि हम प्रकृति से पूर्ण समन्वय स्थापित कर अपने परंपरागत शाश्वत मूल्यों की आधारशिला पर जीवन-शैली का निर्माण करें। विशुद्ध भौतिकतावादी दृष्टिकोण त्यागकर हमें परोपकार की भावना से प्रेरित होकर आपसी सहयोगात्मक प्रयासों से समाज हित, राष्ट्र निर्माण, विश्व कल्याण के लिए संकल्पबद्ध होने की जरूरत है, तभी जीवन की सार्थकता सिद्ध हो सकती है।

□

2

मूल्य-शिक्षा की आवश्यकता

बालक के सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षा सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण घटक है। शिक्षा एक ऐसा निवेश है, जिसमें सदैव सुनिश्चित लाभ है। शिक्षा मात्र जीविकोपार्जन का साधन नहीं, वरन् यह मनुष्य में दैवीय गुण विकसित कर मानव में छिपे देवत्व को विकसित करती है। यह तभी संभव है, जब सोच-समझकर इस दिशा में प्रयास किए जाएँ, मूल्यपरक शिक्षा इस दिशा में पहला कदम है। बचपन से ही यदि बालक में मूल्यों के प्रति जागरूकता पैदा की जाए तो इस लक्ष्य को आसानी से प्राप्त किया जा सकता है।

शिक्षा द्वारा बालक में मूल्य डाले जा सकते हैं, इस संबंध में सभी विद्वानों में एकमत नहीं है। एक ओर जहाँ पश्चिम के सर्वश्रेष्ठ दार्शनिक सुकरात का मानना है कि 'ज्ञान ही सद्गुण है' अर्थात् यदि बालकों को आरंभ से ही मूल्यों का ज्ञान दे दिया जाए तो उनका ग्रहणशील मन उन मूल्यों को शीघ्र ही आत्मसात् कर लेगा तथा उनमें सभी अच्छे मूल्य विकसित हो जाएँगे। अर्थात् यदि मानवता, परोपकार, सत्य, दया, सहनशीलता इत्यादि सद्गुणों (मूल्यों) से बचपन में ही बालकों का परिचय करा दिया जाए तो वे इनको अपने आचरण में ढाल लेंगे। इसी कथन के विपरीत विचारधारा के दार्शनिकों का मानना है कि मूल्य बालक में जन्मजात होते हैं, उन्हें किसी संस्था द्वारा बालक में मूल्य विकसित करने की संकल्पना खोखली एवं निराधार लगती है।

तथापि बालक के चरित्र-निर्माण में तथा उसके संस्कारों के निर्माण में विद्यालय बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है। प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री एडम्स शिक्षा को एक द्विपदीय प्रक्रिया (Biopolar Process) मानते हैं।

शिक्षा का लक्ष्य छात्र के व्यवहारों में अपेक्षित परिवर्तन लाना है, जिस उद्देश्य की पूर्ति हेतु शिक्षक विभिन्न प्रकार की प्रविधियाँ अपनाता है तथा व्यूह रचना करता है। यदि मूल्यों के संवर्धन हेतु प्रभावी रणनीति अपनाई जाएगी तो निश्चित ही इसमें सफलता मिलेगी। इसी क्रम में सी.वी. गुड ने लिखा है—"मूल्य वह चारित्रिक विशेषता है, जो मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और सौंदर्य-बोध की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण मानी जाती है।" स्पष्ट है कि उन्होंने भी मूल्यों के सकारात्मक पक्ष पर ही विश्वास प्रकट किया। कनिंघम के विचार में शिक्षा के मूल्य ही शिक्षा के लक्ष्य होते हैं, इन्हीं गुणों एवं क्षमताओं को शिक्षा द्वारा प्रेरित किया जाता है। इन्हीं को आंतरिक मूल्य (Intrinsic Value) के रूप में जाना जाता है, अत: शिक्षा के लक्ष्य एवं मूल्यों को समानार्थी के रूप में लिया गया। यहाँ पर यह उद्धृत करना समीचीन होगा कि स्वामी विवेकानंद ने शिक्षा के उद्देश्यों के बारे में चर्चा करते हुए कहा था—"The aim of education is man making and character building." अर्थात् शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य एवं चरित्र का निर्माण है। उपर्युक्त विद्वानों के कथनों से सिद्ध होता है कि मूल्य मानव जीवन की आधारशिला हैं तथा मूल्य शिक्षा एक स्वस्थ समाज के निर्माण के लिए अत्यंत आवश्यक है। वस्तुत: संपूर्ण विश्व में युवा पीढ़ी में जो आज भटकाव एवं दिशाहीनता दृष्टिगोचर हो रही है, सम्यक् मूल्य शिक्षा का अभाव उसका एक बहुत बड़ा कारण है। भारतीय समाज में भी धीरे-धीरे व्यक्तिवाद हावी होता जा रहा है तथा पारिवारिक स्वरूप में विघटन आ रहा है। समय का चक्र बदलने के साथ परिवर्तन की यह प्रक्रिया इतनी तीव्र है कि बदलते हर दशक के साथ व्यक्ति का अकेलापन बढ़ता जा रहा है। इसके पीछे एक घटक शिक्षा में मूल्यों पर उचित जोर न दिया जाना भी हो सकता है; हालाँकि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद शिक्षा की उन्नति हेतु बने हर आयोग, हर कमीशन ने शिक्षा में मूल्यों के समावेश पर बल दिया।

प्राचीनकाल से यह कहा जाता है, 'सा विद्या या विमुक्तये', जिसका अर्थ है कि शिक्षा वह है, जो कि मुक्ति प्रदान करती है। यह छोटा सा संस्कृत वाक्यांश अनिवार्य रूप से मूल्य और शिक्षा का सार है, जो सभी दृष्टिकोणों में प्रासंगिक है। शिक्षा का एक उद्देश्य विद्यार्थी में मानवोचित गुणों को विकसित करना भी

है। इसी संदर्भ में शिक्षा को परिभाषित करते हुए स्वामी विवेकानंद ने लिखा है, "मनुष्य की अंतर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति करना ही शिक्षा है।" यह मूल्य ही हैं, जो कि मानव को पूर्णता की ओर अग्रसर करते हैं, अत: मूल्य शिक्षा का महत्त्व स्वयंसिद्ध हैं। पाश्चात्य विद्वानों ने भी मूल्य शिक्षा की आवश्यकता पर बल दिया। "मूल्यों के अभाव में शिक्षा की उपयोगिता मात्र मनुष्य को अधिक चतुर-शैतान बनाने के लिए है।" सी.एस. लुईस।

मूल्यपरक शिक्षा संस्कारों के पीढ़ी-दर-पीढ़ी के स्थानांतरण को कहते हैं। मूल्यपरक शिक्षा मजबूत चरित्र व व्यक्तित्व को विकसित करती है। मूल्यों पर आधारित शिक्षा का प्राथमिक उद्देश्य छात्र को बाहरी दुनिया का सामना करने के लिए सही दृष्टिकोण और मानकों का ज्ञान देना है। मूल्यपरक शिक्षा एक छात्र के समग्र चरित्र विकास की सतत प्रक्रिया है, इसमें चरित्र विकास ही नहीं, अपितु व्यक्तित्व विकास और आध्यात्मिक विकास भी शामिल है। व्यक्तित्व जन्मजात नहीं होता है, इसे उचित शैक्षिक और पारिवारिक वातावरण के साथ मनुष्य में विकसित किया जा सकता है।

मूल्यपरक शिक्षा की विशेषताएँ और अवधारणा स्कूल और समाज में एक साझा मूल्य प्रणाली होती है, जो उनके साझा सकारात्मक मानव-मूल्यों पर आधारित होती है। यही मूल्यों की विरासत नई पीढ़ी को दिशा ज्ञान और एक स्थिर एवं नैतिक विश्व समुदाय बनाने के बारे में प्रतिबद्ध दृष्टिकोण प्रदान करती है। सकारात्मक मूल्यों की सूची में सम्मान, ईमानदारी, करुणा, देखभाल, विनम्रता और जिम्मेदारी जैसे आधारभूत मूल्य शामिल हैं। केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने इन्हीं सकारात्मक मानवीय मूल्यों को विद्यालयों में शिक्षा के गुणात्मक सुधार को बढ़ावा देने के प्रयोजन से निहित किया है। एक मूल्य-आधारित पाठ्यक्रम स्व-मूल्यांकन के आधार पर एक शैक्षिक दर्शन को बढ़ावा देने का प्रयास करता है। मूल्यपरक पाठ्यक्रम अच्छी शैक्षिक प्रथाओं के आधार के रूप में सिद्धांतों के मूल्यों या 'शब्दावली' के विचार को स्वरूप देता है। रवींद्रनाथ टैगोर ने मूल्यों को जीवन में अपनाने के लिए लिखा है, "मैं सोया और स्वप्न देखा कि जीवन आनंद है। मैं जागा और देखा कि जीवन सेवा है। मैंने सेवा की और पाया कि सेवा आनंद है।" टैगोर के अनुसार मानवजाति

के कल्याण हेतु की गई सेवा ही जीवन को सुखमय बनाने का एकमात्र सूत्र है। रवींद्रनाथ टैगोर के कथनानुसार, "हम महानता के सबसे करीब तब होते हैं, जब हम विनम्रता में महान् होते हैं।"

प्राचीन भारत में प्रचलित गुरुकुल प्रणाली की शिक्षा में छात्रों के चरित्र-निर्माण पर जोर दिया जाता था। गुरुकुल प्रणाली के अंतर्गत बच्चे घर पर और सामाजिक जीवन में प्रचलित मूल्यों का अवलोकन कर सीख रहे थे। यह प्रणाली अठारहवीं शताब्दी तक प्रचलित थी। गुरुकुल प्रणाली के चलते हिंदुस्तान को 'सोने की चिड़िया' कहा जाता था। आज से तकरीबन दो सौ साल पहले विश्व निर्यात में ब्रिटेन की हिस्सेदारी केवल 9 प्रतिशत थी, जबकि भारत की हिस्सेदारी 19 प्रतिशत थी। वर्तमान में अप्रैल 2019 में जारी विश्व व्यापार संगठन के आँकड़ों के अनुसार, वर्ष 2018 के लिए व्यापार के लिए वैश्विक निर्यात में भारत की हिस्सेदारी 1.7 प्रतिशत थी। सोचनेवाली बात यह है कि ऐसा क्या बदल गया कि इन दो सौ सालों में कि आजादी के 72 साल बाद भी भारत धीरे-धीरे अपने आत्मबल व परिश्रम से इस स्थिति से उबरने का प्रयास कर रहा है। समझनेवाली बात यह है कि सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दी में अधिकतर विदेशी धन की तलाश में भारत आए। अर्नेस्ट वुड ने अपनी किताब 'ए फॉरेनर डिफेंड्स मदर इंडिया' में भारत की समृद्धि का वर्णन करते हुए भारत की मिट्टी को परदेश और दूर क्षेत्रों के लोगों के लिए भी उपजाऊ होने की बात कही। वे लिखते हैं कि भारत की भूमि ने विदेशी व्यापारियों की संपत्ति की माँग को सदैव पूरा किया और भारत आने के लिए एक वाक्यांश बन गया, 'पगोडा पेड़ को हिला देना', अर्थात् आसान संवर्धन का स्रोत खोजना। इस पतन का कारण महात्मा गांधीजी ने 29 अगस्त, 1931 लंदन में द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में अपने व्याख्यान में कहा, "शिक्षा का सुंदर वृक्ष आप ब्रिटिशों ने काट दिया था, इसलिए आज भारत सौ साल पहले की तुलना में कहीं अधिक निरक्षर है।" समृद्ध भारत के धन को विनियमित करने के ध्येय से टी.बी. मैकाले को भारत भेजा गया। मैकाले की कार्यसूची में भारत के धन की दिशा निर्धारण, शिक्षा के खर्चे और माध्यम की धारा प्रशस्त करना और भारतीयों को शिक्षित करने का तरीका खोजना शामिल था। इसी बीच एक घटना हुई। मैकाले ऊटी में अपने

निवास पर थे। उनके निवास के पास एक भारतीय अधिकारी का कार्यालय था। उन्होंने देखा कि वह भारतीय अधिकारी अपने कार्यालय के बाहर बैठे एक चपरासी के पैर छूकर आगे बड़ा। इस घटना ने मैकाले को आश्चर्यचकित कर दिया। उनको समझ नहीं आया कि एक (उच्च पद) अधिकारी ने (निम्न पद) चपरासी के पैर क्यों छुए। उन्होंने अपने साथ बैठे भारतीय से जब पूछा तो उन्हें पता लगा कि भारतीय समाज में पद का नहीं, अपितु बड़ों का सम्मान किया जाता है। और क्योंकि चपरासी को अधिकारी ने अपने से श्रेष्ठ समझा इसलिए उसको सम्मान मिला। इसके बाद मैकाले ने जो रिपोर्ट दी और बदलाव के सुझाव दिए, वे नीचे की ओर निस्पंदन विधि (downward filtration) से प्रेरित थे। नीचे की ओर निस्पंदन विधि के अनुसार अगड़ी जाति के लोगों को स्कूलों में वरीयता दी गई। भारत के मूल्यों और शिक्षा नीति को चोटिल करते हुए मैकाले ने कहा, "हमें वर्तमान में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने के लिए रक्त और रंग में भारतीय व्यक्तियों का एक ऐसा वर्ग बनाना है, जो स्वाद, राय, नैतिकता और बुद्धि में अंग्रेज हो। अर्थात् मूल्यों का हनन कर एक विशेष जाति को शिक्षा की ओर अग्रसर कर बहुत बड़े समुदाय को शिक्षा से वंचित कर दिया गया। शिक्षा में राष्ट्रीय मूल्यों का अभाव ही भारत में अंग्रेजों का शासन चला सका।

अत: आज की परिस्थितियों को देखते हुए यह अत्यंत आवश्यक है कि भारत एक बार पुन: अपने पुराने सांस्कृतिक, सामाजिक एवं सार्वभौमिक मूल्यों के पुनर्स्थापन हेतु प्रयास करे, ताकि नई पीढ़ी अपने देश व पूर्वजों की प्राचीन संस्कृति तथा उसके मूल्य से परिचित हो सके।

भारत सदा से ही विभिन्न संस्कृतियों का संगम रहा है, परंतु इस सबके बावजूद यहाँ भारतीय संस्कृति के शाश्वत मूल्य सदैव पुष्पित, पल्लवित होते रहे, परंतु आज लगता है कि जैसे समस्त विश्व में प्राचीन, परंपरागत मूल्यों में परिवर्तन हो रहा है। भारत में भी उसका प्रभाव दृष्टिगोचर होने लगा है। हम भौतिक रूप से तो उन्नति के पथ पर अग्रसर हैं, परंतु एक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में अपनी संस्कृति पर गर्व करना भूलते जा रहे हैं। इसके निराकरण हेतु हमारी मूल्य-शिक्षा प्रणाली को और सशक्त करने की आवश्यकता है। देश के

नागरिकों में आपसी सौहार्द तथा अन्य राष्ट्रों के साथ शांति व समन्वय के लिए भी मूल्य शिक्षा अत्यंत आवश्यक है। यह सर्वविदित तथ्य है कि आज युवाओं में ज्ञान का अभाव नहीं है, परंतु जीवन में उचित मूल्यों व मार्गदर्शन की कमी के कारण वह दिशाहीन होते जा रहे हैं।

इसका एक दुष्परिणाम स्कूली छात्रों के हिंसक व्यवहार के रूप में सामने आता है, जिससे संपूर्ण विश्व त्रस्त है। अनेक विकसित देश भी छात्रों में तनाव व हिंसा की समस्या से जूझ रहे हैं। आए दिन अमेरिका में स्कूलों में विद्यार्थियों द्वारा हिंसा का तांडव देखने को मिलता है। यह घटनाएँ किसी भी राष्ट्र की उन्नति व सौहार्द के लिए घातक हैं, अत: शांतिपूर्ण, समृद्ध, सौहार्दपूर्ण जीवन जीने के लिए मूल्य शिक्षा, विशेषत: नैतिक मूल्यों का संवर्धन अत्यंत आवश्यक है या यदि यह कहा जाए कि नैतिक शिक्षा ही इसका एकमात्र उपाय है तो अतिशयोक्ति न होगी।

हमारे विद्यालयों में पढ़ानेवालों की संख्या बहुत है, परंतु विद्या का दान करनेवालों की संख्या नगण्य है। पढ़ानेवाले और विद्यादान करनेवालों में व्यापक अंतर है। एक, केवल विषय को समझाकर ही रह जाता है और दूसरा, उसका प्रयोग भी बतलाता है। जबकि वर्तमान में हमें विद्यार्थी को ऐसी शिक्षा देनी है, जिससे वह कर्तव्य और अकर्तव्य के बीच अंतर जानकर नैतिक और अनैतिक कार्यों की समीक्षा करने की योग्यता उत्पन्न कर सके तथा संस्कार के अनुसार आचरण कर भविष्य निर्माण कर सके। किंतु वर्तमान में यदि हमने शिक्षा में विद्यार्थी को शाश्वत मूल्यों से नहीं जोड़ा तो हम उन्हें मानसिक रूप से अपाहिज बना देंगे।

"वर्तमान शिक्षा के नाम पर स्कूल उन्हें सिर्फ कुछ भाषा, कुछ गणित, कुछ भूगोल, कुछ कैमिस्ट्री, कुछ फिजिक्स, इतिहास सिखाते हैं। क्या कोई जीवन जीने की कला सिखाते हैं? क्या वर्तमान शिक्षा मानसिक परिपक्वता देती है। जीवन को विचारपूर्ण और मौलिकता देती है।" (अग्निहोत्री 2015) यह प्रश्न अत्यंत विचारणीय है क्योंकि यह सब विषय हमें ज्ञान देते हैं, पर मूल्य शिक्षा द्वारा ही हमारा बौद्धिक विकास संभव है। हम आज तक विद्यालयों में जो शब्दों को ज्ञान ग्रहण करते आए हैं, अगर उसे शिक्षा कहते हैं तो उस शिक्षा

का परिणाम यह है कि शिक्षार्थी आज अपनी ही समस्याओं से ग्रस्त होकर दिशाविहीन हमारे सामने खड़ा है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली वर्ग विषमता फैला रही है और देश के भावी भविष्य को स्वार्थी, अहंकारी, प्रतिस्पर्धी, महत्त्वाकांक्षी, न्याय और अन्याय में सौदेबाजी करनेवाला बना रही है।

"वर्तमान शिक्षा प्रणाली में दायित्व-बोध की सोच को प्रमुखता देने की आवश्यकता है। देश का भावी नागरिक, जो विद्यालयों में शिक्षा ग्रहण कर अपने भविष्य का निर्माण कर रहा है, उसका संपूर्ण राष्ट्र के प्रति, समाज के प्रति, अर्थव्यवस्था के प्रति क्या दायित्व है? यह दायित्व-बोध अगर हमने उनमें जगा दिया तो शिक्षा का अर्थ सार्थक हो जाएगा और यही दायित्व-बोध मानव मूल्यों की शिक्षा होगी और यही हमारी शिक्षा का दर्शन भी है।" (अग्निहोत्री 2015)

शिक्षा अनुशासन देने का नहीं, आत्मविवेक देने का नाम है। देश में शिक्षा भविष्योन्मुख होनी चाहिए, अतीतोन्मुख नहीं, तभी विकास संभव हो सकता है। कोई भी सृजनात्मक प्रक्रिया भविष्योन्मुख ही हो सकती है। निश्चय ही शिक्षक को ज्ञान का प्रसारक होना चाहए। लेकिन वर्तमान शिक्षा प्रणाली छात्रों को भय, प्रलोभन, प्रतिस्पर्धा सिखाती है और तो और शिक्षा महत्त्वाकांक्षा कूट-कूटकर भर देती है, अर्थात् यह अज्ञान का प्रसार करती है। क्या ऐसी शिक्षा नहीं हो सकती, जो कि महत्त्वाकांक्षा पर आधारित न हो। निश्चित ही जीवन-मूल्य गलत है, अन्यथा मनुष्य के जीवन में यह अशांति, यह अर्थहीनता, यह विभ्रांति क्यों होती? यह हिंसा, ईर्ष्या, अधर्म सब क्या अकारण हैं? नहीं, हमारे जीवन-मूल्य हैं और उसका ही यह सब परिणाम है।

शिक्षा अंधाधुंध प्रतिस्पर्धा पर आधारित नहीं होनी चाहिए। इस प्रतिस्पर्धा की शुरुआत शिक्षालयों में होती है और फिर कब्रिस्तान तक चलती है। "तीव्र प्रतिस्पर्धा, जो स्वस्थ नहीं कही जा सकती, उसको समाप्त करने के लिए शिक्षण की पद्धति पूरी तरह बदलनी होगी और यहाँ पर हमें परीक्षा में प्रथम और द्वितीय, तृतीय श्रेणियाँ समाप्त करनी होंगी और इन सबकी जगह प्राच्य भारतीय शिक्षा के दर्शन के अनुसार जीवन के उन मूल्यों की स्थापना करनी होगी, जो कि अहंशून्य मानवतावादी और प्रेमपूर्ण जीवन को सर्वोच्च मूल्य मानने से उत्पन्न होते हैं।" प्रयास उस प्रकार की शिक्षण पद्धति पर केंद्रित करना होगा

कि व्यक्ति का निज व्यक्तित्व पूर्णता प्राप्त करे तथा वह अपनी क्षमताओं का अधिकतम उपयोग कर पाए।

एक अनुकरणीय नागरिक जन्म से नहीं होता, अपितु शिक्षा द्वारा बनाया जाता है। जिस प्रकार किसी बच्चे को भाषा, गणित और विज्ञान के प्रमेय और नियम पढ़ाए जाते हैं, उसी प्रकार मूल्यों की शिक्षा के लिए भी विशेषज्ञ होना चाहिए, जो छात्रों में सामंजस्य के साथ समाज के प्रगति के नियम, जैसे— सम्मान, सहानुभूति, समानता, एकजुटता और आलोचनात्मक सोच इत्यादि विकसित कर सके। इन और अन्य नैतिक सिद्धांतों के बिना, जो हमें मनुष्य के रूप में परिभाषित करते हैं, हमारे लिए एक बेहतर दुनिया का निर्माण करना मुश्किल होगा।

मूल्यपरक शिक्षा को ज्ञान के बावजूद सभी आयु वर्ग के सभी छात्रों को सिखाया जाना अनिवार्य है, क्योंकि व्यक्ति का चरित्र उसके सभी कौशल से ऊपर है। इस शिक्षा का प्रसार किसी के व्यक्तित्व को बढ़ा सकता है और उसे जीवन के विभिन्न पहलुओं से अवगत करा सकता है। यह बदले में उसे जीवन में किसी व्यक्ति के सम्मान और सम्मान को विकसित करने के लिए नेतृत्व करेगा, जो लोकतांत्रिक तरीके से उनकी सोच को बढ़ाकर भविष्य के लिए उन्हें आकार देने में मदद करेगा।

- मूल्यपरक शिक्षा का माध्यम छात्रों को उनके भविष्य के लिए एक प्रगतिशील तरीका ढूँढ़ने और उनके जीवन के वास्तविक उद्देश्य को पहचाने में मदद करता है।
- मूल्यपरक शिक्षा छात्रों को जीवन जीने की उचित शैली से अवगत कराती है, जो मात्र उस व्यक्ति के लिए ही नहीं, अपितु उसके आसपास के लोगों के लिए भी उपयोगी हो सकता है।
- मूल्यपरक शिक्षा छात्रों को अधिक संवेदनशील और व्यावहारिक बनने में मदद करती है। इससे उन्हें जीवन की धारणा को बेहतर ढंग से पहचानने और एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में सकारात्मक जीवन जीने में मदद मिलती है।
- मूल्य परिवार और दोस्तों के साथ एक मजबूत संबंध विकसित करने

में भी मदद करते हैं। यह छात्रों के व्यक्तित्व और चरित्र का निर्माण कर उन्हें व्यवहार-कुशल व्यक्तित्व प्रदान करता है।

- मूल्यपरक शिक्षा छात्र के दिमाग में जीवन के बारे में सकारात्मक राय बनाती है। उसे अपने आप को, अपनी आकांक्षाओं को और खुशी को समझने के लिए प्रेरित करती है। मूल्य मानव-जीवन के लक्ष्य को समझने हेतु भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
- वर्तमान राजनीतिक माहौल में आप दावा कर सकते हैं कि यह पहले से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है। मूल्यों की शिक्षा उन आदर्शों से अवगत कराती है, जिन्हें समाज महत्त्वपूर्ण मानता है और जो समाज के संतुलित एवं सतत विकास के लिए आवश्यक हैं।
- छात्रों का उद्देश्य न केवल मूल्यों को पहचानना है, बल्कि उनको व्यवहार और दृष्टिकोण में प्रतिबिंबित करना भी है।
- प्रकृति के अन्य संस्थाओं और उनकी अंतर्संयोजनात्मकता एवं सह-अस्तित्व समझने के लिए भी मूल्य आवश्यक हैं। प्रकृति में मानव की भूमिका जानने के लिए मूल्य महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।

भारत सरकार ने लंबे समय से हमारे स्कूलों में मूल्यों के लिए शिक्षा की आवश्यकता को मान्यता दी है। अनेक शिक्षा आयोगों ने भी इस दिशा में निर्देश दिए हैं। सी.ए.बी.ई. (CABE)-(1943-46) शिक्षा के केंद्रीय सलाहकार बोर्ड ने आध्यात्मिक और नैतिक शिक्षा पर जोर दिया। इसके अनुसार बच्चों में मूल्यों का विकास परिवार और समाज दोनों का दायित्व है। माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952-53) ने पृष्ठ 20 में लिखा है—"कोई भी शिक्षा उस नाम के लायक नहीं है, जो जीवन जीने के लिए आवश्यक गुणों को विकसित न करे।" भावनात्मक एकता 1961 में गठित समिति के अनुसार विज्ञान के छात्रों के पास मानविकी की पृष्ठभूमि आवश्यक है। इसके लिए विज्ञान के छात्रों की विषय-सूची में एक भारत की सांस्कृतिक विरासत का विषय रखने का प्रस्ताव रखा गया। कोठारी आयोग (1964-1966) द्वारा की गई नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक मूल्यों की सिफारिश के आधार पर भारत सरकार ने नैतिक शिक्षा पर कक्षाएँ शुरू कीं। यह स्कूल स्तर पर मूल्यों की शिक्षा को बढ़ाने की दिशा

में एक ऐतिहासिक कदम सिद्ध हुआ।

शिक्षा पर राष्ट्रीय नीति (एन.पी.ई. 1986) ने पाठ्यक्रम में पठनीयता का प्रस्ताव रखा। इसके तहत सामाजिक और नैतिक मूल्यों को विकसित करने के लिए एक शक्तिशाली शिक्षा अनिवार्य है। अश्लीलता, कट्टरता, अंधविश्वास, अशिक्षा और भाग्यवाद को खत्म करने के लिए शिक्षा का एक महत्त्वपूर्ण योगदान है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने बच्चों को संवेदनशील बनाने पर्यावरण और इसके संरक्षण की आवश्यकता पर महत्त्वपूर्ण विषयगत चिंता दिखाई और सुझाव दिए। नए तकनीकी विकल्पों और जीवित शैलियों के उद्‌भव के दौरान, पिछली सदी में जो पर्यावरणीय गिरावट से अमीरों और गरीबों के बीच विशाल असंतुलन पैदा हो गया है, इस पर भी 1986 की शिक्षा नीति में ध्यान केंद्रित किया गया।

वर्ष 1996 की शुरुआत में भारत सरकार के मानव संसाधन मंत्रालय द्वारा मानव संसाधन विकास पर एक स्थायी संसदीय समिति का गठन किया, जिसने इस बात की पहचान की कि बच्चों में मूल्यों का विकास हमारे भविष्य के मानव संसाधन होने के नाते, न केवल समकालीन शिक्षा की आवश्यकता है, बल्कि भविष्य की भी जरूरत है। समिति ने सत्य, धार्मिक आचरण, शांति, प्रेम और अहिंसा के मूल्यों की आवश्यकता को बुनियादी आवश्यकता बताया।

राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा (2005) में कहा गया है, "ये तत्त्व विषय क्षेत्रों में कटौती करेंगे और भारत की सामान्य सांस्कृतिक विरासत, जैसे समतावाद, लोकतंत्र और धर्मनिरपेक्षता, लिंगों की समानता, पर्यावरण की सुरक्षा, सामाजिक बाधाओं को दूर करना, छोटे परिवार के आदर्शों का पालन करना और वैज्ञानिक स्वभाव का झुकाव मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए डिजाइन किया गया है। सभी शैक्षिक कार्यक्रमों को धर्मनिरपेक्ष मूल्यों के अनुरूप सख्त रूप से चलाया जाएगा। भारत ने हमेशा शांति और राष्ट्रों के बीच समझ के लिए पूरी दुनिया को एक ही परिवार मानते हुए काम किया है। इस परंपरा के अनुरूप, शिक्षा को इस विश्व-दृष्टिकोण को मजबूत करने के लिए और अंतरराष्ट्रीय सहयोग और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के लिए युवा पीढ़ी को प्रेरित करना है। पुनः राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा (2005) के अनुसार,

दूसरों की भलाई और भावनाओं के प्रति संवेदनशीलता, दुनिया के ज्ञान और समझ के साथ मिलकर मूल्यों के आधार बनाने की प्रतिबद्धता पर जोर दिया गया है। जानने के लिए सीखना, भूलने की इच्छा और पुन: सीखने की प्रक्रिया को नई स्थितियों में ढलने के साधन के रूप में महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है।

स्कूलों में मान्य शिक्षा के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की रूपरेखा 2012 के अनुसार, विविध और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, जो हमें भाग्य से विरासत में मिली है, देश के लिए कई मायनों में नींव का प्रतीक है और मूल्यों का पोषण करती हैं। व्यक्तियों और समुदायों का जीवन और वह हमारे संत, ऋषि और दार्शनिक आत्मानुशासन, भौतिक संसाधनों के अभाव में सरलता, संघर्षों को हिंसा के बिना विराम करना, श्रेष्ठ आचरण की निशानी के रूप में सरल, लेकिन क्रांतिकारी विचारों की खोज जैसे मूल्यों के उदाहरण हैं। पिछले दो दशकों से समाज पेशेवर के तनाव के तहत काम कर रहा है। जो उनके भावनात्मक, भौतिक और बौद्धिक संसाधनों पर तेजी से बदलते विश्वास प्रणाली, सांस्कृतिक प्रथाओं, नैतिक सम्मेलनों और मल्टीमीडिया की अपरिहार्य घुसपैठ के साथ मिलकर चुनौतियों का निर्माण करता है, इसलिए आवश्यकता है युवाओं को उन मूल्यों को आत्मसात् करने की, जो उनके समग्र विकास के लिए महत्त्वपूर्ण हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) को भारत की परंपराओं और मूल्य प्रणालियों के अनुरूप रहते हुए इक्कीसवीं सदी की शिक्षा के आकांक्षात्मक लक्ष्यों के साथ संरेखित किया है। एक नई प्रणाली बनाने के लिए शिक्षा संरचना, इसके नियमन और शासन के सभी पहलुओं में संशोधन के साथ हम अपने विद्यार्थियों को वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार कर पाएँगे।

प्रमुखत: सभी विचारकों व शिक्षा शास्त्रियों ने मूल्य शिक्षा को मानव विकास का आवश्यक सोपान माना है। चूँकि शिक्षा विकास की प्रक्रिया है, जिसके उद्देश्य समाज अपने अनुरूप निर्धारित करता है। इससे जुड़ी होने के कारण मूल्य-शिक्षा विद्यार्थी के विकास को आधार प्रदान करती है। मूल्य शिक्षा का स्वरूप धर्म, दर्शन, उसकी सरंचना, सामाजिक मान्यताएँ, संस्कृति व शासन तंत्र इन सब पर निर्भर करता है। यदि किसी भी समाज में मात्र

अर्थोपार्जन व विज्ञान तकनीकी की शिक्षा को प्रधानता देकर मानव-मूल्यों की शिक्षा को नितांत उपेक्षित कर दिया जाए तो वह शिक्षा समाज व राष्ट्र की उन्नति में कोई विशेष योगदान न देकर मात्र व्यक्तिवाद को प्रश्रय देगी, जो कि विकास का एकांगी स्वरूप होगा। मूल्य शिक्षा ही व्यक्ति में व्यक्तिवाद, क्षेत्रवाद व जातिवाद की संकुचित सीमाओं से आगे बढ़ाकर 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' की भावनाएँ जाग्रत् करेगी, अतः प्रत्येक शिक्षा तंत्र के लिए प्रत्येक स्तर पर मूल्य शिक्षा अपरिहार्य है।

□

3

मूल्य-आधारित शिक्षा के उद्देश्य

"आज हम जो कुछ भी कर रहे हैं, वह निर्भर करता है कि कल हमारे मूल्य क्या थे¨¨हम कल क्या होंगे, वह जो हम आज मूल्य रखते हैं, उसका परिणाम होगा¨¨ "

—स्वामी विवेकानंद

जब भी हम मूल्यों के बारे में बात करते हैं तो यह प्रकृति और पोषण के बीच समन्वय से संबंधित होता है। मूल्य शिक्षा में आनुवंशिक के साथ-साथ विरासत में मिले प्रभाव भी होते हैं। फिर भी नए मूल्यों को सीखने के लिए पर्यावरणीय कारकों और बाहरी उत्तेजना पर कभी सवाल नहीं उठाया जा सकता है। मूल्य एक ही समुदाय, समाज, राष्ट्र या देश के सदस्यों द्वारा साझा किए गए महत्त्वपूर्ण और स्थायी विश्वास, मानक, नैतिकता या आदर्श हैं। मूल्य नैतिक या मानक हैं, जो अच्छे या बुरे, वांछनीय या अवांछनीय का भेद बताते हैं। मूल्य एक समाज के लिए महत्त्वपूर्ण है और उसके सदस्यों के व्यवहार के आधार को मूल रूप प्रदान करते हैं। मूल्यों का एक व्यक्ति के व्यवहार और दृष्टिकोण पर एक बड़ा प्रभाव पड़ता है और सभी स्थितियों में मानव के आचरण में व्यापक दिशा-निर्देशों के रूप में कार्य करता है। मूल्यपरक शिक्षा के बहुत से आयाम हैं और हर आयाम एक मूल्य को सीखने और जीवन में उतारने के लिए एक कारण प्रदान करता है। जिस प्रकार हर स्थिति के तीन आयाम होते हैं—मेरा विचार, आपका दृष्टिकोण और सत्य। उसी प्रकार मूल्य व्यक्ति, परिवार, समुदाय, समाज, राष्ट्र और विश्व की दृष्टि से भी देखे जा सकते हैं, परंतु सफलता तीसरे

आयाम (सत्य) का अनुसरण करनेवाले के साथ जाती है, उसी प्रकार मूल्य का मूल उद्देश्य शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व ही है।

मूल्य की अवधारणा के साथ वांछित या प्रेरक शक्ति संबद्ध है। एक समग्र गुणवत्ता के रूप में मूल्य शिक्षा की पहचान की गई है। मूल्य ही व्यक्ति के जीवन स्वरूप और उसकी जीवन-शैली को आकार देते हैं। मूल्य एक अमूर्त अवधारणा है, जिसका अकसर अर्थ एक व्यक्ति के लिए या सामाजिक इकाई के तत्त्वाधान से होता है। बर्मा की राजनेता, राजनायिक, लेखिका और 1991 का नोबेल शांति पुरस्कार विजेता ऑन्ग सैन सू की मानव मूल्यों पर कहती हैं, "मानव का सच्चा विकास मात्र आर्थिक विकास से कहीं अधिक है। इसके मूल में सशक्तीकरण और आंतरिक पूर्ति की भावना होती है। यह अकेला, सुनिश्चित करेगा कि मानव और सांस्कृतिक मूल्य एक ऐसी दुनिया में सर्वोपरि रहें, जहाँ राजनीतिक नेतृत्व अकसर अत्याचार और संकीर्ण शासन का पर्याय बन गए हैं।" सामाजिक परिवर्तन में लोगों की भागीदारी हमारे समय का केंद्रीय मुद्दा है। यह केवल उन समाजों की स्थापना के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है, जो मानव एवं मुक्ति को शक्ति और नियंत्रण से अधिक ऊपर स्थान देते हैं। इस प्रतिमान में विकास को लोकतंत्र की आवश्यकता है, जो लोगों का वास्तविक सशक्तीकरण है। कहते हैं कि गलत का अज्ञान किसी को पनपने नहीं देता। इसी प्रकार पाप की समझ मूल्यों के उदेश्य को परिभाषित करती है।

महात्मा गांधी के अनुसार सात पाप—

1. **काम के बिना धन**—आज हमारे चारों ओर रिश्वत, भ्रष्टाचार, कालाबाजारी और वित्तीय बुराइयों का बोलवाला है। यह कर्मठता के मूल्य को बल देता है और यह कर्मठता के व्यक्तिगत मूल्य से सामाजिक हित के उद्देश्य को प्राप्त करने की प्रेरणा देता है।
2. **विवेक के बिना खुशी**—हमारी चेतना यह बताती है कि सही और गलत क्या है। सुखों को हमारी चेतना और जिम्मेदारी की भावना के माध्यम से विनियमित और फिल्टर करने की आवश्यकता है। यहाँ महात्मा गांधी निम्नलिखित सिद्धांत (मूल्य) को अपनाने का पक्ष लेते हैं—

ॐ सर्वे भवन्तु सुखिनः।
सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु।
मा कश्चित् दुःखभाग् भवेत्॥

अर्थात् सभी सुखी हों, सभी रोगमुक्त रहें, सभी का जीवन मंगलमय बने और कोई भी दुःख का भागी न बने। हे भगवान्, हमें ऐसा वर दो! विवेक मूल्य को सही और गलत के तराजू में तौल, सही के चयन करने की प्रेरणा है। मानव एकल वास नहीं करता, अपितु वह सामाजिक प्राणी है, इसलिए मानव की खुशी भी एकल नहीं हो सकती। यहाँ दूसरे के दुःख में शामिल होने के उद्देश्य को उजागर किया गया है।

3. **मानवता के बिना विज्ञान**—यदि मानवजाति के लाभ के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी का उपयोग किया जाए तो यह दुनिया रहने के लिए एक बेहतर स्थान बन जाएगी। द्वितीय विश्वयुद्ध में हिरोशिमा-नागासाकी इसी मूल्य के ह्रास का नतीजा था। संयुक्त राष्ट्र भी शांति के मूल्य को सर्वोपरि मानता है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भारतीय नीति इसी मूल्य का स्वरूप है।
4. **चरित्रविहीन ज्ञान**—ज्ञान के साथ-साथ हमें बुनियादी मानवीय गुणों की खेती करनी चाहिए, जैसे निष्पक्षता, दया, साथी-भावना और गरिमा। उदाहरणतः बंदूक आतंकवादी को भी चलानी आती है और फौजी को भी। ज्ञान के उद्देश्य अलग हैं और परिणाम भी अलग। उसी प्रकार ज्ञान का सदुपयोग चरित्र का परिचायक है और दुरुपयोग चरित्रहीनता का।
5. **सिद्धांत के बिना राजनीति**—यदि कोई सिद्धांत (राजनीति में) नहीं है तो कोई सच्चा मूल्य नहीं है, सिद्धांत की अनुपस्थिति राजनीति में भ्रम पैदा करती है।
6. **नैतिकता के बिना वाणिज्य**—व्यापार दोनों पक्षों के जीत के साथ विश्वास, सहयोग और सिद्धांतों पर आधारित होना चाहिए। लाभ व्यवसाय का मुख्य उद्देश्य है। लेकिन समाज और राष्ट्र की आर्थिक

और सामाजिक विकास के बीच तारतम्य समन्वय बैठाना अत्यंत आवश्यक है।

7. **बलिदान के बिना पूजा**—हर धर्म मौलिक गुण और बलिदान की वकालत करता है। स्वार्थ ही सारी बुराई का मूल कारण है। यहाँ गांधीजी निस्स्वार्थ सेवा और स्व-सेवा के भाव को बल देते हैं।

मूल्यपरक शिक्षा का उद्देश्य

यद्यपि मूल्यों की शिक्षा का उद्देश्य उन लोगों पर निर्भर करता है, जो मूल्यों की शिक्षा प्रदान करते हैं। धार्मिक लोग अपने विशिष्ट मूल्यों को स्थापित करना चाहते हैं और एक विशेष सामाजिक परिप्रेक्ष्य (समाजवादी या पूँजीवादी) वाले लोग समाजवादी या पूँजीवादी मूल्यों को लागू करना चाहते हैं; हालाँकि मूल्यों की शिक्षा का अंतर्निहित उद्देश्य लोगों को अधिक जिम्मेदारी से व्यवहार करने में मदद करना है।

समाज, नेतृत्व और वैश्विक व्यापकता के कारण मूल्य प्रणाली में जो बदलाव आए हैं, उन्होंने कहीं-न-कहीं युवा को भ्रमित कर दिया है और एक दुविधा की स्थिति में डाल दिया है। लगभग सभी सामाजिक विज्ञानों में घटित हुआ है कि उदारीकरण, औद्योगीकरण और वैश्वीकरण के कारण बदलाव की दर और पैमाना तीव्र हो रहा है। भारत की तथाकथित दार्शनिक नींव घट रही है। सामाजिक शांति बनाए रखने के लिए औपचारिक शिक्षा के लक्ष्य और कार्य फिर से आश्वस्त और अद्यतन करने की जरूरत है। मूल्यपरक शिक्षा की अवधारणा उस शैक्षिक प्रक्रिया के बारे में है, जो नागरिक और लोकतांत्रिक समाज बनाने के लिए नैतिक मानकों को प्रेरित करती है। मूल्यों की शिक्षा हमारे राजनीतिक, सांस्कृतिक और धार्मिक मतभेदों के ऊपर नई समझ को बढ़ावा देती है। मूल्यपरक शिक्षा मानवाधिकारों की रक्षा, जातीय अल्पसंख्यकों की सुरक्षा और सबसे कमजोर समूहों और पर्यावरण के संरक्षण पर विशेष जोर देती है।

मूल्यों में विचार, व्यवहार, कार्य और बोध के सभी आयाम शामिल करने के लिए मूल्यपरक शिक्षा अनिवार्य है। अच्छे विश्वास के माध्यम से समाज

में योगदान करने के लिए मूल्यों के अंतर्गत मानव जीवन के सभी चार स्तर सम्मिलित होते हैं—व्यक्तिगत, परिवार, समाज और प्रकृति। नैतिक शिक्षा, व्यक्तित्व शिक्षा, नैतिकता और दर्शन को सम्मलित करने के लिए एक पवित्र स्थायी जीवन-शैली के प्रति गर्व और विकास की अवधारणा को धरातल पर उतारने की अवश्यकता है। हमारी सांस्कृतिक विरासत, संवैधानिक अधिकार, राष्ट्रीय एकीकरण, सार्वजनिक विकास और हमारे राष्ट्रीय इतिहास के बारे में ज्ञान के अतिरिक्त मूल्यपरक शिक्षा पर्यावरण के प्रति जवाबदेही से भी अवगत कराती है। साधारणत: मूल्यपरक शिक्षा के उद्देश्य इस प्रकार हैं—

- शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक पहलुओं में बच्चे के व्यक्तित्व का पूर्ण विकास सुनिश्चित करना।
- अच्छे शिष्टाचार और जिम्मेदार और सहकारी नागरिकता का प्रसार।
- व्यक्ति और समाज की गरिमा के लिए सम्मान विकसित करना।
- देशभक्ति और राष्ट्रीय एकता की भावना का प्रसार करना।
- सोच और जीने का लोकतांत्रिक तरीका विकसित करना।
- विभिन्न धार्मिक विश्वासों के प्रति सहिष्णुता और समझ विकसित करना।
- सामाजिक राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भाईचारे की भावना का विकास करना।
- विद्यार्थियों को खुद पर और कुछ अलौकिक शक्ति में विश्वास रखने में मदद करना, जो इस ब्रह्मांड और मानव जीवन को नियंत्रित करनेवाली है।
- नैतिक सिद्धांतों के आधार पर निर्णय लेने के लिए विद्यार्थियों को सक्षम करना।

मूल्य शिक्षा का उद्देश्य विभिन्न पहलुओं में पहचान कर सकता है। मूल्य शिक्षा के मुख्य उद्देश्य हैं—

1. व्यक्तिगत पहलू,
2. पारिवारिक पहलू,
3. सामाजिक पहलू,

4. राष्ट्रीय पहलू,
5. वैश्विक पहलू।

इन सभी पहलुओं को पहले अध्याय में समझा गया है और हर एक अगले स्तर के मूल्य को मजबूत करता है। वैश्विक मूल्यों को विकसित करने के लिए राष्ट्रीय मूल्यों को मजबूत करना पड़ता है और बदले में राष्ट्रीय मूल्यों को सामाजिक और पारिवारिक मूल्यों की आवश्यकता होती है। आइए, हम मूल्य शिक्षा के उद्देश्य को समझने के लिए एक-एक करके प्रत्येक पहलू के उद्देश्य को लेने का प्रयास करें—

(क) व्यक्तिगत पहलू

- सभी संभावित पहलुओं में बाल व्यक्तित्व का विकास करना। सार्वभौमिक विकास हेतु मूल्य शिक्षा अनिवार्य है।
- बच्चों में अच्छे नैतिक मूल्यों का विकास करना।
- छात्रों को मूल्यों से जुड़े मुद्दों के बारे में अधिक जटिल निर्णय लेने की स्थितियों का सामना करना पड़ सकता है। उन्हें मूल्य शिक्षा के माध्यम से ऐसी स्थितियों में उचित विकल्प बनाने की क्षमता विकसित करने में मदद करना।
- मूल्य शिक्षा जिज्ञासा, उचित हितों के विकास, दृष्टिकोण, मूल्यों और स्वयं के बारे में सोचने और न्याय करने की क्षमता को जाग्रत् करती है।
- मूल्य शिक्षा निम्न प्रकार के मूल्यों के विकास के उद्देश्य से होनी चाहिए—
  - मन का वैज्ञानिक स्वभाव,
  - सहृदयता,
  - सहयोग,
  - सहनशीलता,
  - अन्य समूहों की संस्कृति का सम्मान।

(ख) पारिवारिक पहलू

- जुवेनाइल डेलिकेंसी में वृद्धि उन युवाओं के लिए संकट है, जो व्यक्तिगत विकास की प्रक्रिया में कठिन पारिवारिक परिस्थितियों से गुजरते हैं। ऐसी स्थिति में मूल्य-शिक्षा का विशेष महत्त्व है।

(ग) सामाजिक पहलू

- अपने विश्वासों, विश्वदृष्टि और प्रतिमान को आकार देने के लिए जिसे हम संचालित करते हैं, मूल्यों का होना अनिवार्य है।
- नैतिक आचरण को बढ़ावा देने के लिए संस्थागत और व्यक्तिगत व्यवहार को बदलना।
- नैतिकता और उत्पादकता पर सकारात्मक प्रभाव बढ़ाने के लिए।
- नेतृत्व की गुणवत्ता, प्रबंधन प्रथाओं और उपयोग में सुधार लाने के लिए।
- समाज में पारदर्शिता, जवाबदेही, विश्वास, धारणा को बढ़ावा देने के लिए।
- निवेश, धन और रोजगार सृजन के उच्च स्तर का नेतृत्व करने के लिए।
- लोगों के जीवन की गुणवत्ता और मानक में सुधार करने के लिए।

(घ) राष्ट्रीय पहलू

- मूल्य शिक्षा सामाजिक और प्राकृतिक एकता को बढ़ावा देने में मदद करना है।
- बेहतर जीवन जीने के लिए लोकतांत्रिक तरीके से सोच विकसित करना।
- बच्चों की अच्छी नागरिकता और जीवन-स्तर और व्यवहार का विकास करना।
- राष्ट्रीय मूल्यों और सिद्धांतों का मुख्य उद्देश्य समाज को बढ़ावा देना है।
- देश की सकारात्मक छवि को ब्रांड बनाने और बढ़ावा देने के लिए।

- राष्ट्रीय, सामंजस्य और स्थिरता को बढ़ावा देने के लिए।
- राज्य और गैर-राज्य दोनों संस्थाओं में सुशासन को बढ़ावा देना।
- राष्ट्रीय, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और पर्यावरणीय विकास में सुधार करने की दृष्टि से।

(ङ) वैश्विक पहलू

वैश्विक मूल्यों की आवश्यकता—

- शांति की सुरक्षा के लिए।
- मानवाधिकारों की रक्षा हेतु।
- अंतरराष्ट्रीय न्याय के लिए ढाँचा स्थापित करने हेतु।
- आर्थिक और सामाजिक प्रगति को बढ़ावा देने हेतु।
- जलवायु परिवर्तन की समस्या समाधान हेतु।
- शरणार्थियों की समस्या का सामना करने के लिए।
- वैश्विक महामारी जैसे कोविड-19 या एड्स जैसी नई चुनौतियों से लड़ने के लिए।
- सहिष्णुता विकसित करने और बच्चों को एक दयालु व्यक्ति बनाने के लिए।
- मानवजाति के कल्याण के लिए, विज्ञान और प्रौद्योगिकी में प्रगति को उन्मुख करने के लिए, नैतिक जागरूकता का समर्थन करने के लिए।

जैक्स डेलर्स की अध्यक्षता में इक्कीसवीं सदी के लिए शिक्षा पर यूनेस्को अंतरराष्ट्रीय आयोग ने शिक्षा के चार स्तंभों में से दो के रूप में 'सीखने के लिए' और 'एक साथ रहने की सीख' की पहचान की है। शिक्षा व्यक्ति को बुनियादी मूल्यों की शिक्षा देती है, जो किसी भी समाज में रहने के लिए आवश्यक मूल्य प्रदान करने का प्रयास करती है। 'सीखने के लिए' व्यक्ति की आंतरिक क्षमता के विकास के सवाल को हल करता है, जो उसे सामाजिक और राजनीतिक जिम्मेदारियों को पूरा करने के लिए तैयार करेगा। 'एक साथ रहना सीखना' सामंजस्यपूर्ण जीवन का निर्माण, संप्रदाय की निष्ठाओं और मतभेदों को पार करना होगा।

मूल्य-आधारित शिक्षा के उद्देश्य

शिक्षा की अवधारणा की व्याख्या करते हुए श्री अरविंद घोष ने कहा है, "सच्ची और वास्तविक शिक्षा वही है, जो मानव की अंतर्निहित समस्त शक्तियों को इस प्रकार विकसित करती है कि वह उनसे पूर्णत: लाभान्वित होता है। यह शिक्षा जीवन को सफल बनाने में मानव की सहायता करती है। इसके अतिरिक्त यह शिक्षा जीवन के मन और आत्मा से जिसका वह अंश है, सत्य संबंध की स्थापना में सहायता देती है।"

श्रीअरविंद घोष के यह विचार न केवल शिक्षा, बल्कि मूल्यों एवं आदर्शों को भी समाहित करते हैं। मूल्य- शिक्षा शिक्षा का कोई नया प्रारूप नहीं है, बल्कि प्रारंभ से ही समस्त शिक्षाविद् विद्यार्थी के विकास के सभी व्यक्तिगत, व्यावहारिक व भावात्मक पहलुओं को ध्यान में रखकर शिक्षा को परिभाषित करते हैं। वर्तमान में शिक्षा के तथ्यपरक हो जाने तथा मूल्यों के ह्रास को देखते हुए शिक्षा में मूल्यों को समाहित करने की आवश्यकता है। मूल्य-आधारित शिक्षा, शिक्षा के साथ-साथ मूल्यों का भी ज्ञान कराती है। यह व्यक्तित्व के सामाजिक, नैतिक व सांस्कृतिक मूल्यों के विकास में योगदान का एक महत्त्वपूर्ण साधन है। मूल्य-आधारित शिक्षा का उद्देश्य मूल्यों एवं आदर्शों का विकास कर व्यक्तित्व का समग्र एवं संपूर्ण विकास करना है। यह व्यक्ति की अकादमिक उपलब्धियों के साथ-साथ उसके सामाजिक विकास को अधिक सुचारू रूप सुदृढ़ करती है। यह शिक्षा के अतिरिक्त बाह्य सामाजिक वातावरण में जीवन जीने की कला का ज्ञान है। इस आधुनिक युग में जब सफलता के पैमाने भोग-विलास की वस्तुओं की उपलब्धता में सिमटकर रह गए हैं, व्यक्तित्व का संपूर्ण विकास प्रभावित हुआ है। आज की युवा पीढ़ी में सबसे ज्यादा मूल्यों का ह्रास दिखाई देता है। यह वर्तमान में बदलते समय का प्रभाव तथा मूल्यों को सीखने के लिए एक चेतन प्रक्रिया का अभाव है। वर्तमान पीढ़ी इस भौतिक संसार की चमक-दमक के कारण अपनी संस्कृति एवं मूल्यों को भूल रही है, जो एक सभ्य उन्नत समाज का उदाहरण नहीं है। हम अपने मूल्यों एवं संस्कृति से अलग होकर विज्ञान व तकनीक को ज्यादा तवज्जो देने लगे तथा मूल्यों के विकास पर उचित ध्यान न दे पाए, परिणाम यह हुआ कि युवा पीढ़ी पूरी तरह से अपने

देश एवं संस्कृति के विचारों और मूल्यों से अनभिज्ञ है। वर्तमान में मूल्यों एवं आदर्शों के संरक्षण के लिए मूल्य-आधारित शिक्षा की आवश्यकता है। उन्नत समाज में उस समाज की अपनी परंपराओं, मूल्यों एवं क्रियाओं का बहुत बड़ा प्रभाव होता है। मूल्यपरक शिक्षा विद्यार्थियों में मूल्यों का विकास करके उनमें अपनत्व, देशभक्ति, ईमानदारी, शालीनता, सहजता, आत्मनिर्भरता, धर्मनिरपेक्षता, सामंजस्य आदि का विकास करके अपनी संस्कृति एवं मूल्यों में विश्वास दिलाने का एक साधन है।

प्रथम एवं द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद समाज में मानव की एक नई तसवीर उभरती है, जो मूल्यों में, समाज में, यहाँ तक कि स्वयं में भी अविश्वास प्रकट करता है। वह समाज में, मानवीयता में, यहाँ तक कि स्वयं में भी पूर्णता का अनुभव न करते हुए अपने मस्तिष्क के विभिन्न प्रश्नों एवं महत्त्वाकांक्षाओं से घिरा रहता है। मूल्य-आधारित शिक्षा इन सभी प्रकार के द्वंद्व का सही समाधान निकालने में सहायक है। यह प्रेम, शांति, आदर, क्षमा, अहिंसा, आस्था जैसे गुणों का विकास करके व्यक्ति के शारीरिक एवं मानसिक अस्तित्व को एक नई दिशा प्रदान करती है।

मूल्य-आधारित शिक्षा का इतिहास भारत में बहुत पुराना है। प्राथमिक स्तर से लेकर माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक स्तर तक विद्यार्थी मूल्य सीखने के लिए प्रयासरत थे। कभी नैतिक शिक्षा के माध्यम से तथा कभी कहानियों के माध्यम से वह अपने मूल्यों से जुड़ाव महसूस करते थे। पाश्चात्य सभ्यता तथा पाश्चात्य विचारकों, जैसे मैकाले ने अपने विवरण-पत्र (1835) में नवीन शिक्षा पद्धति/सिद्धांत (Down Filteration Theory) का प्रतिपादन किया।

राष्ट्रीय पाठ्यक्रम के ढाँचे (NCF) 2005 भी सभी स्कूल चरणों में पाठ्यक्रम एवं पाठ्य-पुस्तकों का विकास नैतिकता पर जोर देता है तथा "स्कूलों में मूल्यों के लिए 'शिक्षा-ए फ्रेमवर्क' नामक मूल्य शिक्षा ढाँचा स्कूलों में मूल्यों की प्राथमकिताओं की पहचान करने और उनकी योजना बनाने के लिए दिशा-निर्देश प्रदान करता है।" (https://mhrd.gov.in) मूल्य-आधारित शिक्षा भारतीय समाज के बेहतर भविष्य के लिए मूल्यों के संरक्षण की आवश्यकता से परिचित कराती है।

विद्यार्थी समाज के निर्माण की एक मूल्यवान इकाई है। विद्यार्थी अपने शैक्षिक परिवेश में अकादमिक व गैर-अकादमिक क्रियाकलापों के माध्यम से बहुत कुछ सीखता है, उसका अकादमिक ज्ञान सामाजिक, आर्थिक उद्देश्यों को पूरा करने का संबल है, परंतु इस वैज्ञानिक एवं तकनीकी ज्ञान में आदर्शों एवं मूल्यों के प्रति चेतना का अभाव है। मूल्यपरक शिक्षा इन सभी मानवीय भावनाओं के ह्रास को संतुलित करने का एकमात्र साधन प्रतीत होती है। मूल्य-आधारित शिक्षा विद्यार्थियों के लिए जीवन जीने की कला का ज्ञान है, जो सभी संकुचित आर्थिक तथा वैज्ञानिक समस्याओं से परे है। आधुनिक समाज में व्यक्ति स्वयं को सफलता की सीढ़ियों पर देखता है, परंतु इस सामाजिक, आर्थिक सफलता में वह कभी अवसाद, कुंठा एवं अकेलेपन का शिकार भी हो रहा है। मूल्य-आधारित शिक्षा इन मनोवैज्ञानिक समस्याओं का भी समाधान है, जो उनमें समूह में रहना, मित्रतापूर्वक व्यवहार करना, एक स्वस्थ सामाजिक वातावरण एवं सामूहिकता का भाव उत्पन्न करती है और व्यक्ति स्वयं को एकाकी रूप में न देखकर समाज के अंग के रूप में देखता है।

मूल्य-आधारित शिक्षा का उद्देश्य शिक्षा के अतिरिक्त बाह्य वातावरण में विद्यार्थी को सही मूल्यों एवं व्यवहार का ज्ञान कराना है तथा विद्यार्थी के ज्ञान को राष्ट्रहित के लिए प्रायोगिक बनाना है। राष्ट्रीय शिक्षा के आदर्शों को स्पष्ट करते हुए श्रीमती ऐनी बेसेंट ने कहा है—"भारतीय शिक्षा को भक्ति, ज्ञान एवं नैतिकता के भारतीय आदर्श प्रस्तुत करने चाहिए और उसमें भारतीय धार्मिक भावना का समावेश होना चाहिए।" मूल्यपरक शिक्षा के उद्देश्य एक शिक्षक शिक्षार्थी व अभिभावक के लिए अलग-अलग हैं। एक अध्यापक के लिए यह स्वस्थ समाज के निर्माण की प्रक्रिया है। विद्यार्थी को सीखने के लिए एक अनुरूप वातावरण की उपलब्धता तथा अभिभावक को अपने बच्चों के सीखने की प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग बनने की ओर एक महत्त्वपूर्ण प्रयास है। इन बदलती सामाजिक, आर्थिक परिस्थितियों में केवल किताबी ज्ञान ही पर्याप्त नहीं है, वरन् अर्जित ज्ञान की प्रासंगिकता वास्तविक परिस्थितियों में भी समझना जरूरी है, जो शैक्षिक एवं गैर-शैक्षिक क्रियाकलापों द्वारा मूल्य-आधारित शिक्षा के अंतर्गत संभव है।

मूल्य-आधारित शिक्षा के उद्देश्यों को मूल्यों के प्रकार के आधार

पर वर्गीकृत करते हुए हम मूल्य शिक्षा के व्यक्तिगत मूल्यों, नैतिक मूल्यों, आध्यात्मिक मूल्यों, सामाजिक मूल्यों, सांस्कृतिक व शैक्षिक मूल्यों के आधार पर उद्देश्यों की विवेचना करेंगे।

व्यक्तिगत मूल्यों के आधार पर मूल्य-आधारित शिक्षा के उद्देश्य

मूल्य-आधारित शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति का समग्र विकास करना है। टी.पी. नन के अनुसार, "शिक्षा मनुष्य के व्यक्तित्व का पूर्ण विकास है, जिससे कि वह अपनी उच्चतम योग्यता के अनुसार मानव जीवन में मौलिक योगदान दे सके।" मूल्य शिक्षा टी.पी. नन के इसी विचार को परिलक्षित करती है। शिक्षा व्यक्ति की सामाजिक, व्यावहारिक, मनोवैज्ञानिक समस्याओं का अवलोकन कर व्यक्ति की सभी प्रकार से सामाजिक, मानसिक द्वंद्व का समाधान ढूँढ़ने में सहायता करती है। विद्यालय समाज की एक प्रतिरूप इकाई है, जहाँ शिक्षक अभिभावक की भूमिका अदा करते हुए उनकी समस्याओं के समाधान का मार्ग प्रशस्त कर अधिक दृढ़ एवं जीवन के प्रति ऊर्जावान बनाते हैं तथा भावी जीवन के लिए उन्हें मनोबल प्रदान करते हैं।

मूल्य-आधारित शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों को अधिक उत्तरदायी, समाज व अपनों के प्रति अधिक संवेदनशील बनाना है। जॉन लॉक, महान् दार्शनिक एवं राजनीतिक विचारक अपनी पुस्तक 'ऐसेज कंसर्निंग ह्यूमन अंडरस्टैंडिंग' में लिखते हैं, "विचार के पूर्व मानव मस्तिष्क कोरे कागज के समान है, जिस पर अनुभव समस्त विचारों को लिखता है।" (hi.m.wikipedia.org) विद्यार्थी भी विद्यालय में एक कोरे कागज के समान है, यदि वह अपने समक्ष मानव मूल्यों को देखेगा तथा अनुभव करेगा, वह अपने व्यक्तित्व एवं विचारों को भी उदाहरणस्वरूप विकसित करेगा। इसके लिए आवश्यक है कि शिक्षक मूल्य शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों को विभिन्न पाठ्य सहगामी क्रियाओं, जैसे—मॉडल बनाना, प्रोजेक्ट कार्य, एक आदर्श समाज की स्थापना पर निबंध आदि कार्यों को देकर उनकी भावात्मक व शारीरिक क्रियाशीलता का विकास कर स्वस्थ मानसिक व्यक्तित्व का निर्माण करते हुए मूल्य-आधारित शिक्षा के उद्देश्य को पूरा करे।

मूल्य–आधारित शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों में जीवन व समाज के प्रति एक सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना है। वर्तमान युग में शिक्षार्थी स्वयं को चारों ओर से वैज्ञानिक तथ्यों एवं तकनीकी ज्ञान से घिरा हुआ पाते हैं तथा सूचना के इस युग में वह हमेशा दूसरों से स्वयं को बेहतर करने के प्रयास में एक तनाव से घिरा रहता है। कभी–कभी यही तनाव उसके मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डालता है। मूल्य–आधारित शिक्षा के प्रारूप में व्यक्ति का शारीरिक मानसिक संरक्षण भी सम्मिलित है। शैक्षिक वातावरण में शिक्षक स्वयं ही मूल्य शिक्षा के बिंदुओं को स्वयं के स्वभाव व व्यवहार में सम्मिलित कर इसके लगभग सभी उद्देश्यों को चित्रित करते हुए मूल्यपरक शिक्षा की परिकल्पना को उदाहरणार्थ प्रस्तुत करता है तथा विद्यार्थियों में जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करता है।

एक विद्यार्थी की दृष्टि से मूल्य शिक्षा का उद्देश्य एक स्वस्थ सामाजिक व्यक्तित्व तथा स्वस्थ नागरिक का विकास करना है, जो इस समाज की गतिविधियों में अमूल्य भूमिका निभाकर समाज–हित में एक बड़ा योगदान दे सके एवं स्वयं के प्रति भी सकारात्मक आत्म–बोध विकसित करे। मूल्यपरक शिक्षा न केवल ज्ञान–वर्धन करती है, बल्कि व्यक्ति को सुदृढ़ जीवन जीने योग्य बनाती है। इस शिक्षा के द्वारा सभी अमूर्त विचारों (दया, शांति, आदर, समानता, लोकतांत्रिकता आदि) को विभिन्न क्रियाकलापों (गाना, नृत्य, नाटक व कहानी रूपांतरण) के माध्यम से एक मूर्त रूप प्रदान करना तथा विद्यार्थी के सभी गुणों का विकास करना ही मूल्य–आधारित शिक्षा का उद्देश्य है। यदि शैक्षिक परिवेश में व्यक्ति मूल्यों एवं आदर्शों का शिक्षा के वांछित रूप में अनुसरण करता है तो वह बाह्य शैक्षिक वातावरण में भी इन्हीं गुणों को ध्यान में रखकर व्यवहार करता है तथा अधिक संवेदनशील, बुद्धिमान एवं आत्मनिर्भर बनता है।

मूल्यपरक शिक्षा शिक्षा के आधार पर स्वयं, दूसरों एवं समाज के प्रति स्वस्थ मानसिकता का विकास करती है। यह विषय विशेष के ज्ञान के साथ–साथ जीवन का अर्थ व मूल्यों की आवश्यकता का ज्ञान कराती है। यह शिक्षा के प्रति एक आदर्श एवं भिन्न प्रकार का दृष्टिकोण उत्पन्न करती है, जो एक शिक्षक एवं शिक्षार्थी के प्रति स्वस्थ अंतर्मन, विचारों एवं भावों का विकास

करती है तथा शिक्षा को अधिक सुगम्य बनाती है। मूल्य शिक्षा शिक्षक व विद्यार्थी दोनों को ही आत्म-नियंत्रित बनाती है तथा समाज में सभी रिश्तों एवं व्यक्तियों की आवश्यकतानुसार व्यक्ति को सजग बनाती है। हंटर कमीशन 1882 भी 'छात्रों के नैतिक स्तर का उत्थान करने के लिए उनकी प्रकृति धर्म और मानव धर्म के सिद्धांतों' से परिचित बनने की संस्तुति करता है।

आध्यात्मिक मूल्यों के आधार पर मूल्य-आधारित शिक्षा के उद्देश्य

मूल्य-आधारित शिक्षा ज्ञान से लेकर जीवन दर्शन तक के उद्देश्य को पूर्ण करती है। आध्यात्मिक विकास भी मूल्य शिक्षा का एक उद्देश्य है। कोठारी कमीशन भी तकनीकी विषयों के साथ-साथ मानवीय एवं आध्यात्मिक मूल्यों की संकल्पना को प्रस्तुत करता है। विद्यालय के वातावरण में शिक्षक एवं शिक्षार्थी के बीच परस्पर समन्वय विद्यार्थी को बाह्य समाज के लिए आवश्यक व्यवहार एवं मूल्यों से अवगत कराते हैं। मूल्यपरक शिक्षा के नैतिक विचारों, सही-गलत में अंतर करने आदि गुणों को कहानियों व स्टेज प्ले के द्वारा बोध कराकर मूल्य शिक्षा विद्यार्थियों को आध्यात्मिक विकास की ओर प्रवृत्त करती है। आध्यात्मिक मूल्य व्यक्ति को अनुशासित, योग एवं धर्म के प्रति ध्यान आकर्षित करने, मानसिक शुद्धता तथा शांति स्थापित करने में सहायक सिद्ध होते हैं।

मूल्य शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थी स्वयं में विश्वास करना सीखता है। वह स्वयं में दुर्गुणों की पहचान कर सद्गुणों का विकास करता है। मूल्य शिक्षा वास्तविक अर्थ में जीवन जीना सिखाती है। मूल्य शिक्षा, शिक्षा के तकनीकी प्रारूप को बदलकर मूल्यपरक बनाती है, जो किसी व्यवसाय विशेष से संबंधित न होकर व्यक्ति विशेष से संबंधित होती है। मूल्य शिक्षा का उद्देश्य केवल व्यावसायिक उन्नति न होकर व्यक्ति विशेष की उन्नति है।

सामाजिक मूल्यों के आधार पर मूल्य शिक्षा के उद्देश्य

सामाजिक वातावरण में मूल्य-आधारित शिक्षा का उद्देश्य सामंजस्य का विकास करना है। विद्यार्थी अन्य सहपाठियों के साथ शैक्षिक व बाह्य जीवन में स्वयं एवं दूसरों के मध्य भिन्न विचारधाराओं को लेकर तर्क-वितर्क की स्थिति

में आ जाते हैं, यदि उन्हें विद्यालय में ही मूल्यपरक शिक्षा दी जाए तो वह दूसरों के विचारों को समझते हुए उसे स्वयं के विचारों में समाहित कर सामंजस्य का वातावरण बनाते हुए, अपने तर्क को बिना किसी भेदभाव के सही रूप में प्रस्तुत कर सकते हैं।

शैक्षिक परिवेश में विद्यार्थी विभिन्न वर्ग के विद्यार्थियों के संपर्क में रहता है। एक ही समाज के अलग-अलग विद्यार्थी एक-दूसरे से स्वयं को अलग व भिन्न महसूस करते हैं। कभी वर्ग, कभी रंग-रूप तथा कभी आर्थिक स्तर के बारे में विचार करते हुए कुछ उच्च सामाजिक स्तर के विद्यार्थी स्वयं को दूसरों से भिन्न मानते हैं तथा कभी निम्न सामाजिक स्तर के विद्यार्थी स्वयं को हीन समझते हैं। मूल्य-आधारित शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों में हीन-भावना व वर्ग के अंतर को खत्म कर सभी में अपनत्व व समानता की भावना का विकास करना है।

भारतीय संविधान की प्रस्तावना में धर्मनिरपेक्ष समाज की स्थापना भी मूल्य-आधारित शिक्षा का उद्देश्य है। मूल्य शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों में मानवीय मूल्यों के विकास को प्राथमिकता दी जाती है तथा सभी धर्मों के प्रति आदर व समानता की भावना का विकास करके सभी धर्मों का समान रूप से पालन कर मूल्यपरक शिक्षा धर्मनिरपेक्षता के उद्देश्य को पूरा करती है। मूल्यपरक शिक्षा के माध्यम से मानवीय मूल्यों को सभी धर्म मूल्यों से अग्रसर रखा जाता है तथा विद्यार्थी किसी भी धर्म के प्रति रूढ़िवादी न रहकर सभी धर्म के विद्यार्थियों के साथ समान रूप से व्यवहार करता है और यही सोच एक स्वस्थ समाज के निर्माण में व्यक्तिगत उत्तरदायित्व का वहन करने के लिए प्रेरित करती है।

मूल्य-आधारित शिक्षा का उद्देश्य विश्व में लिंग भेद को समाप्त करना है। लिंग भेद समाज में तथा परिवार में बहुलता में देखने को मिलता है। प्राचीन काल, मध्य काल से लेकर आधुनिक काल में भी लिंग असमानता उजागर होती है। पुरुष समाज में महिलाओं का स्थान बहुत संकीर्ण है तथा उन्हें सामाजिक, राजनीतिक, यहाँ तक कि महिलाओं को स्वयं से निम्न स्तर का मानकर परिवार में भी हस्तक्षेप का अधिकार नहीं दिया जाता है। राजा राममोहन राय व अन्य समाज सुधारकों ने महिलाओं को सशक्त बनाने एवं समाज में उनकी स्थिति

सुधारने के लिए कई प्रयास किए तथा समाज को महिलाओं को शिक्षित करने की आवश्यकता एवं सती प्रथा जैसी बुराइयों को खत्म करने के लिए जागरूक किया, परंतु अभी भी बदलाव की जरूरत कम नहीं हुई है। मूल्य शिक्षा व्यक्ति को उसकी विचारधाराओं के प्रभावों एवं दुष्प्रभावों से अवगत कराती है। विद्यालय में लिंग समानता का पाठ्यक्रम एवं क्रियाकलाप वास्तविक सामाजिक स्थिति में महत्त्वपूर्ण सामाजिक अंतर लाने में योग्य सिद्ध हो सकते हैं, अत: वर्तमान समाज में लिंग समानता को मूल्य शिक्षा के माध्यम से सिखाने का उपाय है। लिंग समानता को पाठ्यक्रम में सम्मिलित कर महिलाओं को समाज में योग्य स्थान दिलाने की तरफ मूल्य शिक्षा युवा पीढ़ी को निर्देशित करती है।

संविधान की प्रस्तावना में लोकतंत्रात्मक समाज की स्थापना को बहुत बल दिया गया है। लोकतंत्रात्मक समाज में 'सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक किसी भी प्रकार के भेदभाव के बिना सभी नागरिकों को स्वतंत्रता, समानता और भातृत्व के मूल्यों के पालन का अवसर दिया जाता है।' मूल्य-आधारित शिक्षा लोकतंत्र की भावना उत्पन्न कर इस परिकल्पना को वास्तविकता में बदलने की ओर युवा पीढ़ी को अग्रसर करती है। आज के सामाजिक वातावरण में प्रत्येक व्यक्ति स्वयं को दूसरों से उच्च व अच्छा देखना चाहता है तथा इस प्रतियोगिता में वह स्वयं को समाज का अंग न मानकर स्वयं को अलग देखता है और इस प्रकार समाज विभिन्न वर्गों एवं समूह में बँट जाता है। मूल्यपरक शिक्षा विद्यार्थियों की व्यक्तिवादी प्रवृत्ति को लोकतांत्रिक प्रवृत्ति में परिवर्तित कर भारत के लोकतंत्रात्मक समाज के उद्देश्य की प्रतिपुष्टि करती है। विद्यार्थी मूल्य-आधारित शिक्षा के माध्यम से शिक्षक द्वारा लोकतांत्रिक व्यवहार का अवलोकन करते हुए न केवल शैक्षिक वातावरण में, वरन् समाज के प्रति भी लोकतांत्रिक विचार रखता है, अत: मूल्य-आधारित शिक्षा सामाजिक स्तर की व्याख्या को त्यागते हुए समाज को एक संपूर्ण तथा समान रूप में देखती है।

राष्ट्रीय एकता के विषय में युवा पीढ़ी को परिचित कराना वर्तमान समय की आवश्यकता है। हम देखते हैं कि समाज जातिवाद, सांप्रदायिकतावाद, क्षेत्रीयवाद एवं प्रांतीय धारणाओं में बँधा हुआ है, जो चारों ओर से असमानता को जन्म देती हैं। मूल्यपरक शिक्षा का उद्देश्य समानता का पाठ पढ़ाते हुए इन

सभी सामाजिक असंतुलन वाले विचारों को खत्म करना है तथा राष्ट्रीय एकता के आदर्श पहलू से विद्यार्थियों को अवगत कराते हुए समानता की स्थापना करना है। राष्ट्रीय पर्व, राष्ट्रीय नेताओं का जन्म दिवस, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक स्थानों का भ्रमण मूल्य-आधारित शिक्षा के इस उद्देश्य को पूरा करते हैं।

सांस्कृतिक मूल्यों के आधार पर मूल्य-आधारित शिक्षा के उद्देश्य

मूल्य-आधारित शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य में प्राकृतिक वातावरण के प्रति आदर एवं कृतज्ञता का भाव जाग्रत् करना है। वैश्विक एवं आध्यात्मिक मूल्यों के आधार पर व्यक्ति में पशु-पक्षी, विभिन्न जीव-जंतु आदि प्राकृतिक प्राणियों के प्रति दया, सहानुभूति एवं समानता की भावना उत्पन्न की जा सकती है, जिससे वह पर्यावरण एवं प्राकृतिक संसाधनों के सतत उपयोग को सुनियोजित करें। मनुष्य स्वयं को अन्य प्राकृतिक जीव-जंतु से समर्थ मानकर उनका हनन एवं शोषण करता है। जंगलों एवं बाग-बगीचों को नष्ट कर उद्योग-धंधों का विकास करना मानव सभ्यता एवं मूल्यों के पतन का द्योतक है। मूल्यपरक शिक्षा में पर्यावरण मूल्य प्रकृति के प्रति चेतना उत्पन्न कर मानव एवं प्रकृति के बीच संबंधों को सुगमयता प्रदान करते हैं। मनुष्य संसार के सभी जड़ व चेतन प्राणियों के साथ मानवीय संबंध बनाकर अपने आदर्शों एवं मूल्यों का परिचय देता है।

रूसो ने प्रकृति को शिक्षा प्राप्त करने के साधन के रूप में प्रस्तुत किया है। रूसो के प्रकृतिवादी विचार 'प्रकृति की ओर लौटो' तथा 'प्रकृति का अनुसरण करो' बालक की शिक्षा में प्रकृति की महत्ता को उजागर करते हैं। रूसो के अनुसार, बालक की शिक्षा उसकी प्रकृति के अनुसार होनी चाहिए तथा उसमें प्रकृति-प्रेम को उत्पन्न किया जाना चाहिए। इस प्रकार प्रकृति-प्रेम से उसके व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं का क्रमशः विकास होगा। मूल्यपरक शिक्षा प्रकृति के द्वारा शिक्षा तथा प्रकृति शिक्षा, दोनों को ही महत्त्व देती है।

नैतिक मूल्यों के आधार पर मूल्य-आधारित शिक्षा के उद्देश्य

मूल्यपरक शिक्षा गांधीजी के मूल्य अहिंसा पर भी जोर देती है। विश्वयुद्ध हिंसा की एक भयावह तसवीर उजागर करता है। हिंसा का प्रमुख कारण व्यक्ति में मूल्यों का अभाव या उसका अवचेतन हो जाना है। युद्ध के परिणामस्वरूप

व्यक्ति आधुनिक समाज में भी एक-दूसरे को समान व समाज को एकीकृत रूप में नहीं देखता है। वह विभिन्न विश्वास, मूल्यों एवं अहं के कारण विभिन्न वर्गों में बँटा रहता है तथा स्वयं को एक-दूसरे से भिन्न समझता है। मूल्य-आधारित शिक्षा का उद्देश्य युवा पीढ़ी में सभी वर्गों एवं व्यक्तियों के प्रति सम्मान का भाव विकसित करना है, जिससे हिंसा की भावना उनके मस्तिष्क में कभी स्थान न ले सकें तथा वह भाईचारे एवं सहयोग की भावना के साथ समाज में सभी प्रकार के लोगों के साथ मिल-जुलकर रहें।

मूल्यपरक शिक्षा सामाजिक व्यवस्था एवं परिवेश में अपराध की बढ़ती दर को कम कर मनुष्य को आपराधिक प्रवृत्ति से दूर करने का साधन है। वर्तमान युग में युवा पीढ़ी अपनी कमजोर, कुंठित मानसिकता व असुरक्षा की भावना के कारण चोरी करना, हत्या करना, बंदी बनाना, साइबर क्राइम आदि जैसे जघन्य अपराधों में संलग्न है। मानसिक अस्वस्थता मनुष्य को जघन्य अपराधों की तरफ प्रवृत्त करती है। मूल्य शिक्षा विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों का विकास कर विद्यार्थी को सभी अपराधों से परिचय कराते हुए असामाजिकता की भावना व अपराध की दुष्प्रवृत्ति से सही मार्ग पर लाने में सहायता कर सकती है। उन्हें अपराधों के प्रति दंड का ज्ञान कराकर नैतिक-अनैतिक कार्यों में भेद का ज्ञान कराकर तथा सुरक्षा की भावना का समावेश कर एक स्वस्थ मानसिक प्रवृत्ति विकसित की जा सकती है, जिससे वह अपने भावी जीवन में एक स्वस्थ समाज एवं परिवार के संचालन में सहयोगी बने।

शैक्षिक मूल्यों के आधार पर मूल्य-आधारित शिक्षा के उद्देश्य

मूल्य-आधारित शिक्षा न केवल नैतिक विषय के माध्यम से, बल्कि सभी विषयों के पाठ्यक्रम को सम्मिलित करते हुए विद्यार्थी की मौलिक एवं मूल्य संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करती है। विद्यार्थी के पाठ्यक्रम के सभी विषय यदि मूल्य शिक्षा को सम्मिलित करते हैं तो विद्यार्थी भी उसे पाठ्यक्रम का हिस्सा समझकर अधिक उत्साह के साथ सीखते एवं व्यावहारिक बनाते हैं। मूल्य शिक्षा के माध्यम से सीखे हुए मूल्य विद्यार्थियों के शैक्षिक पाठ्यक्रम के सीखने की गति में वृद्धि करते हैं तथा मूल्य शिक्षा, शिक्षा को अधिक प्रयोगात्मक व

व्यावहारिक बनाकर विद्यार्थियों में शिक्षा के प्रति लगाव उत्पन्न करती है और उनके सामाजिक व मानसिक स्वास्थ्य को उत्तम बनाती है।

मूल्यपरक शिक्षा का उद्देश्य विद्यालय को मूल्य सीखने का केंद्रबिंदु तथा कक्षा को मूल्य अभ्यास के लिए वातावरण के रूप में विकसित करना है। समाज के किसी भी अन्य स्थान की तुलना में विद्यालय में सभी प्रकार के मूल्यों (सामाजिक, सांस्कृतिक, व्यक्तिगत, नैतिक, आध्यात्मिक) के समावेश को संभव बनाया जा सकता है। शिक्षा प्रक्रिया के द्वारा मूल्यों को मूर्तरूप विद्यालय में ही मिलता है। मूल्यपरक शिक्षा के द्वारा ही विद्यार्थी के समक्ष मूल्य प्रतिमूर्तित किए जा सकते हैं, जो मूल्य शिक्षा के उद्देश्य को पूरा करती है, अत: मूल्यपरक शिक्षा विद्यालय तथा समाज में सभी मूल्यों को एकार्थी रूप में प्रस्तुत करती है।

मूल्य शिक्षा न केवल विद्यार्थी एवं शिक्षक को मूल्यों के प्रतिरूप में तैयार करती है, बल्कि स्वयं शिक्षा का भी एक अलग रूप एवं आयाम तय करती है, जो केवल तथ्य एवं वास्तविकता के आधार पर नहीं, बल्कि संपूर्ण व्यावहारिक व नैतिक ज्ञान के सम्मिलित रूप में जीवन का परिचय कराती है। मूल्य ज्ञान व्यक्ति को सामाजिक व व्यावहारिक सुगमता प्रदान कर समाज व अन्य किसी के प्रति भी सकारात्मक व्यवहार करने के लिए प्रेरित करती है। यह मूल्यों, शिक्षा एवं व्यवहार में सह-संबंध स्थापत करती है।

मूल्य-आधारित शिक्षा विद्यार्थी को किसी भी परिस्थिति में निर्णय लेने के लिए परिपक्व बनाती है, जिससे वह छोटे-छोटे द्वंद्व से न डरकर किसी भी स्थिति में ज्ञान के आधार पर मजबूत मनोबल के द्वारा स्वयं को अडिग रख सकता है तथा विचारों और व्यवहार में अधिक सजग होता है। विद्यार्थी स्वज्ञान एवं आत्मज्ञान के लिए भी तैयार होता है। वह स्व-अनुशासन के माध्यम से स्वयं के व्यवहार एवं क्रियाओं के लिए आत्मचिंतन की ओर अग्रसर होता है।

शिक्षक व शिक्षार्थी के मध्य सकारात्मकता का भाव उत्पन्न करना मूल्यपरक शिक्षा का एक अन्य उद्देश्य है। विद्यार्थी के समग्र विकास में भावात्मक विकास भी सम्मिलित है। यदि वह शिक्षक के प्रति डर का अनुभव करेगा तो संभव है कि संपूर्ण सामाजिक परिवेश में भी सामाजिक संबंधों को बनाए रखने में

आत्मविश्वास की कमी महसूस करे तथा उसका सामाजिक विकास अवरुद्ध हो। शिक्षक स्वयं को विद्यार्थी के अनुरूप ढालकर उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है तथा सही समय पर सही मूल्य बताकर शिक्षक शिक्षार्थी के मध्य एक विश्वास पैदा करता है। विद्यार्थी भी शिक्षक के प्रति डर की भावना का त्याग कर अधिक सहज भाव से अपने पाठ्यक्रम व सहगामी क्रियाकलापों के बारे में बात कर सकता है तथा शिक्षक का वही विनम्र व्यवहार वह स्वयं ग्रहण करता है और उसके अनुरूप समाज में व्यवहार करता है।

इस प्रकार मूल्य-आधारित शिक्षा भारत के संविधान से लेकर शिक्षा से संबंधित नीतियों के महत्त्वपूर्ण बिंदुओं को सम्मिलित करती है। संविधान की प्रस्तावना में 'धर्मनिरपेक्ष' समाज की स्थापना को मूल्यपरक शिक्षा के प्रारूप में प्रमुखता से लिया गया है। व्यक्ति का संपूर्ण विकास प्रारंभ से ही शिक्षा का एक मुख्य उद्देश्य रहा है, जिसे राष्ट्रीय शिक्षा नीति, कोठारी आयोग एवं राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा (NCF) 2005 में भी सम्मिलित किया गया है। शिक्षा से लेकर जीवन के किसी भी मोड़ पर मूल्य-आधारित शिक्षा व्यक्ति को अकेला नहीं छोड़ती तथा मूल्यों के रूप में पथ-प्रदर्शक की तरह कार्य करती है। व्यक्ति के बाह्य-आंतरिक द्वंद्व को मूल्य-शिक्षा सरल एवं सहज भाव से अवगत कराती है तथा एक उत्तम व्यक्तित्व एवं समाज के निर्माण में अतुलनीय योगदान देती है। मूल्य-आधारित शिक्षा व्यक्ति के बुद्धिजीवी होने के अलावा एक आदर्श व्यक्ति, महान् इनसान, अच्छा वक्ता, उत्तम पथ-प्रदर्शक, अनुसरणीय व्यक्तित्व के रूप में व्यक्ति विशेष की एक अलग पहचान बनाती है। पूँजीवाद व भौतिकवादी व्यवस्था के चलते वर्तमान पीढ़ी को अपनी प्राचीन मूल्यों एवं परंपरा से अवगत कराने की आवश्यकता है तथा मूल्यपरक शिक्षा व्यक्तिगत एवं सामाजिक मूल्य-ह्रास की क्षतिपूर्ति करने में पूरी तरह से सक्षम है। मूल्य-आधारित शिक्षा एक नए समाज के निर्माण की प्रक्रिया को दृष्टिगोचर करती है, जो सभी अवगुणों से रहित व्यक्ति एवं समाज के विकास का मार्ग प्रशस्त करती है।

इक्कीसवीं शताब्दी के लिए शिक्षा पर यूनेस्को की रिपोर्ट 'शिक्षा : आंतरिक स्रोत' (Learning : The Treasure Within) एक ऐसी शिक्षा के लिए सिफारिश करती है, जो संस्कृति के लिए निहित है और प्रगति के लिए प्रतिबद्ध

है। रिपोर्ट कहती है—"एक सामंजस्यपूर्ण और एकीकृत व्यक्तित्व विकसित करना केवल तब तक संभव नहीं होगा, जब तक शिक्षा प्रणाली संस्कृति, विरासत और परंपराओं के मूल्यों को विकसित करें। भारतीय विरासत, संस्कृति और मूल्यों का प्रारंभिक चरण से शिक्षा के उच्च आयामों तक शिक्षा प्रणाली में व्यापक रूप से अध्ययन, विश्लेषण और समावेश किया जाना आवश्यक है।

मूल्य शिक्षा का महत्त्व : शिक्षण विधियाँ

मूल्य शिक्षा के महत्त्व को परिभाषित करते हुए सी.एस. लेविस ने लिखा है—"मूल्यों के बिना शिक्षा उतनी ही उपयोगी है, जितना कि एक मनुष्य को चतुर शैतान बना देना।" मूल्य शिक्षा के लिए अलग-अलग तरीके और शिक्षण तकनीक हैं। मूल्य शिक्षा के शिक्षण के लिए कुछ अलग तरीके हैं—

- कक्षा शिक्षण गतिविधियों के तरीके इस पद्धति में शिक्षकों द्वारा सिखाई गई प्रत्यक्ष प्रस्तुति, चर्चाएँ, पढ़ना, सुनना आदि शामिल हैं।
- व्यावहारिक गतिविधि विधि—इस पद्धति में रणनीतियों का व्यावहारिक वर्णन शामिल है। यह व्यावहारिक ज्ञान सीखने के कौशल को बढ़ाता है और स्वयं के द्वारा व्यावहारिक जीवन जीने में मदद करता है।
- सामाजिक तकनीक—इन व्यावहारिक गतिविधियों और अनुभवों में शिक्षार्थी शामिल हैं, जो समाजीकरण में एजेंटों के कार्य और समस्याओं का प्रतिनिधित्व करते हैं।
- वृत्तांत सीखने की विधि—यह एक समूह के जीवन में एक प्रकरण या अनुभव का अध्ययन करता है।

हम संयुक्त राष्ट्र के शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन के संविधान में वैश्विक नागरिकों के लिए मूल्य-शिक्षा के महत्त्व और उद्देश्य को देख सकते हैं। इसके कुछ घटक हैं, जो इन बातों की तरफ संकेत करते हैं। राज्यों की सरकारें इस संविधान की ओर से घोषणा करती हैं—

- क्योंकि युद्ध सर्वप्रथम मानव के मस्तिष्क में शुरू होता है, इसलिए शांति का बचाव भी वहीं से ही किया जाना आवश्यक है;
- दुनिया के लोगों के बीच संदेह और अविश्वास, भिन्न परंपराओं और

जीवन की अज्ञानता के कारण रहा है, जो मतभेद युद्ध का कारण बने उनको मिटाना;

- दो विश्वयुद्धों में मानव गरिमा, समानता और आपसी सम्मान के लोकतांत्रिक सिद्धांतों के खंडन का वर्णन करते हुए इन मूल्यों को स्थापित करने का प्रयास किया जाए;
- संस्कृति का व्यापक प्रसार, न्याय, स्वतंत्रता और शांति के लिए मानवता की शिक्षा मनुष्य की गरिमा के लिए अपरिहार्य है और एक पवित्र कर्तव्य है, जिसे सभी राष्ट्रों को आपसी सहायता और चिंता की भावना से पूरा करना चाहिए;
- शांति स्थापना के लिए बौद्धिक और नैतिक एकजुटता पर बल देने की बात कही गई।

इसके परिणाम में दुनिया के लोगों के शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संबंधों के माध्यम से आगे बढ़ने के उद्देश्य से 1945 में संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन यूनेस्को बनाया गया। जो अपनी स्थापना से आज तक इस दिशा में अत्यंत सराहनीय कार्य कर रहा है।

□

4

मूल्यों के प्रकार

मूल्यों का आयाम बहुत विस्तृत है तथा गतिशील समय के साथ निरंतर विस्तृत होता जा रहा है। मूल्य एक प्रकार की आचार-संहिता के रूप में वर्णित किए जा सकते हैं। जिनको अपने पारिवारिक संस्कारों के माध्यम से ग्रहण कर, व्यक्ति अपने लक्ष्य प्राप्ति की ओर अग्रसर होता है। चिंतकों, समाजशास्त्रियों एवं मनोवैज्ञानिकों ने भिन्न-भिन्न आधार लेकर मूल्यों को वर्गीकृत किया है। प्रथम वर्गीकरण आंतरिक (Intrinsic) एवं बाह्य (Extrinsic) मूल्य के रूप में हुआ है। यह विवेचना अध्यात्मवादी विद्वानों द्वारा की गई है, अत: सामान्यजन हेतु अरुचिकर ही होगी। मूल्यों पर NCERT द्वारा विस्तृत व गहन शोध किया गया है। NCERT की पुस्तक 'डॉक्यूमेंट ऑफ सोशल, मोरेल एंड स्पिरिचुअल वैल्यूज इन एजुकेशन' में कुल 83 नैतिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों को स्थान दिया गया है। इनके अनुसार प्रमुख मूल्य इस प्रकार हैं—

नागरिकता, अनुशासन, सहनशीलता, समानता सहयोग, प्रजातांत्रिक निर्णय लेना, शिष्टाचार, भक्ति, अखंडता, शुचिता, निष्कपटता, आत्म-नियंत्रण, नियमितता, दूसरों का सम्मान, वृद्धावस्था का सम्मान, सामाजिक न्याय, स्वानुशासन आत्मविश्वास, साहस, जिज्ञासा, धर्म, नेतृत्व, राष्ट्रीय एकता, दयालुता, सार्वभौमिक सत्य, देशभक्ति, राष्ट्रीय एकता, धर्मनिरपेक्षता, समय की पाबंदी इत्यादि।

इसी संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) द्वारा शिक्षा में भारत की बहुलवादी संस्कृति को ध्यान में रखते हुए शिक्षा द्वारा सार्वभौमिक व शाश्वत मूल्यों के विकास पर जोर दिया गया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में विज्ञान शिक्षा के

माध्यम से बालकों में जिज्ञासा, वैज्ञानिक अभिरुचि, तार्किकता, वस्तुनिष्ठता एवं सौंदर्यात्मक संवेदनशीलता की अभिवृद्धि पर बल दिया गया। प्रजातंत्र, धर्मनिरपेक्षता एवं समतावादी मूल्यों के बढ़ावे पर भी इस नीति में जोर दिया गया।

मूल्य शिक्षा के क्षेत्र में कार्नेल, पैरी, रेल्फ व्हाइट, शेवर एंड स्ट्रांग, लेविस, वी.एन. के रेड्डी तथा स्प्रेंगर ने महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। स्प्रेंगर ने मूल्यों को छह प्रकार से वर्गीकृत किया है—सैद्धांतिक (Theoretical), आर्थिक (Economic), सौंदर्यात्मक (Aesthetic), सामाजिक (Social), राजनीतिक (Political) तथा धार्मिक (Religious)। उपर्युक्त के आधार पर कहा जा सकता है कि अलग-अलग विचारधाराओं के आधार पर मूल्यों में भी कुछ भिन्नता हो सकती है, परंतु सभी शिक्षाशास्त्रियों, दार्शनिक व समाजशास्त्री इस तथ्य पर एक मत हैं कि 'सत्यं, शिवं सुन्दरम्' (सत्य, कल्याणकारी व सुंदरता) यही परम मूल्य हैं। इन तीनों परम मूल्यों को आधार बनाकर तीन अलग ज्ञान की विधाएँ प्रचलन में हैं। सत्य के मूल्य पर आधारित तर्कशास्त्र (Logic) सत्य व असत्य के आधार पर जीवन के प्रश्नों के उत्तर तलाश करता है। इसी प्रकार Aesthetics या सौंदर्य शास्त्र सौंदर्य-संबंधी विवेचना करता है तथा मानव कल्याण के सभी प्रश्न Ethics या नीतिशास्त्र के अंतर्गत आते हैं। विश्व की सभी संस्कृतियों में इन ही तीन परम मूल्यों का विभिन्न रूपों में समावेश होता है।

परम मूल्यों के अतिरिक्त भी अनेक मूल्य होते हैं। अध्ययन की सुगमता हेतु उनको निम्न वर्गों में बाँटा जा सकता है—

1. व्यक्तिगत मूल्य,
2. सामाजिक और नैतिक मूल्य,
3. सांस्कृतिक मूल्य,
4. आध्यात्मिक मूल्य,
5. राष्ट्रीय मूल्य,
6. पारिवारिक मूल्य,
7. सार्वभौमिक मूल्य।

1. व्यक्तिगत मूल्य—एक खाली लालटेन कोई रोशनी प्रदान नहीं

करती, इसी प्रकार व्यक्तिगत मूल्य वह ईंधन है, जो आपके प्रकाश को तेज चमकने की अनुमति देता है।

- **ईमानदारी**—अपने विचारों, कृत्यों और व्यवहार में ईमानदार होने का अर्थ है कि हम वास्तविक और सच्चे हैं। अपने जीवन को ईमानदारी और निष्ठा के साथ जीने का मतलब है, खुलकर जीना और दूसरों को अपना सच्चा स्वरूप दिखाने का फैसला करना, ताकि आपके वास्तविक होने पर भरोसा किया जा सके।
- **अखंडता**—ईमानदारी और अखंडता विश्वास पैदा करती है अपने आप पर और हमारे आसपास के सभी लोगों में विश्वास आत्मविश्वास पैदा करता है, जिसकी हम सभी को जीवन की समस्याओं पर विजय प्राप्त करने के लिए आवश्यकता होती है और जो हमें अपने लक्ष्यों को पूरा करने के लिए भी प्रोत्साहित करता है।
- **साहस और प्रतिबद्धता**—साहस वह है, जो आपको अपने लक्ष्य के प्रति काम करने के लिए प्रतिबद्ध करता है—भय के अभाव में नहीं, बल्कि इसके बावजूद। साहस और प्रतिबद्धता एक-दूसरे के पूरक हैं। अपने लक्ष्य के लिए प्रतिबद्ध व्यक्ति ही उसे पाने के लिए आगे बढ़ने का साहस रखता है और साहस ही व्यक्ति को प्रतिबद्धता की ताकत देता है।
- **दया और सहानुभूति**—दया एक भाषा है, जिसे बहरा सुन सकता है और अंधा देख सकता है—*मार्क ट्वेन*

  दया और सहानुभूति निकटता से संबंधित हैं; सहानुभूति में किसी और के दृष्टिकोण से स्थिति को देखने और दर्द और पीड़ा को महसूस करने की तत्परता शामिल है। इसमें क्रोध या प्रतिशोध के बजाय दया के साथ क्षमा और प्रतिक्रिया शामिल है। दया एक ऐसी चीज नहीं है, जो कड़ी मेहनत की माँग करती है। यह दूसरों को कोई नुकसान न करने के सरल कार्य से उत्पन्न होता है। दया और सहानुभूति किसी भी चीज को तौलने के अपेक्षा समझने के लिए प्रेरित करती हैं।
- **धीरज**—धैर्य, बिना किसी परेशानी, चिंता के समस्याओं या पीड़ा को

स्वीकार करने या सहने की क्षमता है। दो उद्धरण धैर्य को सबसे अच्छा परिभाषित करते हैं, एक जॉर्ज बर्नार्ड शॉ द्वारा है, "दो चीजें आपको परिभाषित करती हैं—आपका धैर्य, जब आपके पास कुछ भी नहीं है और आपका दृष्टिकोण, जब आपके पास सबकुछ है।" दूसरा उद्धरण महात्मा गांधी द्वारा दिया गया है, "धैर्य खोना लड़ाई हारना है।"

- **आभार/प्रशंसा**—आभार और प्रशंसा खुशी और एक शांतिपूर्ण दिमाग की कुंजी है। आपके पास जो कुछ भी अच्छा है, उसके लिए आभारी होना और आपके पास जो कुछ है या जो किसी ने कुछ किया है, उसकी सराहना करना, सकारात्मक सोच को पैदा करता है।
- **माफी**—माफी जानबूझकर उन चीजों को जाने देने या भूल जाने की प्रक्रिया है, जो नाराजगी और प्रतिशोध जैसी नकारात्मक भावनाओं को जन्म देती हैं। अपराध के बारे में भावनाओं और दृष्टिकोण में परिवर्तन ही माफी है। माफ करने के लिए यह पाठ स्व-अध्ययन की दृष्टि से मुझे प्रेरणात्मक लगता है, "मैं उन लोगों को माफ करता हूँ, जिन्होंने मुझे चोट पहुँचाई है, क्योंकि मैं जानता हूँ कि मैंने भी गलतियाँ की हैं और लोगों को भी चोट पहुँचाई है और मैं इस गुस्से और नाराजगी से मुक्त होना चाहता हूँ। मैं स्वतंत्रता का चयन करता हूँ और मैं उन लोगों की भलाई चाहता हूँ (और उन लोगों के लिए काम करता हूँ), जिन्होंने मुझे चोट पहुँचाई है।"
- **प्रेम**—प्यार सभी में सकारात्मक और अच्छा देखने में मदद करता है और यह उनके लिए अच्छी चीजें प्राप्त करने की इच्छा है, जिन्हें आप प्रेम करते हैं। आप हमेशा यह नहीं जान सकते कि किसी और के लिए क्या सबसे अच्छा है, लेकिन अगर आप उनसे प्यार करते हैं तो आप उनकी खुशी चाहते हैं और आप उन्हें विकसित होते देखना चाहते हैं। इससे सबसे अधिक आपको खुशी होती है।
- **स्वेच्छा से देने (आत्मदान) की क्षमता**—आत्मदान या स्वेच्छा से देना, त्याग का सकारात्मक पहलू है। दूसरों को स्वयं देने से न केवल उनके साथ जुड़ने की प्रेरणा मिलती है, बल्कि जुड़ाव को स्वीकार

करने की भावना को बल मिलता है। जीवन बूमरैंग है, जो भी आप देते हैं, वह आपके पास वापस आता है। बलिदान दर्द पैदा करता है और आत्मदान स्वाभिमान, स्वावलंबी होने की भावना पैदा करता है। बलिदान दूसरों के लिए है, जबकि आत्मदान स्वयं को समय, पैसा, ऊर्जा देना और अपने स्वयं के मूल्यों को संतुष्ट करना है।

- **सत्य और अहिंसा—**"यदि मैं बिल्कुल अकेला भी होऊँ तो भी सत्य और अहिंसा पर दृढ़ रहूँगा, क्योंकि यही सबसे आला दर्जे का साहस है, जिसके सामने एटम बम भी निस्प्रभावी हो जाता है।"—*गांधीजी*
- मनुष्यों को सभी जीवों के बीच विकास के शिखर के रूप में माना जाता है, क्योंकि उनके पास व्यवहार करने की क्षमता है। सच्चाई और असत्य के बीच अंतर करने में सक्षम होने की शक्ति, उसे दोनों के बीच चयन करने का विकल्प देती है। सत्य वक्ता के दिमाग के साथ-साथ श्रोता के मन से भी सभी भ्रमों को हटा देता है। प्राचीन हिंदू, जैन और बौद्ध नैतिक उपदेश के रूप में अहिंसा को व्यक्त करते हैं। नकारात्मक उपसर्ग अ की हिंसा के साथ संधि से अहिंसा शब्द उत्पन्न हुआ है। अहिंसा शब्द हिंदू शिक्षाओं में छांदोग्य उपनिषद् के रूप में प्रकट होता है। जैन धर्म पहले पद के रूप में अहिंसा का वर्णन करता है। अहिंसा बौद्ध धर्म में भी मुख्य गुण है। महात्मा गांधी ने सत्य और अहिंसा को अविभाज्य माना है।

2. **सामाजिक और नैतिक मूल्य—**मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में उसकी भागीदारी उतनी ही महत्त्वपूर्ण है, जितनी उसको समाज की नीति अपनी शारीरिक मानसिक और सामाजिक जरूरतें पूर्ण करने हेतु। समाज परस्परता की नीति पर चलता है, इसलिए सामाजिक और नैतिक मूल्य अनिवार्य हैं।

- **विविधता का सम्मान—**सभी लोगों के साथ प्रभावी ढंग से काम करने, सम्मान के साथ व्यवहार करने, विभिन्न दृष्टिकोणों को सम्मान देने स्वयं के पूर्वग्रहों और व्यवहारों की जाँच करने, किसी व्यक्ति के साथ भेदभाव न करने के मूल्य को विविधता का सम्मान कहा जाता

है। मानवाधिकार और सह-अस्तित्व की दृष्टि से यह एक महत्त्वपूर्ण मूल्य है।

- **व्यावसायिकता और नैतिकता—**काम और उपलब्धियों में गर्व कर, पेशेवर क्षमता का प्रदर्शन व्यावसायिकता की पहचान है। ईमानदारी और कुशलता से प्रतिबद्धताओं का निर्वाह, व्यक्तिगत पूर्वग्रह से दूर, पेशेवर से प्रेरणा और दृढ़ता से चुनौतियों का सामना करना, तनाव रहित शांतचित्त रहना ही नैतिकता का परिचायक है।
- **विकास—**विकास स्वयं के उत्थान पर आधारित है और दूसरों के उत्थान में मदद करता है। यह एक ओर व्यक्ति को सबसे अच्छा नेतृत्व करने के लिए तैयार करता है और दूसरी ओर टीम और समुदाय में उनकी भागीदारी और योगदान सुनिश्चित करता है।
- **पारस्परिक और अंतर्वैयक्तिक संबंध—**पारस्परिक संबंध एक व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति से संबंध है। आमतौर पर यह एक नागरिक का दूसरे से संबंध को बताता है। वैयक्तिक संबंध व्यक्ति के अपने गतियों, भावनाओं और विचारों से संबंधित हैं।
- **सकारात्मक और रचनात्मक सोच—**"हम ब्रह्मांड के सभी अच्छे विचारों के उत्तराधिकारी हैं, अगर हम उनके लिए खुद को खोलते हैं।"—*स्वामी विवेकानंद*। सकारात्मकता भी एक महत्त्वपूर्ण मूल्य है।
- विभिन्न शोधकर्ताओं ने सुझाव दिया है कि सकारात्मक विचारक तनाव का हमेशा बेहतर सामना करता है, कौशल, मजबूत प्रतिरक्षा और हृदय रोग का कम जोखिम महसूस करता है, हालाँकि यह एक स्वास्थ्य उपचार नहीं है। नकारात्मक विचारों पर विचार करने के बजाय सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने से आपके समग्र मानसिक लाभ हो सकते हैं। संज्ञानात्मक मनोवैज्ञानिक रॉबर्ट जे स्टर्नबर्ग के अनुसार रचनात्मकता को मोटे तौर पर परिभाषित किया जा सकता है।
- "…ऐसी चीज के निर्माण की प्रक्रिया, जो मूल और सार्थक दोनों है।" रचनात्मकता हमें नए विचारों और नए तरीकों से सोचने और समस्या सुलझाने के अवसर प्रदान करती है। रचनात्मक गतिविधियाँ हमें अपनी

विशिष्टता और विविधता को स्वीकार करने और मानने में मदद करती हैं। रचनात्मकता आत्म-अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करती है, व्यक्तिगत भावनाओं और अनुभव से कुछ बनाने का एक तरीका है। रचनात्मक होने से हमें नए विचारों और नए तरीकों से सोचने और समस्या सुलझाने के अवसर मिलते हैं। रचनात्मक गतिविधियाँ हमें अपनी विशिष्टता और विविधता को स्वीकार करने और मनाने में मदद करती हैं। रचनात्मकता आत्म-अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करती है, व्यक्तिगत भावनाओं और अनुभव से कुछ बनाने का एक तरीका है।

3. **सांस्कृतिक मूल्य**—सांस्कृतिक मूल्य मूल सिद्धांत और आदर्श हैं, जिन पर एक संपूर्ण समुदाय जीवित रहता है। सांस्कृतिक मूल्यों पर ही किसी समुदाय का अस्तित्व और सामंजस्यपूर्ण संबंधों का ढाँचा खड़ा होता है। सांस्कृतिक अवधारणा के कई अवयव हैं। जैसे कि रीति-रिवाज, जिसमें परंपराएँ शामिल होती हैं; मूल्य, जो विश्वास हैं और संस्कृति, जो एक समूह के लिए मार्गदर्शक है; हालाँकि बहुत सारी जानकारी, तकनीक और ज्ञान उपलब्ध है, जिससे दुनिया अधिक-से-अधिक परस्पर जुड़ी हुई है। इसका मतलब यह नहीं है कि व्यक्ति और समाज, सभी शांति और न्याय के साथ रह रहे हैं। एक सुरक्षित दुनिया में सद्भाव से रहने के लिए, संघर्ष को रोकने के लिए, गरीबी को मिटाने के लिए या सभी को शिक्षित बनाने के लिए अभी भी पर्याप्त ज्ञान की आवश्यकता है। संपूर्ण सांस्कृतिक प्रणाली मुख्य सांस्कृतिक मूल्यों के एक समूह को प्रोत्साहित करती है, उसे वैध बनाती है और पुरस्कृत करती है। सांस्कृतिक मूल्यों में सामूहिकतावाद, सौंपी गई भूमिकाओं की श्रेणीबद्ध प्रणाली, अनिश्चितता से बचाव, समय का अभिविन्यास, लिंग समानता और मुखरता, शामिल हैं।
4. **आध्यात्मिक मूल्य**—सत्य, धार्मिकता, शांति, प्रेम और अहिंसा के मूल्य सभी प्रमुख आध्यात्मिक मार्गों में पाए जाते हैं। ये आध्यात्मिक मूल्य भी मानवीय मूल्य हैं और एक स्वस्थ, जीवंत और उच्च कोटि के समाज की मूल जड़ें हैं। धर्म के बारे में शिक्षा विश्वास की नींव को

ठोस करती है, जैसा कि विक्टोरियन युग में टेनीसन (Tennyson) ने कहा था—

"We have but faith : we cannot know;
For knowledge is of thing we see;
And yet we trust it comes from thee,
A beam in darkness; let it grow".

अर्थात् हमें विश्वास है, लेकिन हम अनजान हैं, उस ज्ञान से जो हमें स्पष्ट रूप से दिखता नहीं है (भगवान्) और फिर भी हमें विश्वास है कि ईश्वर है, जो अँधेरे में उम्मीद की एक किरण को आने देता है।

5. **राष्ट्रीय मूल्य**—वे मूल्य, जो हमारा मार्गदर्शन करते हैं कि हम नागरिकों या नेताओं के रूप में एक-दूसरे से कैसे व्यवहार करें, 'राष्ट्रीय मूल्य' कहलाते हैं। राष्ट्रीय मूल्यों से परिभाषित होता है कि किसी राज्य में क्या अच्छा, वांछनीय और उपयोगी है या किसी विशेष राज्य और समाज में क्या अवांछनीय और अस्वीकार्य है। राष्ट्रीय मूल्यों के उदाहरण हैं—स्वतंत्रता, शांति, सुरक्षा, न्याय, लोकतंत्र, स्वस्थ प्राकृतिक वातावरण आदि। किसी भी देश का संविधान (लिखित या अलिखित) देश के मूल्यों को निर्देशित करता है। मूलत: शासन के राष्ट्रीय मूल्य और सिद्धांत इस प्रकार होते हैं—

- **देशभक्ति**—देश के प्रति वफादारी, समर्पण और प्रतिबद्धता। स्वामित्व और अपनेपन की भावना ही देशभक्ति के मूल्य को संचालित करती है।
- **स्वतंत्रता**—इसमें वह राजनीतिक व्यवस्था शामिल है, जिसमें किसी भौगोलिक क्षेत्र के मूल निवासी ही देश का शासन और प्रबंधन सुनिश्चित कर राजनीतिक शक्ति, संसाधनों और सेवाओं का हस्तांतरण समस्त देश में करते हैं।
- **राष्ट्रीय एकता**—इसमें देश की एकता, सामंजस्य, एकजुटता, भाईचारा, सफलता और देश के विकास को बढ़ावा देने के सामान्य लक्ष्यों की खोज में एक साथ काम किया जाता है। एकता का एक रूप

भाईचारा है, अर्थात् बंधुत्व की भावना।

- **कानून का नियम**—यह इस बात से संबंधित है कि नागरिक और सरकार दोनों संविधान के अनुसार कानून कैसे प्रस्तुत करते हैं और कैसे उसका पालन करते हैं। यह नागरिकों के अधिकारों और कर्तव्यों, दोनों को परिभाषित करते हैं।
- **लोकतंत्र**—लोकतंत्र एक ऐसी प्रणाली है, जिसमें सभी नागरिक शासन के विभिन्न निर्णयों और सरकार बनाने में भागीदारी करते हैं।
- **समानता**—इसके अनुसार देश के सभी लोगों के लिए स्थिति और अवसरों की समानता रहती है। यह हमारे सभी निर्णय और कार्यों में तटस्थ, उचित और निष्पक्ष होने का गुण है। इसका मतलब यह है कि विभिन्न परिस्थितियों में हमारे नागरिकों के साथ व्यवहार करते समय, चाहे रोजगार के मामले, शिक्षा के मुद्दे, या सरकारी सेवाओं में दूसरों के बीच, हमें यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि हम न केवल प्रत्येक व्यक्ति के साथ उचित व्यवहार करें, साथ ही यह भी कि हम किसी व्यक्ति विशेष को कभी अनुचित लाभ न दें, अन्य लोगों के साथ पक्षपात के कारण, या क्योंकि हम उन्हें जानते हैं, क्योंकि वे हमारे समुदाय या गाँव या कस्बे से आते हैं या क्योंकि वे अन्य समान विचारों के बीच हमारे जातीय समुदाय से हैं। भारतीय संविधान देश में सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक समानता प्रदान करने का प्रयास करता है।
- **न्याय**—न्याय का अर्थ संविधान द्वारा बराबर सामाजिक स्थिति के आधार पर एक अधिक न्यायसंगत समाज बनाने से है। यह समाज के भीतर धन, अवसरों और विशेषाधिकारों के वितरण के संदर्भ में निष्पक्षता सुनिश्चित करने की व्यवस्था का नाम है।
- **सुशासन**—यह सार्वजनिक मामलों के संचालन और सभी के लिए मानव अधिकारों तथा सामाजिक कल्याण की प्राप्ति की गारंटी देने के लिए कुशलतापूर्वक और प्रभावी रूप में सार्वजनिक संसाधनों का प्रबंधन करने की योग्यता है।
- **अखंडता**—यह किसी के कार्यों, व्यवहार और दूसरों के साथ संबंधों

में ईमानदार और सच्चा होने के बारे में है। यह व्यक्ति के विचारों और कृत्यों को देश के प्रति पारदर्शी बनाता है और जवाबदेही को निर्धारित करता है।

6. **पारिवारिक मूल्य**—कोई बच्चा मूल्य लेकर पैदा नहीं होता है। बच्चों को हमारे परिवार, दोस्तों और समुदाय द्वारा मूल्य सिखाया जाता है। हम अगली पीढ़ियों को समस्त मूल्य हस्तांतरित करते हैं, इसलिए यह महत्त्वपूर्ण है कि हम उन चीजों के बारे में स्पष्ट रहें, जिनके बारे में हम परवाह करते हैं और जो हम अपने बच्चों और पोते-पोतियों को भी सिखाते हैं। परिवार के सदस्यों को उनके दोस्त, सहकर्मी, शिक्षक और सामान्य रूप से समाज के माध्यम से कई प्रकार के मूल्यों से अवगत कराया जाता है। जितना अधिक बच्चे अपने परिवार के मूल्यों के बारे में जानते हैं, उतना ही बेहतर वे दूसरों के साथ चर्चा करने में सक्षम होते हैं। पारिवारिक मूल्यों में सभी विचार शामिल हैं कि आप अपने पारिवारिक जीवन को कैसे जीना चाहते हैं और वे अकसर पिछली पीढ़ियों से प्रेरित होते हैं। वे विभिन्न परिस्थितियों में व्यवहार को परिभाषित करने में मदद कर सकते हैं, युवाओं को अच्छे विकल्प बनाने में मदद कर सकते हैं और आपके परिवार के बंधन को मजबूत कर सकते हैं। पारिवारिक मूल्यों के प्रकारों में शामिल हैं—

- **नैतिक मूल्य**—आधुनिक मूल्यों के पारंपरिक मूल्यों के साथ टकराव होने पर सही और गलत पर चर्चा होती है। पारिवारिक मूल्य उस समय सही और गलत का भेद परिभाषित कर पथ-प्रशस्त करते हैं।
- **व्यक्तिगत आचरण और सामाजिक व्यवहार**—दूसरों के साथ (परिवार के अंदर और बाहर दोनों) व्यवहार नैतिक-मूल्यों पर आधारित होते हैं। कार्य करने से पहले परिणामों के बारे में सोच और प्रयास का मार्ग पारिवारिक मूल्य ही स्थापित करते हैं। पालतू जानवरों से व्यवहार भी इसी पर निर्भर है।
- **आध्यात्मिक और धार्मिक मूल्य**—धर्म के दिशा-निर्देशों का पालन परिवार सिखाता है।

- **पारिवारिक कार्य नैतिकता**—मूल्यों को जीना, केवल उनके बारे में बात न करना और काम करने की विधि, सब परिवार के वातावरण पर निर्भर है।
- **शैक्षिक मूल्य**—हमेशा सीखना जारी रखना, असफलताओं से उदास न होना।
- **परिवार का समय**—एक परिवार के रूप में एक साथ समय बिताना, व्यक्तिगत हितों से अधिक परिवार का सामूहिक हित देखना।
- **पारिवारिक परंपराएँ**—उत्सव और त्योहार मनाना।
- **वित्तीय मूल्य**—खरीदने के बजाय पैसे का निवेश मूल्यों पर निर्भर है।
- **परिवार के स्वास्थ्य और फिटनेस**—हमेशा सुरक्षा बनाए रखने का प्रयास करना और सबके स्वास्थ्य का खयाल रखना।

7. **सार्वभौमिक मूल्य**—ऑक्सफेम वैश्विक मूल्यों के अनुसार, जिम्मेदार वैश्विक नागरिकों के प्रमुख घटक में पहचान और आत्म-सम्मान, सहानुभूति, सामाजिक न्याय और इक्विटी के लिए प्रतिबद्धता, मूल्य और विविधता के लिए सम्मान शामिल हैं। सार्वभौमिक मूल्यों में हमें मानवीय विशेषताओं को पहचानने की आवश्यकता है। अच्छे और बुरे, दोनों रूप मनुष्यों में समान हैं। अन्य समुदायों के लोगों के प्रति मानवीय गरिमा और संवेदनशीलता तथा सम्मान उसी प्रकार दिखाना चाहिए, जैसा हम अपने लिए अपेक्षा करते हैं। पर्यावरण के लिए चिंता और सतत विकास के लिए प्रतिबद्धता, लोगों पर विश्वास भी वैश्विक नागरिक के महत्त्वपूर्ण घटक हैं।

- **समावेश**—यह विचार कि सभी मनुष्यों को वर्ग, जाति, लिंग, राष्ट्रीयता, सांस्कृतिक, शिक्षा, धर्म, या किसी अन्य विभाजन की परवाह किए बिना प्यार और सम्मान के साथ व्यवहार किया जाना चाहिए।
- **मानवाधिकार**—ये मूल अधिकार और विशेषाधिकार हैं, जो सभी मनुष्यों के साथ पैदा होते हैं और किसी के द्वारा नहीं दिए जाते हैं और सरकार के साथ-साथ साथी मनुष्यों द्वारा भी उनका सम्मान किया जाना चाहिए। समस्त

मानवजाति को उनकी राष्ट्रीयता, निवासस्थान, लिंग, जातीय मूल, रंग, धर्म, भाषा, या किसी अन्य स्थिति के बावजूद ये अधिकार प्राप्त हैं। मानव अधिकार के मूल्यों को समझने के लिए संयुक्त राष्ट्र द्वारा दिए गए मानवाधिकारों की सार्वभौम घोषणा की प्रस्तावना पढ़ना जरूरी है, जो इस प्रकार है—

• चूँकि मानव परिवार के सभी सदस्यों के जन्मजात गौरव और सम्मान तथा अविच्छिन्न अधिकार की स्वीकृति ही विश्व-शांति, न्याय और स्वतंत्रता की बुनियाद है।

• चूँकि मानव अधिकारों के प्रति उपेक्षा और घृणा के फलस्वरूप ही ऐसे बर्बर कार्य हुए, जिनसे मनुष्य की आत्मा पर अत्याचार किया गया, चूँकि एक ऐसी विश्व-व्यवस्था की उस स्थापना को (जिस में लोगों को भाषण और धर्म की आजादी तथा भय और अभाव से मुक्ति मिलेगी) सर्वसाधारण के लिए सर्वोच्च आकांक्षा घोषित किया गया है।

• चूँकि अगर अन्याययुक्त शासन और जुल्म के विरुद्ध लोगों को विद्रोह करने के लिए—उसे ही अंतिम उपाय समझकर—मजबूर नहीं हो जाना है तो कानून द्वारा नियम बनाकर मानव अधिकारों की रक्षा करना अनिवार्य है।

• चूँकि राष्ट्रों के बीच मैत्रीपूर्ण संबंधों को बढ़ाना जरूरी है।

• चूँकि संयुक्त राष्ट्र के सदस्य देशों की जनता ने बुनियादी मानव अधिकारों में, मानव व्यक्तित्व के गौरव और योग्यता में और नर-नारियों के समान अधिकारों में अपने विश्वास को अधिकार-पत्र में दुहराया है और यह निश्चय किया है कि अधिक व्यापक स्वतंत्रता के अंतर्गत सामाजिक प्रगति एवं जीवन के स्तर को ऊँचा किया जाए।

• चूँकि सदस्य देशों ने यह प्रतिज्ञा की है कि वे संयुक्त राष्ट्र के सहयोग से मानव अधिकारों और बुनियादी आजादी के प्रति सार्वभौम सम्मान की वृद्धि करेंगे।

• चूँकि इस प्रतिज्ञा को पूरी तरह से निभाने के लिए इन अधिकारों और आजादी का स्वरूप ठीक-ठीक समझना सबसे अधिक जरूरी है, इसलिए अब सामान्य सभा घोषित करती है कि मानव अधिकारों की यह सार्वभौम घोषणा सभी देशों और सभी लोगों की समान सफलता है। इसका उद्देश्य यह है कि

प्रत्येक व्यक्ति और समाज का प्रत्येक भाग इस घोषणा को लगातार दृष्टि में रखते हुए अध्यापन और शिक्षा के द्वारा यह प्रयत्न करेगा कि इन अधिकारों और आजादी के प्रति सम्मान की भावना जाग्रत् हो और उत्तरोत्तर ऐसे राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय उपाय किए जाएँ, जिनसे सदस्य देशों की जनता तथा उनके द्वारा अधिकृत प्रदेशों की जनता इन अधिकारों की सार्वभौम और प्रभावोत्पादक स्वीकृति दे तथा उनका पालन कराए।

• **सतत विकास**—सतत विकास मूल्य मूलभूत मूल्यों का एक समूह है, जो किसी व्यक्ति के दृष्टिकोण और व्यवहार को इस तरह से संचालित करता है, जो वर्तमान और भावी पीढ़ी के लिए स्थिरता को सक्षम बनाता है। पहचाने गए सतत विकास के मूल्य शांति, स्वतंत्रता, विकास और पर्यावरण हैं। परमाणु हथियारों की होड़ से पूरी दुनिया को खतरा होने के बाद से शांति के मूल्य की पहचान की गई थी। मानव अधिकारों की सुरक्षा की दृष्टि से स्वतंत्रता को पहचान मिली। सतत विकास मूल्य देश की जरूरतों के अनुसार, इन मूल्यों को सतत विकास लक्ष्यों में समाहित करके सतत विकास का समर्थन करते हैं। आर्थिक विकास उपनिवेशवाद के बाद विश्व में सामंजस्य स्थापित करने के लिए किया गया था। प्रकृति और पर्यावरण के लिए एक वैश्विक मूल्य-जीवन को धरती पर मानव की महत्त्वाकांक्षाओं की बलि चढ़ने से बचाने के लिए किया गया।

• **पारिस्थितिक संतुलन**—सभी प्राणियों का अन्योन्याश्रित होना, जीवित और निर्जीव के लिए पारिस्थितिक संतुलन अनिवार्य है। मनुष्य और प्रकृति में पर्यावरण संरक्षण और संवर्धन हेतु प्रकृति का संतुलन बनाए रखना महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि मानवजाति अब खुद को उसके आसपास की प्राकृतिक दुनिया से अलग मान नहीं सकती है। सबकुछ आपस में जुड़ा हुआ है और जब एक चीज संतुलन से बाहर हो जाती है तो इससे संपूर्ण संतुलन कमजोर हो जाता है।

• **अहिंसा शिक्षा**—गैर-हिंसा एक समावेशी शिक्षण अभ्यास के भीतर एक दृष्टिकोण है। अहिंसा की शिक्षा स्कूल, माता-पिता और आसपास के समुदाय के एक संयुक्त साझा प्रयास का दायित्व है।

• **शांति**—विश्व को शांति के रूप में और आंतरिक शांति के रूप में

देखा जा सकता है। विश्व शांति मात्र युद्ध की अनुपस्थिति से अधिक मतभेदों के साथ सह-अस्तित्व का नाम हैं। लिंग, जाति, भाषा, धर्म या संस्कृति के साथ-न्याय और मानव अधिकारों के लिए सार्वभौमिक सम्मान को आगे बढ़ाते हुए अमन के साथ रहना ही शांति स्थापित करना है। आंतरिक शांति, मानसिक शांति के रूप में नहीं होती है और सभी स्थितियों में समभाव बनाए रखने की क्षमता रखती है, जब हम अपने भीतर शांति महसूस करेंगे तो हम स्वाभाविक रूप से दूसरों के प्रति शांति महसूस करेंगे।

संक्षेप में हम मूल्यों को निम्न रूप में वर्गीकृत कर सकते हैं—

- **शैक्षिक मूल्य—**

1. शिक्षा में नियमितता व निष्ठा
2. मूल्यांकन में वस्तुनिष्ठता एवं निष्पक्षता
3. स्वस्थ प्रतियोगिता की भावना
4. छात्रों की सृजनात्मकता का पोषण

- **नैतिक मूल्य—**

1. ईमानदारी
2. त्याग
3. निष्ठा
4. करुणा
5. दया
6. नम्रता

- **सामाजिक मूल्य—**

1. सामाजिक दायित्व
2. आदर्श नागरिकता
3. लोकतंत्र
4. मानवतावाद
5. सामाजिक संवेदनशीलता
6. राष्ट्रीय एकता

- **वैश्विक मूल्य—**

1. स्वतंत्रता
2. न्याय
3. अवसर की समानता
4. दासता/छूआछूत उन्मूलन

- **वैज्ञानिक दृष्टिकोण—**

1. वस्तुनिष्ठता
2. ज्ञान-पिपासा
3. रचनात्मक सोच
4. तथ्यपरकता
5. तार्किक विचार

- **पर्यावरण मूल्य—**

1. पर्यावरण संरक्षण
2. वृक्षारोपण
3. वन-संरक्षण
4. वन्य जीवों के प्रति दया

- **सांस्कृतिक मूल्य—**

1. सांस्कृतिक विरासत को अक्षुण्ण रखना

मूल्यों के वर्णन के पश्चात् अगला कदम है—इन मूल्यों को स्वयं आत्मसात् करना अथवा छात्रों के चरित्र में इनका समावेश करना। मूल्यों के हस्तांतरण में अनेक उदाहरणों से यह बात सिद्ध हो चुकी है कि छात्रों के मानसपटल पर कोरे शाब्दिक उपदेशों का प्रभाव चिरस्थायी नहीं हो सकता। विद्वानों द्वारा मूल्य ग्रहण करने अथवा छात्रों को सिखाने की सर्वश्रेष्ठ विधि है अनुकरण द्वारा सिखाना अथवा उद्धरण द्वारा सिखाना।

मूल्य सीखने के सभी तरीके संज्ञानात्मक, सकारात्मक और व्यवहार-संबंधी पहलुओं को प्रभावित करते हैं। मुझे लगता है कि मूल्यों को आत्मसात् करने का सबसे अच्छा तरीका महापुरुषों की जीवनी के माध्यम से सीखना है। मान्यता है कि महान् व्यक्तियों का जीवन ही एक शिक्षा होती है। उनके जीवन

कृत्यों से विभिन्न प्रकार के मूल्यों की सुगंध आती है। मूल्यों के प्रकार समझने के लिए कुछ महान् पुरुषों का जीवन के संक्षिप्त दर्शन करते हैं—

नेल्सन मंडेला

"शिक्षा सबसे शक्तिशाली हथियार है, जिसका उपयोग आप दुनिया को बदलने के लिए कर सकते हैं।" नेल्सन मंडेला का यह उद्धरण शिक्षा के मूल्य और मूल्यों की शिक्षा को समझने में सबसे प्रसिद्ध कहावत है। अपनी आत्मकथा 'लॉन्ग वॉक टू फ्रीडम' (Long Walk to Freedom) में मंडेला का वर्णन है कि कैसे शिक्षा और मूल्यों ने उनके जीवन में विभिन्न घटनाओं का समन्वय किया। एक ऐसा जीवन, जिसमें 25 साल की कैद की अँधेरी रात है, फिर अपने देश के पहले लोकतांत्रिक रूप से निर्वाचित राष्ट्रपति बनने की एक उज्ज्वल छटा और संयुक्त रूप से 'नोबेल शांति पुरस्कार' जीतने का इंद्रधनुषीय रंग है। संयुक्त राष्ट्र के सर्वोच्च मूल्यों शांति, क्षमा, करुणा और मानवीय गरिमा को अपने जीवन में उतारनेवाले नेल्सन मंडेला ने रंगभेद के खिलाफ एक लंबी लड़ाई लड़ी और दक्षिण अफ्रीका में मानवता, नेतृत्व, शिक्षा, उम्मीद की नई किरण का संचार किया। मंडेला के जीवन से अनेक मूल्यों की सीख मिलती है।

शिक्षा का मूल्य

अपने 95 वर्ष के जीवन काल में नेल्सन मंडेला ने 25 साल कारावास में बिताए। इस समय का उपयोग उन्होंने स्वयं को और साथी कैदियों को पढ़ाने में किया। वे लिखते हैं, "रात में हमारे सेल ब्लॉक एक जेल की तुलना में एक अध्ययन हॉल की तरह लग रहे थे। रॉबेन द्वीप को 'विश्वविद्यालय' के रूप में जाना जाता था, क्योंकि हमने एक-दूसरे से सीखा था।"

नागरिकता का मूल्य

उनकी विनम्रता ने राजनीति पर और उनके साथी नागरिकों के लोकतांत्रिक अधिकारों पर उनकी सोच का प्रभाव छोड़ा। शिक्षित नागरिक को परिभाषित करते हुए वे लिखते हैं—"एक संकीर्ण सोचवाले व्यक्ति को यह समझाना कठिन है कि 'शिक्षित' होने का मतलब साक्षर होना और बी.ए. होना नहीं है और यह

एक सत्य है कि निरक्षर भी आदमी उन्नत डिग्री वाले किसी व्यक्ति की तुलना में कहीं अधिक 'शिक्षित' मतदाता हो सकता है।"

स्वास्थ्य शिक्षा का मूल्य

व्यायाम का मूल्य समझते और समझाते हुए नेल्सन मंडेला लिखते हैं, "मैंने पाया है कि जब मैं अच्छी शारीरिक स्थिति में था तो मैंने बेहतर और लगातार काम किया और इसलिए प्रशिक्षण मेरे जीवन के अनन्य विषयों में से एक बन गया।"

आत्मनिर्भरता का मूल्य

आत्मनिर्भरता और आत्मसमर्थन के लिए उनका मानना था, "यह आपके हाथों में है कि जो लोग इसमें रहते हैं, उनके लिए एक बेहतर दुनिया का निर्माण करें।"

दृढ़ता और अधिकारों के लिए खड़े होने का मूल्य

25 वर्ष कारावास में बितानेवाले नेल्सन मंडेला ने उस सरकार के खिलाफ खड़े होने का साहस प्रदर्शित किया, जो काले दक्षिण अफ्रीकी लोगों के खिलाफ अपमानजनक मानवाधिकारों का हनन कर रही थी। अपने पूरे कारावास के दौरान उन्होंने रिहाई के कम-से-कम तीन सशर्त प्रस्तावों को अस्वीकार कर दिया था, क्योंकि वह अपने रुख में अटूट थे। जेल में रहते हुए भी उन्होंने कभी हार नहीं मानी। अपनी रिहाई पर भी उन्होंने क्षमा और कड़वाहट को अस्वीकार करने के मूल्यों का प्रदर्शन किया। वह समझ गए थे कि प्रतिशोध केवल उसके लक्ष्यों में बाधा उत्पन्न करेगा। जो क्रोध को सहन करते हैं, वे अंततः विजयी होते हैं।

मदर टेरेसा

'गटर की संत' के नाम से प्रख्यात मदर टेरेसा का जन्म 26 अगस्त, 1910 को मैसिडोनिया के स्कोप्जे शहर में हुआ था। उसका मूल नाम अज्जेजे गोंक्सहे बॉजक्सहीउ (Anjeze Gonxhe Bojaxhiu) था। उनके नाम का अर्थ है—'छोटा फूल या गुलाब की कली।' नाम के अनुरूप ही जीवनयापन कर उन्होंने मानवता के मूल्यों को नव दृष्टिकोण और स्वरूप प्रदान किया था।

मानवता के लिए सेवा का मूल्य

बारह साल की अल्प आयु में ही उनका रुझान धार्मिक कार्यों की दिशा में हुआ और उन्होंने स्वयं को एक धार्मिक जीवन जीने के लिए प्रतिबद्ध कर लिया। 18 साल की उम्र तक, एग्नेस ने अंग्रेजी सीखने के लिए आयरलैंड के रथफर्नम के लोरेटो एबे में सिस्टर्स ऑफ लोरेटो से जुड़ने के लिए घर छोड़ दिया, ताकि वहाँ स्कूली बच्चों को पढ़ाया जा सके। तब उसने टेरेसा नाम का चयन किया।

दीन-दु:खियों की मसीहा मदर टेरेसा एक शिक्षक के रूप में प्रशिक्षित थी। उन्होंने शिक्षक की भूमिका को बड़े प्यार और समर्पण के साथ निभाया और जीवन में अपनाया भी। जो उनके कोलकाता में लड़कियों के लिए सेंट मेरी बंगाली मीडियम स्कूल में पढ़ाने से स्पष्ट है। 1948 में 'मिशनरीज ऑफ चैरिटी' की स्थापना की दिशा में काम करने हेतु उन्होंने विद्यालय तो छोड़ दिया, परंतु कभी भी शिक्षक रूप नहीं त्यागा।

समावेशी शिक्षा का मूल्य

वह आश्वस्त थीं कि कलकत्ता (उनकी कर्मभूमि) में झुग्गियों के गरीब बच्चों को पढ़ना, लेखन और अंकगणित, जिसे अंग्रेजी में 3R (Reading, Writing and Arithmetic) कहते हैं, पढ़ने की आवश्यकता है, परंतु इससे भी अधिक उन्होंने महसूस किया कि शिक्षा समावेशी और मूल्य-आधारित होनी आवश्यक है। मदर टेरेसा सर्वशक्तिमान भगवान् यीशु को ही प्रमुख शिक्षक मानती थी। अपने आसपास के लोगों में उनके मूल्यों के संचार को ही अपना जीवन लक्ष्य बनाकर समाज-सेवा के काम किए। मदर टेरेसा कई मूल्यों की अवतार बन गईं, लेकिन उनमें सबसे उच्च यीशु के मूल्य करुणा, साहस और प्रतिबद्धता थे।

करुणा का मूल्य

अगर कभी कोई मदर टेरेसा की एक मुख्य योग्यता का वर्णन करने की कोशिश करे तो वह निस्संदेह एक दयालु व्यक्ति होने की एकल विशेषता है। दया या करुणा के मूल्य को उन्होंने अपना जीवन ही बना लिया था। हाशिए पर और कमजोर लोगों के लिए, विशेष रूप से सबसे गरीब लोगों के लिए उनका

प्यार असीम था। उन्होंने हमेशा मात्र योगदान का ही सोचा और योगदान ही दिया। लगता है कि योगदान की लागत उनके लिए कभी भी चिंता का विषय रही ही नहीं। यह दूसरों के प्रति दया करने की उनकी क्षमता थी, जिसने उन्हें 'मिशनरीज ऑफ चैरिटी' की स्थापना करने के लिए प्रेरित किया। सामान्य व्यक्ति जिन स्थानों से भागते दिखते हैं, वहाँ सभी को गले लगाकर सेवा करना उनके नाम का पर्याय ही था।

साहस का मूल्य

मन की बात सुन सेवा के भाव से अपनी मातृभूमि और अपने आराम के स्थान को छोड़ दूर भारत आकर इस प्रकार जीवनयापन करने के लिए साहस चाहिए और मदर टेरेसा ने कई बार इस मूल्य का प्रदर्शन किया। उन दिनों भारत में रहना आसान नहीं था, फिर भी उन्होंने कठिन जीवन का विकल्प चुना, जिसका अर्थ है कि कोलकाता की मलिन बस्तियों में सबसे गरीब लोगों के बीच 'अपना तंबू लगाना।' अपने सेवार्थ जीवन के दौरान उन्हें अनगिनित बाधाओं का सामना करना पड़ा, लेकिन उन्होंने सबका सामना साहस से कर अपने कार्यों में बाधा उत्पन्न नहीं होने दी।

प्रतिबद्धता का मूल्य

सेवा की जिस दिशा में मदर टेरेसा चल पड़ीं, उन्होंने फिर कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा था। 1948, जिसे वह (ईयर ऑफ कॉलिंग) या भगवान् के दिशा-निर्देश का साल कहती हैं, उन्होंने कोलकाता में गरीबों की मदद करने के लिए ठोस कार्य की शुरुआत की। जिस कार्य को उन्होंने 1997 में अपने अंत समय तक बढ़ाया और चलाया। अतिशयोक्ति नहीं होगी, अगर मैं कहूँ कि उन्होंने अपनी मृत्यु के बाद भी इस कार्य को (मिशनरीज ऑफ चैरिटी) के माध्यम से जीवित रखा। सन् 1948 में एक ओपन एयर स्कूल से शुरू हुआ, यह सफर उसके बाद एक जर्जर इमारत में रहनेवाले बेसहारा लोगों के लिए एक घर बना। उनकी प्रतिबद्धता ने कोलकाता की तत्कालीन सरकार को उनके कार्यों के लिए दान करने के लिए राजी कर लिया। 1950 और 1960 के दशक में उन्होंने एक कोढ़ी कॉलोनी, एक अनाथालय, एक नर्सिंग होम, एक परिवार क्लीनिक

और मोबाइल स्वास्थ्य क्लीनिकों के समूह की स्थापना की।

मैं अकेला ही चला था, जानिब-ए-मंजिल मगर
लोग साथ आते गए और कारवाँ बनता गया।

बस कुछ इसी प्रकार मदर टेरेसा का कार्य कोलकाता (भारत) से निकलकर, 1971 में अमेरिकी-दान के घर को खोलने के लिए न्यूयॉर्क शहर पहुँचा। 1982 की गरमी में वह गुप्त रूप से बेरूत, लेबनान गईं, जहाँ उन्होंने दोनों धर्मों (ईसाई और मुसलिम) बच्चों की सहायता के लिए ईसाई पूर्व बेरूत और मुसलिम पश्चिम बेरूत के बीच की खाई को पार किया। 1985 में मदर टेरेसा न्यूयॉर्क लौट आईं और संयुक्त राष्ट्र महासभा की 40वीं वर्षगाँठ पर भाषण दिया। वहाँ रहते हुए उन्होंने एचआईवी/एड्स से संक्रमित लोगों की देखभाल के लिए एक 'प्यार का उपहार' नाम से घर भी खोला।

महात्मा गांधी और मूल्यपरक शिक्षा

महात्मा गांधी ने एक ऐसे भारत का सपना देखा था, जिसमें हर व्यक्ति दुनिया को पुनर्गठन करने की दिशा में दूसरों के साथ काम करके अपनी प्रतिभा और क्षमता का अहसास करता है, जो राष्ट्रों के बीच, समाज के भीतर और मानवता और प्रकृति के बीच संघर्षों की विशेषता रखता है। महात्मा गांधी के विचारों का विश्लेषण दो मुख्य शीर्षकों—सदाचार (morality) और नैतिकता (ethics) के तहत किया जा सकता है।

सदाचार और नैतिकता का ज्ञान पहला बिंदु है, जिस पर महात्मा गांधी की मूल्य-शिक्षा की अवधारणा आधारित है। महात्मा गांधी के अनुसार किसी भी शिक्षा प्रणाली में सदाचार और नैतिकता के अभाव में वास्तविक अर्थों में मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य नहीं हो सकता। महात्मा गांधी ने आत्म-नियंत्रण और अच्छे चरित्र के निर्माण पर जोर दिया है। नैतिकता एक व्यक्ति को सही और गलत के बीच अंतर स्पष्ट करने में सहायक है। आध्यात्मिक विकास की प्राप्ति को महात्मा गांधी ने शिक्षा के एक अनिवार्य अंग के रूप में वर्णित किया है। उनके विचारानुसार आध्यात्मिक विकास सदाचार और नैतिकता के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है। इसे दूसरे दृष्टिकोण से देखने से भी यही

बात सिद्ध होती है, क्योंकि जब हम शिक्षा को मोक्ष प्राप्ति का साधन मानते हैं तो हम इसे अध्यात्मवाद से अलग नहीं कर सकते।

महात्मा गांधी ने ही छात्र को ज्ञान और आध्यात्मिकता से लाभान्वित होने की दृष्टि से छात्रों के लिए कुछ नियम निर्धारित किए, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि नैतिकता और धार्मिकता हमेशा से शिक्षा का एक अनिवार्य हिस्सा है। उन्होंने कहा कि एक तरफ, जहाँ छात्रों को उच्च नैतिकता, आत्म-नियंत्रण और सही सोच के सख्त नियम के तहत शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए; दूसरी ओर, उनसे समाज में सामान्य रूप से सेवा प्रदान करने की अपेक्षा की जानी चाहिए। इसमें माता-पिता, शिक्षकों और बड़ों के प्रति उनका सम्मान, बच्चों के लिए प्यार, सामाजिक परंपराओं का पालन करना और अपने कर्तव्यों और जिम्मेदारियों के प्रति निरंतर जागरूकता शामिल है। छात्रों में नैतिकता को मजबूत करने के लिए महात्मा गांधी ने धार्मिक शिक्षा की वकालत की। इस तरह की शिक्षा किसी के चरित्र में संयम, सहिष्णुता और श्रद्धा के मूल्यों को लाती है। धार्मिक शिक्षा के महत्त्व और आवश्यकता के बारे में बताते हुए गांधी 6 दिसंबर, 1923 के 'यंग इंडिया' में लिखते हैं—"धार्मिक निर्देशों के पाठ्यक्रम में स्वयं के अलावा अन्य धर्मों के सिद्धांतों का अध्ययन शामिल होना चाहिए। इस उद्देश्य के लिए छात्रों को खेती करने के लिए प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। श्रद्धा और व्यापक सहिष्णुता की भावना में दुनिया के विभिन्न महान् धर्मों के सिद्धांत को समझने और सराहना करने की आदत होनी चाहिए।"

महात्मा गांधी ने सभी शिक्षकों से स्कूल और कॉलेज स्तर पर छात्रों को नैतिकता और नैतिकता की उचित शिक्षा प्रदान करने का आह्वान किया। इस संबंध में शिक्षकों के लिए कुछ दिशा-निर्देशों का सुझाव देते हुए उनका कहना था कि शिक्षकों का कर्तव्य है कि वे अपने छात्रों में उच्च नैतिकता और मजबूत चरित्र का विकास करें। यदि शिक्षक ऐसा करने में विफल होते हैं तो इसका मतलब है कि वे अपनी सामाजिक और राष्ट्रीय जिम्मेदारियों से हटते हैं। उन्होंने कहा कि एक शिक्षक को समाज और छात्रों के सामने एक उदाहरण रखना चाहिए। यह केवल तब किया जा सकता है, जब वह खुद नैतिकता और मजबूत चरित्र के उच्च मानकों के साथ अपने जीवन का नेतृत्व करता है।

महात्मा गांधी के मूल्य शिक्षा का एक अन्य महत्त्वपूर्ण पहलू बुनियादी या तकनीकी शिक्षा है। बुनियादी शब्द, जिसे महात्मा गांधी ने बीसवीं सदी के तीसरे और चौथे दशक में इस्तेमाल किया था, का अर्थ था—ज्ञान या शिक्षा, जो ग्रामीण हस्तशिल्प को बढ़ावा देने या कुटीर उद्योगों को स्थापित करने में ग्रामीण लोगों की मदद कर सके। उनके प्रयास के पीछे अंतिम उद्देश्य आर्थिक क्षेत्र में युवा पुरुषों और महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाना था।

स्वामी विवेकानंद और मूल्यपरक शिक्षा

स्वामी विवेकानंद ने कहा था, "हमें शिक्षा और राष्ट्र-निर्माण के लिए मनुष्य की आवश्यकता है।" स्वामी विवेकानंद आध्यात्मिक शिक्षण की उसी प्राचीन पद्धति का वर्णन करते हैं, जहाँ गुरु और उनके शिष्य एक परिवार की तरह रहते थे।

धार्मिक और आध्यात्मिक तरीकों में शामिल हैं—

1. योग का अभ्यास करके मानसिक क्षमता को नियंत्रित करें।
2. अपने मन को एकाग्रता और गहरे ध्यान के साथ विकसित करें।
3. सम्मेलनों, चर्चाओं, आत्मानुभव और रचनात्मक गतिविधियों के माध्यम से ज्ञान प्राप्त करें।
4. शिक्षक की बुद्धिमत्ता और चरित्र का अनुकरण करें और उसका उदाहरण लें।
5. शिक्षा बालक में आत्मिक निष्ठा तथा श्रद्धा विकसित करें तथा उसमें आत्म-त्याग की भावना उत्पन्न करके पूर्णता की अभिव्यक्ति करें।
6. शिक्षा द्वारा मन, वचन तथा कर्म की शुद्धि तथा आत्म-नियंत्रण के मूल्य विकसित हों।

उपर्युक्त सभी उदाहरणों से स्पष्ट है कि मूल्य अनेक प्रकार के होते हैं। उनकी विभिन्नता का वर्णन दुष्कर है, परंतु महान् व्यक्तियों के जीवन का अनुकरण करके छात्र भी अपनी महानता का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं। इस संदर्भ में मुझे महाभारत का एक उद्धरण याद आ रहा है—'महाजनो येन गत: स पन्था:' (वन पर्व 3:13) अर्थात् जिस मार्ग पर महान् व्यक्ति चलें, जो जीवन-

शैली वह अपनाएँ, वही सही मार्ग है। यह सत्य मात्र भारत ही, वरन् संपूर्ण विश्व में स्वीकार्य है कि महापुरुषों के जीवन का अनुकरण कर हम स्वयं को भी महान् बनाने की दिशा में जाते हैं और अंतत: विश्व में अपने उच्च मूल्यों के कारण सदा के लिए अपनी अमिट छाप छोड़ सकते हैं। इंग्लैंड के प्रसिद्ध कवि हेनरी वाड्सवर्थ लौंगफेलो के शब्द सदैव मेरे कानों में गूँजते रहते हैं—

Lives of great men all remind us
We can make our lives sublime,
And, departing, leave behind us,
Foot prints on the sands of time.

□

5

मूल्य-आधारित शिक्षा में विद्यालय/शिक्षक की भूमिका

वाङ्‌ मे मनसि प्रतिष्ठिता। मनो मेवाचि प्रतिष्ठितम्‌। आविराविर्म एधि। श्रुतं में मा प्रहासीः। अनेनाधीतेनाहोरात्रान्‌ सन्दधामि। ऋतंवदिष्यामि। सत्यंवदिष्यामि। तन्मामवतु। तद्वक्तारमवतु अवतु माम अवतु वत्कारम्‌। तद्‌वक्तारमवतु, अवतु माम्‌, अवतु वक्तारम्‌। शान्तिः शंन्तिः शान्तिः।

—ऐतरेय उपनिषद्‌

मेरी वाणी मेरे मन में प्रतिष्ठित हो। मेरा मन मेरी वाणी में प्रतिष्ठित हो। आप परमेश्वर, जो सर्वत्र प्रकट है। यहाँ शिक्षा स्थल पर साक्षात्‌ प्रकट हों। मैं जो शिक्षा प्राप्त करूँ, वह नष्ट व्यर्थ न होने पाए। इस अध्ययन के द्वारा मैं अपने दिन-रात का पोषण करता हूँ। अपनी वाणी से धर्मानुकूल न्यायोचित वचन कहूँगा। मैं सत्य वचन बोलूँगा। वह धर्म, वह सत्य मेरी रक्षा करे। वक्ता की रक्षा करे। मेरी-श्रोता (शिष्य) की तथा वक्ता-शिक्षक की रक्षा करे। हे ओंकार स्वरूप परमात्मन्‌! तीनों लोकों—पृथ्वी, आकाश, पाताल—में शांति प्रसार करनेवाला हो।

उपर्युक्त श्लोक प्रभावी रूप में भारतीय शिक्षा पद्धति में मूल्य-आधारित शिक्षा की महत्ता तथा उपयोगिता का उल्लेख करता है। वैदिक संस्कृति, वैदिक शिक्षा सदा से ही मूल्यों तथा इनकी आवश्यकता पर जोर देती रही है। सहस्त्र

वर्षों के क्रमागत विकास के उपरांत मनुष्य इस स्वरूप को प्राप्त हुआ, जो बाकी जीव-जंतुओं से लगभग हर आयाम में श्रेष्ठ है, परंतु इस श्रेष्ठता के कंधों पर विशेष जिम्मेदारी भी स्वाभाविक है और शिक्षा ही एकमात्र उपचार प्रतीत होता है, उन तमाम जिम्मेदारियों का निर्वहन संपूर्ण सहजता से करने के हेतु।

इस विचार को केंद्र में रखते हुए इस अध्याय में हम मूल्यों एवं मूल्य-आधारित शिक्षा में विद्यालय एवं शिक्षकों के योगदान पर चिंतन करेंगे।

यह देखा गया है कि मूल्य शिक्षा स्कूल के भीतर छिपे हुए पाठ्यक्रम का हिस्सा है। पाठ्यक्रम और अध्यापन में इन्हें शामिल करने की सख्त आवश्यकता रही है, इसलिए माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952-53) ने छात्रों के चरित्र-निर्माण में निम्नलिखित मूल्यों पर विशेष जोर दिया—

- दक्षता
- अच्छा स्वभाव
- सहयोग
- अखंडता
- अनुशासन

स्कूल में मूल्य शिक्षा महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि यह हमारे आसपास की दुनिया के बारे में सिखाती है और हमें उन उपकरणों के साथ तैयार करती है, जो भविष्य की सफलता के लिए आवश्यक होंगे। कक्षा में छात्र मूल्यवान सबक भी सीखते हैं, जैसे कि सामाजिक कौशल, व्यवहार, कार्य नैतिकता और व्यक्तिगत उपलब्धि की भावना प्राप्त करना। सामान्यत: मूल्यपरक शिक्षा प्रदान करने के दो दृष्टिकोण होते हैं। मोटे तौर पर छात्रों में मूल्य सृजन के दो तरीके हैं—

1. एकीकृत दृष्टिकोण
2. पाठ्यक्रम दृष्टिकोण

एकीकृत दृष्टिकोण—उसे शिक्षण की अप्रत्यक्ष विधि के रूप में भी जाना जाता है। इसे कई पब्लिक स्कूलों ने अपनाया है। एकीकृत दृष्टिकोण के तहत मूल्यों को विभिन्न विषयों और गतिविधियों के माध्यम से एकीकृत कर सिखाया जाता है। ये कार्यक्रम स्कूल के विस्तृत या विशिष्ट वर्ष के स्तरों के लिए डिजाइन किए जा सकते हैं, उदाहरण के लिए—चरित्र शिक्षा से संबंधित

कार्यक्रम डराने-धमकाने, व्यवहार प्रबंधन, आलोचनात्मक सोच या नैतिकता। अनुसंधान इंगित करता है कि इनमें से कई कार्यक्रमों के परिणामस्वरूप शैक्षिक और व्यवहार में सुधार होता है (केवॉयन, पार्कर और तिकावाइ, 2005)। यदि मूल्य पाठ्यक्रम का एक अभिन्न आयाम हैं और मूल्य शिक्षा कार्यक्रम प्रभावी हैं तो उचित तंत्र की परिकल्पना की जानी चाहिए, जो पाठ्यक्रम में मूल्यों को प्रभावी रूप से समाहित कर सके।

- खेल छात्रों को साहस, पहल, तेजी से निर्णय, काररवाई, दृढ़ता, नेतृत्व, आत्म-नियंत्रण, विफलता और जीत की स्वीकृति मूल्यों को सिखाते हैं।
- कार्य अनुभव द्वारा हस्त-कौशल, सामग्री का उपयोग करना, अपव्यय से बचना, रचनात्मकता, प्रकृति के साथ सद्भाव, कला और संगीत की सराहना सीखा जा सकता है।
- सामाजिक अध्ययन के द्वारा महापुरुषों के जीवन में साहस, देशभक्ति, नागरिकता, नागरिक भावना, परिश्रम आदि सीखा जा सकता है।
- अवकाश अवधि का भी उपयोग किया जा सकता है, चर्चाओं को आयोजित करने में, मूल्यों पर किताबें पढ़ने और प्रख्यात विद्वानों द्वारा डिस्कशंस के माध्यम से पढ़ाया जाता है।
- सुबह की सभा में त्योहारों और अन्य अवसरों के आयोजन के अंतर्गत भी प्रेम, सामंजस्य, आपस में भाईचारा सीखा जाता है।

करिकुलर अप्रोच—इसे प्रत्यक्ष विधि या औपचारिक विधि के रूप में भी जाना जाता है। इसे शिक्षा में कई रूपों में अपनाया है। इस दृष्टिकोण में मूल्यों को पढ़ाने के लिए विभिन्न स्तरों के लिए पाठ्य-पुस्तकों की पहचान की जाती है। यह निर्दिष्ट अवधि और निर्दिष्ट पाठ्यक्रम के माध्यम से शिक्षकों द्वारा किया जाता है।

समस्त स्कूल बुनियादी सामाजिक कौशल के शिक्षण के लिए तेजी से अपनी हिस्सेदारी को समझ रहे हैं और अपना योगदान भी दे रहे हैं। छात्रों की समकालीन समाज और समाज के ताने-बाने में योगदान देनेवाले सामाजिक मूल्यों में जीवित रहने की आवश्यकता है। एकीकृत रूप से विद्वानों ने मूल्यों के समावेशन की जो कोशिश की है, वह अब पर्याप्त नहीं है। मूल्यों को स्पष्ट रूप से सिखाया जाना चाहिए, पृथक् कार्यक्रमों में नहीं। फिर एक स्कूल स्पष्ट

रूप से समावेश जैसे महत्त्वपूर्ण मूल्य को, एक बहु-सांस्कृतिक समाज में कैसे सिखा सकता है? प्रारंभ में इसके लिए स्कूल को समावेश की अपनी नीति का पता लगाने और इसके आरोपण के लिए ठोस रणनीति विकसित करने की आवश्यकता है। समावेश बहुरूपी साधनों और विषयों के समावेश से विकसित होता है। इसके लिए विद्यालय को अनेक सवालों के उत्तर खोजने होंगे। जैसे कि 'स्कूल किस रूप से समावेशी है?' विद्यालय अपनी 'सांस्कृतिक, भौतिक और सामाजिक वातावरण द्वारा समावेशी होने की प्रतिबद्धता को कैसे प्रदर्शित करता है?' 'क्या ऐसे प्रतिनिधित्व हैं, जो स्कूल की बहु-सांस्कृतिक विविधता का सम्मान करते हैं?' 'समावेश को पाठ्यक्रम में कैसे पढ़ाया जाता है?' 'क्या स्कूल संरचनाएँ समावेशी हैं?'

मूल्यों एवं शिक्षा तथा मूल्य-आधारित शिक्षा पर गहन चिंतन के उपरांत हम इस उल्लेखित विषय में विद्यालयों की भूमिका को निम्न प्रकार से वर्गीकृत कर सकते हैं। वैसे तो विद्यालय किसी भी राष्ट्र की 'वह पूँजी होते हैं, जिसकी आवश्यकता तथा योगदान का आकलन तात्कालिक रूप से करना संभव नहीं है।' विभिन्न शोधों में यह पाया गया कि एक पीढ़ी को शिक्षित करने में लगभग बीस वर्षों का समय लगता है, हम इस तथ्य का आकलन प्रारंभिक शिक्षा से उच्च शिक्षा तक आने में अपने समय को उदाहरणत: रखकर कर सकते हैं। पर यह भी सर्वविदित है कि प्राय: व्यक्ति के चरित्र, मूल्यों, नैतिकता आदि का विकास प्रारंभिक शिक्षा काल में ही होता है। बाल्यावस्था में छात्र एक मिट्टी के ढेले के समान होता है, उसे आप जिस रूप में ढालेंगे, वह वैसा ही आकार लेगा, इसी कारणों से विद्यालयों तथा शिक्षकों की भूमिका बहुत बढ़ जाती है।

भारतीय संस्कृति में शिक्षा अथवा ज्ञान का स्थान बहुत ऊँचा है, इसी कारण भारतीय पद्धति के विद्यालयों में कक्षा की शुरुआत में, शिक्षक और छात्र इस मंत्र का जाप कर सच्चिदानंद स्वरूप से शांति, बाधाओं से मुक्त अध्ययन और अनुकूल रिश्ते के लिए आशीर्वाद भी माँगते हैं।

ॐ सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवाव है।
तेजस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहे।
ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति:

अर्थात् मैं प्रार्थना करता हूँ कि हे भगवान्! हमारी (मेरी और मेरे छात्र की) रक्षा एक साथ करें; हमें एक साथ पोषित करें, हम अधिक ऊर्जा से काम कर सकें, हमारा अध्ययन जोरदार और प्रभावी हो, हम परस्पर विवाद न करें। मैं शांति से जीवनयापन करूँ, मेरा वातावरण शांतिमय हो, मैं शांति का प्रसार करूँ।

परंपरागत रूप से भारत में संयुक्त परिवार की संस्कृति थी, जहाँ मूल्यों, विशेष रूप से स्वास्थ्य मूल्य, पारिवारिक मूल्यों और सामाजिक मूल्यों को अंगीकृत किया गया और वही मूल्य जीवन का हिस्सा होते थे, लेकिन शहरीकरण के आगमन के कारण परिवार एकल परिवार में बदल रहे हैं, जहाँ माता-पिता दोनों काम कर रहे हैं और शिक्षण मूल्यों की जिम्मेदारी शिक्षकों के कंधे और स्कूलों के पाठ्यक्रम पर आती है। शिक्षा से ही माता-पिता और समाज सभी की अपेक्षाएँ होती हैं, ताकि छात्र का सर्वांगीण विकास हो पाए और आगे के जीवन के लिए वह सक्षम बन सके, अत: मूल्य शिक्षा स्कूल और शिक्षा की जिम्मेदारी बन गई है। शिक्षा की दृष्टि से जो प्राथमिकता वाले क्षेत्र में आते हैं, वे निम्नलिखित हैं—

1. शांति के लिए शिक्षा
    - सांप्रदायिक सौहार्द
    - सहनशीलता
    - राष्ट्रीय एकीकरण
2. जीवन का सम्मान
    - जीवन की मौलिक पवित्रता
    - जानमाल का नुकसान रोकना
3. न्याय
    - न्याय के कारण में प्रत्यक्ष भागीदारी
    - सामाजिक परिवर्तन के एजेंट बनना
4. महिलाओं के मुद्दे
    - महिलाओं के प्रति दृष्टिकोण में बदलाव
    - समाज में उनका सही स्थान सुनिश्चित करना

5. नौकरी–उन्मुख शिक्षा
   - स्वरोजगार के लिए शिक्षा
   - स्वरोजगार जो दूसरों के लिए रोजगार पैदा करेगा, उसके लिए शिक्षा
6. ईश्वर में विश्वास
   - मानवता की भावना को मजबूत करना
   - भौतिकवाद और उपभोक्तावाद का प्रतिकार
7. स्वाभिमान
   - दिए गए कार्य का सम्मान
   - हमारे व्यक्ति और परिवेश की स्वच्छता
   - अच्छी तरह से किए गए काम पर गर्व करना
8. पहल और रचनात्मकता
   - काम से बचना नहीं
   - रचनात्मक व नवीन सोच
9. लोकतंत्र
   - कानून की नजर में व्यक्तियों की समानता
   - अधिकारों को प्राप्त करने के लिए भागीदारी और प्रत्यक्ष काररवाई
   - सरकार को जवाबदेह ठहराना
10. पारिस्थितिकी
    - भूमि, पानी, पेड़ों के लिए जिम्मेदारी
    - औद्योगिक प्रदूषण के खतरे
    - व्यवसाय की नैतिकता
11. सफलता का अर्थ
    - क्या यह केवल उच्च अंक प्राप्त करना है ?
    - क्या यह अच्छा काम कर रहा है, पैसा कमा रहा है, हर कीमत पर आगे बढ़ रहा है ?
12. खुलापन
    - अन्य 'समूहों' के लोगों को अपने जैसे व्यक्तियों के रूप में देखना

13. सभी धर्मों का महान् सत्य
    - विभिन्न धर्मों की शिक्षाओं और महान् उपलब्धियों के संपर्क में होना
    - पूर्वग्रह को कम करना और सम्मान को बढ़ावा देना
    - प्यार और सेवा
14. विज्ञान और धर्म के बीच संवाद

मूल्यों के अध्ययन को प्रभावित करनेवाले कारक

मूल्य प्रणाली पर बहुत सी चीजें प्रभाव डालती हैं। हम जीवन के अनंत अनुभवों में अनगिनत प्रतिक्रिया देते हैं, जो अंतत: दुनिया को देखने के तरीके को प्रभावित करती हैं और हमारे मूल्य का कारक बनती हैं। सामान्यत: हमारे मूल्यों को प्रभावित करनेवाले कारक निम्निलिखित हैं—

- **संस्कृति**—रीति-रिवाज, प्रथाएँ और सामाजिक व्यवहार, जो हम बचपन से उजागर कर रहे हैं, हमारे व्यक्तित्व का अभिन्न अंग बन जाते हैं और हमारे मूल्यों को स्वरूप देते हैं। परिवार और समाज हमारी संस्कृति का एक अभिन्न अंग हैं और मूल्य प्रणाली को सीखने और सिखाने में महत्त्वपूर्ण योगदान देते हैं। देखा गया हैं कि अल्पसंख्यक समूह अपनी पहचान, संस्कृति और भाषा को बनाए रखने के लिए अतिरिक्त प्रयास करते हैं।
- **भाषा**—आम भाषा और संस्कृति अकसर लोगों को एकजुट करती है और उनकी सोच, कृत्य एवं व्यवहार को विनियमित करती है।
- **धर्म**—धर्म सामूहिक रूप से आयोजित मान्यताओं और प्रथाओं का एक औपचारिक समूह है, जो दुनिया में हमारे अस्तित्व और भूमिका को बनाए रखने की कोशिश करता है, इसलिए उक्त समूह हमारे सामान्य मूल्यों को प्रभावित करता है।
- **पर्यावरण और भूमि से संबंध**—स्थान की पारिस्थितिकी, भूमि के साथ मूल्यों और संबंधों का महत्त्वपूर्ण निर्धारक है। उदाहरण के लिए, यदि आजीविका आपके आसपास के संसाधनों पर निर्भर है तो यह सीधे

मिट्टी और जमीन/स्थान के साथ आपके संबंधों को मजबूत करेगा।

- **लिंग**—लिंग भूमिकाओं की अवधारणा और भूमि का नियम (कानूनी और साथ ही पारंपरिक) मूल्यों को प्रभावित करता है।
- **मीडिया**—आज की दुनिया में सूचना, ज्ञान और संस्कृति एक स्थान से दूसरे स्थान तक तेजी से आगे बढ़ती है और यह सम्मेलित संस्कृति को जन्म देती है। मीडिया कुछ प्रथाओं की पुष्टि कर उनकी तरफ पसंद या झुकाव को पुष्ट करता है और इसलिए दुनिया की नव मूल्य प्रणाली को तैयार करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

होगन (1973) का मानना है कि नैतिक व्यवहार पाँच कारकों से निर्धारित होता है—

1. **समाजीकरण**—बच्चे के रूप में समाज और माता-पिता के अच्छे आचरण तथा नियम के प्रति जागरूक होना।
2. **नैतिक निर्णय**—हमारी अपनी नैतिकता के बारे में यथोचित रूप से सोचना और स्वेच्छा से अपने नैतिक मानकों पर निर्णय लेना।
3. **नैतिक भावनाएँ**—जिस कार्य को हम महत्त्वपूर्ण मानते हैं, उसे करने में असफल हो जाने पर शर्म और ग्लानि महसूस होना।
4. **सहानुभूति**—अन्य लोगों की स्थिति, भावनाओं और जरूरतों के बारे में जागरूकता, ताकि कोई व्यक्ति उन लोगों की मदद करने में सक्षम हो।
5. **आत्मविश्वास और ज्ञान**—दूसरों की मदद करने में शामिल उपायों को जानना और यह विश्वास करना कि हम मदद करने के लिए जिम्मेदार और सक्षम हैं।

मूल्यपरक शिक्षा के शिक्षण दृष्टिकोण

अधिकतर इस विषय का नाम नैतिक शिक्षा (Moral Education) के नाम से जाना जाता है। इस दृष्टिकोण में, मूल्यों को पढ़ाने के लिए विभिन्न स्तरों की कक्षाओं के लिए पाठ्य-पुस्तकों की पहचान की जाती है। यह शिक्षकों द्वारा निर्दिष्ट अवधि और निर्दिष्ट पाठ्यक्रम के माध्यम से किया जाता है। इस उद्देश्य

हेतु हर सप्ताह यह पाठ्यक्रम समर्पित अवधि (Period) में किताबों के माध्यम से पढ़ाया जाता है।

सुपरका, अहरेंस और हेडस्ट्रोम (Superka, Ahrens & Hedstrom) ने 1976 में शिक्षा के मूल्यों के लिए पाँच बुनियादी दृष्टिकोण बताए हैं—

- झुकाव (Inculcation)
- नैतिक विकास (Moral Development)
- विश्लेषण (Analysis)
- मूल्य स्पष्टीकरण (Values Clarification)
- काररवाई सीखना (Action Learning)

झुकाव (Inculcation)

उद्देश्य : छात्रों में कुछ मूल्यों को स्थापित करना।

छात्रों के मूल्यों को बदलने के लिए यह तीनों विद्वान् निश्चित मूल्यों को प्रतिबिंबित करते हैं। इस हेतु शिक्षण की प्रक्रिया में मॉडलिंग, सकारात्मक और नकारात्मक दृष्टिकोण में विकल्पों का हेर-फेर, खेल और सिमुलेशन, भूमिका निभाते हैं।

नैतिक विकास (Moral Development)

उद्देश्य : छात्रों को उनके मूल्य विकल्पों और पदों के कारणों पर चर्चा करने के लिए छात्रों से आग्रह करने के लिए अधिक जटिल नैतिक तर्क पैटर्न विकसित करने का प्रयास।

शिक्षण की प्रक्रिया : मॉडलिंग : छोटे समूह चर्चा के साथ नैतिक दुविधा पर चर्चा।

विश्लेषण (Analysis)

उद्देश्य : छात्रों को तार्किक सोच और वैज्ञानिक जाँच का उपयोग करने में मदद करने की लिए छात्रों को तर्कसंगत, विश्लेषणात्मक प्रक्रियाओं का उपयोग करने में मदद करना।

शिक्षण की प्रक्रिया : संरचित परिमेय चर्चा, जो कारणों के साथ-साथ

साक्ष्य, परीक्षण सिद्धांतों, अनुरूप मामलों का विश्लेषण, अनुसंधान और बहस की माँग करती है।

मूल्य स्पष्टीकरण (Values Clarification)

उद्देश्य : छात्रों को अपने स्वयं के मूल्यों और दूसरों के बारे में जानने और पहचानने में मदद करना। छात्रों को उनके मूल्यों के बारे में दूसरों के साथ खुलकर और ईमानदारी से संवाद करने में मदद करने के लिए।

छात्रों को अपनी व्यक्तिगत भावनाओं, मूल्यों और व्यवहार पैटर्न की जाँच करने के लिए तर्कसंगत सोच और भावनात्मक जागरूकता दोनों का उपयोग करने में मदद करने के लिए।

शिक्षण की प्रक्रिया : भूमिका निभानेवाले खेल, सिमुलेशन, वंचित या वास्तविक मूल्य की स्थितियों, गहराई से आत्म-विश्लेषण, अभ्यास, संवेदनशील गतिविधियाँ, कक्षा से बाहर की गतिविधियाँ, छोटे समूह से चर्चा इत्यादि।

कारर्वाई सीखना (Action Learning)

उद्देश्य : छात्रों को उनके मूल्यों के आधार पर व्यक्तिगत और सामाजिक कारर्वाई के अवसर प्रदान करने के लिए छात्रों को खुद को व्यक्तिगत-सामाजिक स्तर पर परस्पर निर्भर प्राणियों के रूप में देखने के लिए प्रोत्साहित करना, पूरी तरह से स्वायत्त नहीं, बल्कि एक समुदाय या सामाजिक प्रणाली के सदस्य के रूप में देखना।

शिक्षण की प्रक्रिया : विश्लेषण और मूल्यों के लिए सूचीबद्ध तरीके, स्कूल और सामुदायिक अभ्यास के भीतर परियोजनाएँ, समूह के आयोजन और पारस्परिक संबंधों में कौशल अभ्यास के द्वारा।

विद्यालयों में मूल्य प्रधान पर्यावरण

विद्यालयों में प्रवेश लेने से पहले बच्चे अपने परिवार और समुदाय के सदस्यों के बीच रहते हैं। परिवार और समुदाय के सामाजिक एवं सांस्कृतिक पर्यावरण से वे अनेक विश्वासों, आदर्शों, सिद्धांतों और व्यवहार मानदंडों को ग्रहण करते हैं। विद्यालयों का कार्य इस प्रकार ग्रहण किए गए विश्वासों, आदर्शों

व सिद्धांतों को प्रतिमानों में काट-छाँटकर उन्हें सही दिशा प्रदान करना होता है। इसके लिए सर्वप्रथम आवश्यकता है कि विद्यालयों का सामाजिक, सांस्कृतिक, पर्यावरण मूल्य प्रधान हो। यहाँ सभी छात्राओं के साथ समान व्यवहार किया जाए, समान अधिकार दिए जाएँ और उनके साथ उचित न्याय किया जाए। विद्यालयों की उच्च परिपाटी बच्चों में उच्च आदर्शों तथा मूल्यों के विकास में विशेष सहायक होती है।

शिक्षा में मूल्यों की आवश्यकता, समावेश व उद्देश्य

एक सर्वविदित कथन है कि आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है। निस्संदेह वह कथन वर्तमान समाज में गिरते मूल्यों, नैतिक आधारों तथा चरित्रहीनता के दौर में शिक्षा की आवश्यकता तथा उपयोगिता पर प्रकाश डालता है।

आज सामाजिक, पारिवारिक एवं नैतिक-मूल्यों के पतन के कारण हमें आए दिन अनेक प्रकार की समस्याओं से दो-चार होना पड़ता है। मूल्यों में पतन के विभिन्न कारण है, जैसे औद्योगीकरण, तर्क का आधिक्य, असुरक्षा की भावना तथा आधुनिक दर्शन, औद्योगीकरण से मनुष्य भौतिकवादी होता जा रहा है। उसके लिए संपत्ति, धन एकत्र करना प्राथमिकता बन गया है और वह हमेशा ही इसके अर्जन में लगा रहता है। वहीं दूसरी तरफ भौतिकवादिता, पूँजीवादिता की इस मदांध दौड़ में पड़कर मनुष्य एक-दूसरे के प्रति असुरक्षित महसूस करने लगा है। अंततः तर्क ज्ञान भी चरमोत्कर्ष पर है, जो कभी-कभी नकारात्मक दिशा भी ले लेता है। इन सभी अवगुणों, नकारात्मक भावों, विचारों से बच निकलने का सामर्थ्य हमें शिक्षा ही प्रदान कर सकती है, उचित एवं आवश्यक मूल्यों का समायोजन कर, जो निम्नलिखित प्रकार से संभव है—

(i) प्रेरक प्रसंग तथा रोचक कहानियों के माध्यम से।
(ii) महापुरुषों की जीवनी।
(iii) समाज के प्रति उत्तरदायित्व समझाकर।
(iv) स्वयं की संस्कृति, धरोहर से अवगत कराकर।
(v) मानव जीवन के मूल भाव व उद्देश्य से परिचय कराकर।

(vi) शिक्षा को उत्तम श्रेणी, प्राप्तांक तथा मात्र आजीविका के साधन होने के भाव से पृथक् कर।

संपूर्ण विश्व के हितों को साधते हुए एक बेहतर, संवेदनशील, गुणवान मानव समाज की संकल्पना ही एकमात्र दृढ़ उद्देश्य प्रतीत होता है और ऐसी आवश्यक, समावेशी, लक्ष्य साधक शिक्षा का आरंभ 'विद्यालय' से ही होता है।

'रामराज्य' एक आदर्श अवधारणा है। राम का शासन राजा का आदर्श माना जाता है, जिन्होंने बिना किसी भेदभाव के सभी नागरिकों का सम्मान किया। उन 'राम' के आदर्श, मूल्य भी गुरुकुल में 'महर्षि वसिष्ठ' ने सृजित किए थे। अगर उस समय की ओर अपना ध्यान केंद्रित करें, जब भारत विश्वगुरु था तथा यहाँ नालंदा, तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालय विश्वविख्यात थे, तब भी वहाँ कौटिल्य चाणक्य सरीखे गुरुवर आदर्श, चरित्रवान तथा निर्भीक छात्रों का ज्ञानवर्धन कर रहे थे। जिन्होंने आगे चलकर अपने ज्ञान का पूरे विश्व में डंका बजाया। चरक, सुश्रुत, पाणिनि यह केवल एकसूत्र विद्वत्ता के प्रमाण नहीं हैं, बल्कि ये महापुरुष उस भारतीय संस्कृति, शिक्षा पद्धति के द्योतक तथा साक्षी हैं, जो सदैव से ही विद्या, ज्ञान को भौतिक, सांसारिक मूल्यों से ऊपर उठाकर तथा एक बड़े लक्ष्य, मानवता के उत्थान से जोड़ती आई है। तथापि ये सभी महापुरुष, उनका जीवन हमें ऐसी मूल्यपरक शिक्षा की ओर पुन: आकर्षित करता है और कहीं-न-कहीं यह हमारे दिमाग को आदर्श भारतीय, जीवंत मूल्यों से अवगत कराता है, साथ ही विद्यालयों का उत्तरदायित्व अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्वरूप लेता है।

मूल्यपरक शिक्षा में विद्यालय की भूमिका

शिक्षण संस्थान दो स्तरों पर मूल्य विकास में योगदान देते हैं—'आधारभूत शिक्षा के स्तर पर व उच्च शिक्षा के स्तर पर'। आधारभूत मूल्यों का प्रभाव ज्यादा होता है, जबकि उच्च शिक्षण संस्थान प्रायोगिक मूल्यों का विकास करने में सहायक होते हैं। व्यक्तित्व परिवर्तन की संभावना उच्च स्तर पर ज्यादा होती है। विभिन्न विचारधाराओं के संपर्क में आने का क्रम भी उच्च शिक्षण संस्थानों से ही प्रारंभ होता है। पर आधारभूत शिक्षा की महत्ता भी अति स्पष्ट है, यहाँ विभिन्न पाठ्यक्रमों द्वारा स्वतंत्रता, समानता, अहिंसा, नैतिक शिक्षा का पाठन

छात्रों के जीवन पर विशेष प्रभाव डालता है। इस प्रकार हम विद्यालय के योगदान व भूमिका को दो भागों में विभाजित कर सकते हैं—

(1) प्राथमिक शिक्षा, (2) उच्च शिक्षा।

(1) प्राथमिक शिक्षा या आधारभूत शिक्षा

जैसा कि कई शिक्षाविद् विचार व्यक्त कर चुके हैं कि बच्चों के चारित्रिक विकास से लेकर मौलिक, नैतिक या किसी भी प्रकार के विकास की आधारशिला उसके बचपन में ही रखी जाती है, जब वह शिक्षा के प्रारंभिक पड़ाव में होता है। जब उसे वर्णमाला से लेकर बैठना तथा बोलना सिखाया जाता है, तब वह स्वत: ही निश्चित मूल्यों का बोध करता है।

(अ) विद्यालयी विषयों के शिक्षण के साथ मूल्य शिक्षा

यों तो विद्यालयों में जितने भी विषय पढ़ाए जाते हैं, उन सभी के शिक्षण के साथ छात्रों में उचित मूल्यों का विकास किया जा सकता है, परंतु इनमें भाषा और इतिहास दो विषय ऐसे हैं, जिनके माध्यम से बच्चों में मूल्यों का विकास आसानी से किया जा सकता है।

भाषा शिक्षण संबंधी पाठ्य-पुस्तकों में प्राय: नीति संबंधी लेख व कविताएँ संकलित होती हैं, महापुरुषों की जीवनी संकलित होती है, वीरता और शौर्य के प्रसंग संकलित होते हैं। वास्तव में इनमें समाज के समस्त विश्वासों, आदर्शों और सिद्धांतों का समावेश होता है। इस संबंध में सबसे बड़ी बात यह है कि इनका सीधा प्रभाव बच्चे के हृदय पर पड़ता है और शिक्षकों का प्रयत्न व्यर्थ नहीं जाता है। स्वयं से ही अनुभव किए जानेवाली बात है कि जब बच्चे सत्य-असत्य, अच्छे-बुरे और न्याय-अन्याय में स्वयं भेद करेंगे, तभी उनमें मूल्यों के प्रति जागरूकता आएगी।

वहीं अगर इतिहास शिक्षण की बात करें तो इतिहास केवल राजा-महाराजाओं के उत्थान-पतन की कहानी मात्र नहीं होता, उसमें जाति, समाज अथवा राष्ट्र विशेष की सभ्यता एवं संस्कृति का दर्शन होता है, मूल्यों का दिग्दर्शन होता है। हम अगर अपने ही इतिहास को देखें—माता-पिता की आज्ञा पालन के लिए राम ने राज्य सिंहासन के स्थान पर चौदह वर्ष का वनवास स्वीकार किया था। महाभारत में प्रात: से संध्या तक युद्ध चलता था और रात्रि में लोग एक-दूसरे

की कुशल-क्षेम पूछते थे। राजा पौरुष के दरबार में सिकंदर दूत के वेश में प्रस्तुत हुआ, उसे पहचानने के बाद भी न उसे बंदी बनाया गया और न ही मारा गया। अकबर के दरबार में भाट ने राणा प्रताप द्वारा दी गई पगड़ी को उतारकर सिर झुकाया। शिवाजी ने मरते दम तक हिंदुत्व की रक्षा की। महारानी लक्ष्मीबाई ने मरते दम तक शत्रुओं से लोहा लिया। गांधी, गोखले तिलक, जवाहर, पंत आदि लाखों देशभक्तों ने स्वतंत्रता के लिए जेल की यातना सही।

(ब) साहित्यिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन

साहित्यिक कार्यक्रमों में भाषण, वाद-विवाद, कवि दरबार और कवि-सम्मेलन आदि कार्यक्रम आते हैं और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में संगीत, गायन व वादन, लोकगीत, लोकनृत्य और नाटक आदि कार्यक्रम आते हैं। ऐसे कार्यक्रमों में हमारी सभ्यता एवं संस्कृति परिलक्षित होती है। ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन का उत्तरदायित्व बच्चों पर छोड़ने से उनमें आपस में प्रेम, सहयोग व श्रम की भावना, मूल्यों का प्रवाह होता है तथा उसके द्वारा मनोरंजन के साथ-साथ आचरण व मूल्यों का विकास भी होता है।

इन्हीं कार्यक्रमों के आयोजन में अगर महापुरुषों के जन्मोत्सव तथा जयंतियों को ध्यान में रखें तो उनसे भी एक सौहार्दपूर्ण जीवन जीने की प्रेरणा मिलती है। चाहे वह महात्मा गांधी की जयंती हो या भगतसिंह की पुण्यतिथि। ऐसे अवसर हमें हमारे सामाजिक, राष्ट्रीय तथा मानवीय मूल्यों की महत्ता दरशाते हैं। इसी तरह राष्ट्रीय पर्वों के मौके पर छात्रों को राष्ट्रीय मूल्यों के प्रति जागरूक तथा सचेत करके भी राष्ट्रहित सर्वोपरि का संदेश दिया जाना चाहिए; हालाँकि इन मूल्यों की विशेष भूमिका उच्च शिक्षा में दिखाई पड़ती है। चाहे 15 अगस्त हो या 26 जनवरी, ये हमारे पूर्वजों के श्रम, दृढ़ निश्चय तथा दूरगामी परख का प्रतिमान हैं और इनके आयोजन से हमें एक नागरिक के तौर पर अतुलनीय गौरव तथा असीम आनंद की अनुभूति होती है, जो कि एक विद्यालय के पर्यावरण का महत्त्वपूर्ण हिस्सा है।

(स) छात्रों के सर्वांगीण विकास की आधारशिला रखना

शिक्षा का आशय केवल कुछ पुस्तकों का गहन अध्ययन नहीं होता है, न ही इसका उद्देश्य केवल अच्छी जीविका अर्जित करने सीमित है, बल्कि मानव

स्वरूप में प्रदान क्षमताओं को उनके सर्वश्रेष्ठ मानक तक हासिल कर समाज, देश व विश्व की सेवा के काम आ सकना ही मूलभूत उद्देश्य है।

युवाओं में नैतिक गुणों का विकास भी अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि नैतिकता के बिना किसी भी आदर्श समाज की रचना एक स्वाँग मात्र ही प्रतीत होता है। आज हमारी युवा पीढ़ी में नम्रता, सच्चाई, ईमानदारी, बड़ों का आदर, शिष्टाचार, सेवा की भावना, सहिष्णुता, बलिदान आदि गुणों का अभाव है। विद्यालय का परिवेश, रीति-रिवाज एवं प्रदान की गई मूल्य-आधारित शिक्षा इन गुणों के विकास में सहायता करती है तथा जीवन को श्रेष्ठ बनाने में मदद करती है।

सकारात्मक सामाजिक प्रवृत्तियों का विकास भी व्यक्ति के मूल्यों का, उसकी आशावादिता का एक अहम प्रतिपादक है। समाज में प्रतिदिन अनेक घटनाएँ घटित होती हैं, अगर व्यक्ति प्रत्येक क्षण हताशा में रहेगा तो जीवन बड़ा ही दुष्कर हो जाएगा। इसके साथ ही, मूल्य-आधारित शिक्षा द्वारा युवा पीढ़ी को समाज में व्याप्त बुराइयों से अवगत कराया जा सकता है। ये दहेज प्रथा, भ्रष्टाचार, आतंक, गुंडागर्दी एवं लालफीताशाही इत्यादि के विरुद्ध अपनी आवाज उठा सकते हैं।

विद्यालयों में प्रचलित पाठ्यक्रम तकनीकी आँकड़ों से भरा होता है, जिसमें तथ्य, आँकड़े, नियम, कानून आदि दिए होते हैं। युवाओं के लिए जीवन की सूक्ष्म बातों में भाग लेने की गुजाइंश नहीं होती। पर इन तमाम संघर्षों के बीच जीवन के बाकी पहलुओं पर ध्यान देना भी आवश्यक है, जिसमें विद्यालय व शिक्षकों की भूमिका अतुलनीय है।

(द) विद्यालयों में लोकतांत्रिक, मानवीय व आदर्श वातावरण की स्थापना

प्राय: विद्यालय का मूल भाव ही लोकतांत्रिक, मानवीय एवं आदर्श मूल्यों का सृजन तथा अनुपालन होता है। यहाँ शिक्षकगण गुणों, ज्ञान तथा समझ में श्रेष्ठ होते हुए भी अपरिपक्व छात्रों की बातों को सुनते हैं, उनकी समस्याओं का निस्तारण करते हैं, उनको वाद-विवाद, विभिन्न आयोजनों में अपने विचार रखने का अवसर प्राप्त होता है, इससे बेहतर लोकतांत्रिक मूल्यों की छटा कहाँ देखने मिलेगी!

विद्यालय में शिक्षित छात्र ही दूसरों के विचारों को समझना, परखना व

सम्मान करना, समाज में हो रहे घटनाक्रमों के संदर्भ में व्यापक दृष्टिकोण रखना आदि कर सकते हैं। किसी एक ही पहलू को प्रमाणित स्रोत समझकर न बैठे रहना और उससे भी बढ़कर सामाजिक न्याय में विश्वास रखना, समानता, भाईचारा एवं देश-प्रेम को सर्वोपरि रखते हुए एक जिम्मेदार नागरिक होने का दृढ़ निश्चय करना भी उन सभी आदर्श मूल्य का उदाहरण सदृश है।

इसके साथ ही मूल्य-आधारित शिक्षा भौतिकवादी प्रवृत्तियों का विरोध तथा मानवीय गुणों का प्रतिपादन करती है। यह एक छात्र को सांसारिक वस्तुओं के वास्तविक अस्तित्व का बोध करती है और जीवन में मानवीय मूल्यों की आवश्यकता से अवगत कराती है। सदैव ही मानव की श्रेष्ठता उसके धन से नहीं, उसके कर्म, उसके सकारात्मक प्रभाव से परिलक्षित होती है। जब छात्र इन सब मूल्यों को समझने लगता है, तब ही उसका सही मायनों में विकास आरंभ होता है। वह नीति और नैतिक संबंधी मूल्यों के प्रति आदर भाव से देखता है तथा एक उत्तम जीवन की ओर अग्रसर होता है। यों तो आदर्श वातावरण दृष्टिकोण का विषय है, पर अगर हम विद्यालय के संदर्भ में तथा विद्यार्थियों की मूल्यपरक शिक्षा की बात करें तो इन्हें चिह्नित करना थोड़ा आसान प्रतीत होता है, साथ ही यह ध्यान में रखते हुए कि उद्देश्य केवल शिक्षा नहीं, बल्कि मूल्य-आधारित शिक्षा है।

विद्यालय में छात्र अपने शिक्षक को अपने अभिभावक की तरह देखता है तथा यदि शिक्षक का प्रभाव प्रभावी हो तो वही छात्र अपने परिवार में अभिभावकों में शिक्षक की तलाश करता है तो एक शिक्षक को उन मूल्यों का स्वयं भी अनुपालन आवश्यक है, जो वह अपने छात्र को प्रेरित करता है; हालाँकि यह सामान्य मानवीय समझ है कि हम अपने से बड़ों का कहीं-न-कहीं अनुसरण करते ही हैं, जाने या अनजाने। साथ ही विद्यालयों में साधनों का अभाव भी नहीं होना चाहिए, उदाहरणत: शिक्षक सुबह-शाम उन्हें स्वच्छता का पाठ पढ़ाए, पर विद्यालय में कूड़ेदान की कोई व्यवस्था ही न हो और शिक्षकगण स्वयं ही भले मजबूरन, गंदगी कर रहे हों तो स्वच्छता के संदेश का कुछ असर नहीं होगा।

अनुशासन एक ऐसा मूल्य है, जो हमें प्रारंभिक शिक्षा काल में ज्ञात होता है तथा पूरे जीवन हमें इसकी डोर से बँधे रहना पड़ता है। प्रारंभ में भले ही हमें यह अच्छा न लगे, पर जैसे-जैसे हम जीवन-पथ पर तरक्की करते हैं, हमें इसकी

महत्ता महसूस होती है। अनुशासन का पहला स्वाद हम सब ने अपने-अपने प्राथमिक विद्यालयों में चखा होता है। उस समय अध्यापकों द्वारा दिए गए दंड भविष्य में पुरस्कार के समान फलीभूत होते हैं। अनुशासन हमें योग्य बनाता है, हमें दृढ़ निश्चयी तथा मेधावी छात्र बनाता है। यह एक जिम्मेदार नागरिक होने का महत्त्व समझाता है। अनुशासन, योग्यता, जिम्मेदारी यह सभी मूल्य, गुण हमें विद्यालय में रहकर ही सीखने को मिलते हैं।

(2) उच्च शिक्षा

प्रगति, विकास व परिवर्तन प्रकृति के अद्‌भुत नियम हैं। वे जो जड़-चेतन हैं, वह भी विकास के अधिकारी हैं तो मानव जीवन तो चलती-फिरती सृजन की पराकाष्ठा है। कल जो बाल्यावस्था में विद्यालयों की शोभा बढ़ा रहे थे, नए कीर्तिमान बनाने, नए प्रतिमान गढ़ने के स्वप्न लिये वे कॉलेज तथा विश्वविद्यालयों में प्रवेश करते हैं।

उच्च शिक्षा उन सभी आदर्शों, मूल्यों के आधार पर ही खड़ी होती हैं, जो हमें हमारे बाल्यकाल में प्राथमिक व माध्यमिक विद्यालयों में प्राप्त हुई है। यहाँ छात्र कुछ हद तक स्वचलायमान होता है। उसका संपर्क तमाम विचारधाराओं से होता है—कोई रूसों में समाजवाद तलाशता है तो कोई मार्क्स में उत्थान, किसी को स्वामी विवेकानंद भाते हैं तो किसी को सर सैयद अहमद खाँ। यहीं विद्यार्थी के मन में देश-प्रेम व मानवता-प्रेम विकसित होता है तो कुछ भटक भी जाते हैं। तभी तो कहा गया है—शिक्षा तो केवल साधन है, साधक की आत्म-जिज्ञासा ही उसका फल निर्धारित करती है।

आज जब विश्वविद्यालयों में 'वैचारिक मतभेद' की बजाय बलपूर्वक आंदोलनों की माँग सुनाई देती है तो मन भयभीत होता है। आए दिन शिक्षा प्रणाली की खामियाँ नजर आती हैं, उसी क्षण हमें मूल्यों की आवश्यकता याद आती है। उच्च शिक्षा वह पटल है, जहाँ से एक राष्ट्र का भविष्य उज्ज्वल या संदेहपूर्ण नजर आता है। यहीं से निकलकर विद्यार्थी विभिन्न क्षेत्रों में नए कीर्तिमान स्थापित करते हैं या वर्तमान व्यवस्था में सुधार करते हैं, पर एक छात्र, जिसके लिए मूल्य कोई मायने नहीं रखते, वह मानवता या राष्ट्र के उत्थान में कोई भागीदारी नहीं कर

सकता। चाहे प्राथमिक शिक्षा हो या उच्च शिक्षा विद्यालय की भूमिका मूल्यपरक शिक्षा में सदैव ही महत्त्वपूर्ण रही है और रहेगी।

अर्जित मूल्यों का सामाजिक जीवन में अनुपालन

सभी मूल्यों का असली परीक्षण विद्यालय से निकलकर सामाजिक, वैश्विक परिदृश्य में होता है, भले ही आज हम सामाजिक मूल्यों व मानवीय मूल्यों के पतन की विवेचना कर रहे हों। फिर भी हमारे समाज में अभी भी इन मूल्यों को समझनेवाले नागरिकों की कमी नहीं है। अनुशासन की ही बात करें तो 'कोरोना महामारी' के चलते जब प्रधानमंत्रीजी ने लॉकडाउन का निर्देश दिया, तब ज्यादातार नागरिकों का व्यवहार सराहनीय था। पर इस स्थिति में सुधार करने के लिए हमें जिम्मेदार नागरिकों को प्रोत्साहन देना होगा। यह तभी संभव है, जब आज के विद्यार्थी तथा कल के नागरिक विद्यालय में सिखाए गए मूल्यों का अनुपालन अपने जीवन में करें।

अनुशासन, योग्यता, सहनशीलता, भाईचारा, देश-प्रेम, सद्भावना केवल किताबी बातें या शिक्षा/पाठ्यक्रम का हिस्सा बनकर रह गए तो उनकी महत्ता ही संकट में आ जाएगी। ये अगर प्रयोग में लाए जाएँ तो एक बेहतर समाज, समृद्ध देश संभव है, जिसमें सभी नागरिक अपने कर्तव्यों का स्वत: ही बिना किसी स्वार्थसिद्धि से प्रेरित हुए पालन करें। वे सभी मूल्य, जो हमें विद्यालयी जीवन में शिक्षा के साथ सिखाए जाते हैं, चाहे वह अर्थशास्त्र की शिक्षा के साथ मितव्ययी होना, विज्ञान व अनुसंधान की शिक्षा के साथ अध्यात्म की ओर भी प्रकाश डालना, एक वाक्य में कहें तो समग्र विकास तभी संभव है, जब इन सब मूल्यों का अनुसरण किया जाए। न जाने कितनी ही दुविधाओं व सामाजिक परेशानियों को दूर किया जा सकता है, चाहे वह भ्रष्टाचार हो या चारित्रिक पतन। सिर्फ मौलिक, नैतिक मूल्यों तथा अनुपालन के जरिए ही समाज का उत्थान संभव है।

चूँकि छात्रों में मूल्यों के संवर्धन व विकास में विद्यालय के साथ-साथ शिक्षकों की बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है, यह तथ्य इस कसौटी पर कसा जा सकता है कि मूल्य मात्र शब्दों में पढ़ाए पाठ या ज्ञान तक सीमित नहीं। मूल्य यदि

आचरण में न उतारे जाएँ तो वह अर्थहीन ही रहते हैं, अत: शिक्षक को अपने स्वयं के आचरण को ही छात्रों के सम्मुख उदाहरण के रूप में प्रस्तुत करना चाहिए, अत: शिक्षक द्वारा कक्षा में दिए गए व्याख्यान की अपेक्षा उसके आचरण का छात्रों पर अमिट प्रभाव पड़ता है। यही कारण है कि स्वामी विवेकानंद ने आदर्श शिक्षक के बारे में बताया है, "वह छात्रों के स्तर पर जाकर उनको समझाने का प्रयास करता है और अपनी आत्मा का उनमें स्थानांतरण करता है। ऐसे ही शिक्षक वास्तव में छात्रों में उच्च संस्कार डाल सकते हैं।" भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षक का महत्त्व प्राचीनकाल से ही अक्षुण्य रहा है। शिक्षक को ईश्वर से भी श्रेष्ठ स्थान दिया गया है—

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु र्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

शिक्षकों की भूमिका

मूल्यपरक शिक्षा का प्राथमिक उपाय सहायक कक्षा वातावरण बनाने से उद्‌गम होता है। इस क्षेत्र में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। शिक्षक को एक ऐसे वातावरण की संरचना करनी होती है, जिसमें छात्र अपने विचारों और भावनाओं या यहाँ तक कि अनुभव को व्यक्त करने के लिए स्वतंत्र महसूस करते हैं। विभिन्न छात्रों की बहु दिशात्मक राय के प्रति सहिष्णु बनना पड़ता है। यह निर्धारित करना कि क्या कुछ मूल्य अन्य मूल्यों की तुलना में मूल्यों की शिक्षा में अधिक महत्त्वपूर्ण हैं। शिक्षण के क्षेत्र, अध्यापन/ शिक्षण रणनीतियों की जाँच करना, शिक्षा के मूल्यों के लिए प्रत्येक प्रमुख समकालीन दृष्टिकोण को सुविधाजनक बनाने में अपनाने और अभ्यास को सूचित करने के लिए आवश्यक शिक्षक मूल्यों का पता लगाना। ऐसी बहुत सी भूमिकाएँ हैं, जो शिक्षक को निभानी होती हैं। निम्नलिखित भूमिकाएँ महत्त्वपूर्ण हैं—

- एक शिक्षक को एक कारक के रूप में कार्य करना होता है, जो जीवन में मूल्य स्थितियों के संदर्भ में शिक्षार्थियों को उत्तेजित, सूचित और सचेत करता है।
- चर्चा, संवाद और व्यावहारिक गतिविधियों में सक्रिय रूप से शिक्षार्थियों

को शामिल करने के माध्यम से शिक्षक को उन्हें मानवीय कार्यों और घटनाओं के बारे में सोचना और प्रतिबिंबित करना चाहिए।

- शिक्षक को छात्रों को कला, प्राकृतिक सुंदरता और मानवीय रिश्तों और नैतिक मूल्य के कार्यों के लिए भी प्रेरित करना चाहिए और अपनी नैतिक संवेदनाओं को विकसित करना चाहिए।
- उन्हें उच्च आदर्शों और मूल्यों के विकास के लिए अनुकूल विद्यालय में प्रेम, सहयोग और सुरक्षा का वातावरण बनाने में मदद करनी चाहिए।
- ज्ञान के अनुशीलन के लिए उनके मन और हृदय में आवश्यक गुण होने चाहिए—ज्ञान, जिज्ञासा और जानने की इच्छा, अज्ञानता को स्वीकार करने और ज्ञान, विनम्रता और ईमानदारी को अद्यतन रखने के लिए ईमानदारी से इच्छा।
- उनके पास एक सामाजिक दर्शन होना चाहिए, जिसमें सामाजिक संवेदनशीलता, सामाजिक न्याय और मानव अधिकारों के लिए चिंता हो। यह आवश्यक है कि वे शिक्षण पेशे के उच्चतम मानकों और नैतिकता के अनुसार अपने पेशेवर दायित्वों को पूरा करें।
- प्रशिक्षण संस्थान में संस्थागत प्रक्रियाओं में शिक्षकों को ठोस परिस्थितियों और अवसरों को प्रदान करके इन क्षमताओं को हासिल करने में मदद करनी चाहिए और उन्हें उपयुक्त सीखने के अनुभवों में सक्रिय रूप से शामिल करना चाहिए।
- उन्हें छात्रों में एक राष्ट्रवादी भावना विकसित करनी चाहिए।
- विशेष रूप से खाद्य, जल, ऊर्जा, पर्यावरण, प्रदूषण, स्वास्थ्य और जनसंख्या से संबंधित भविष्य की समस्याओं के बारे में जागरूकता पैदा करें।
- जाति, पंथ, लिंग और धन की विभिन्नता के बावजूद सभी छात्रों को समान महत्त्व दें।

मानव को इस पृथ्वी का सर्वश्रेष्ठ प्राणी माना जाता है। उसकी इस श्रेष्ठता में सबसे अधिक योगदान उसके ज्ञान एवं अच्छी शिक्षा का होता है। किसी भी समाज की प्रगति का सबसे सशक्त माध्यम उस समाज की शिक्षा को माना

जाता है। इसका दूसरा पहलू यह भी है कि अच्छे समाज से ही अच्छी शिक्षा की आशा की जा सकती है। शिक्षा व समाज एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। अच्छी शिक्षा का दायित्व हमेशा अच्छे शिक्षकों के कंधों पर होता है। *'विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्'* अर्थात् हमारे देश में शिक्षा को सभी धनों से श्रेष्ठ धन माना गया है। जिसे जितना दूसरों के साथ बाँटा जाता है, उतना ही विद्या धन में वृद्धि होती रहती है।

व्यक्ति की सफलता में उसकी शिक्षा का बहुत बड़ा योगदान माना जाता है, परंतु वर्तमान समय में आर्थिक रूप से सफल व्यक्तियों को संपन्न माना जाता है। प्राचीन समय में शिक्षा प्रदान करना एक पुण्य कार्य समझा जाता था। शिक्षा की प्रक्रिया में गुरु एवं शिष्य दोनों ही अपनी मर्यादा तथा समाज के प्रति अपनी जवाबदेही का सदैव ध्यान रखते थे। इसी कारण प्राचीन शिक्षा-प्रणाली में नैतिक मूल्यों के पालन पर अधिक बल दिया जाता था। बालक अपने परिवार में प्रथम शिक्षिका अपनी माता से नैतिक मूल्यों का ज्ञान प्राप्त करता था। शेष नैतिक मूल्य औपचारिक रूप से गुरु के सान्निध्य में रहकर उनसे शिक्षा के माध्यम से प्राप्त करते थे। प्राचीन समय में शिक्षा का मुख्य उद्देश्य मोक्ष की प्राप्ति *'सा विद्या या विमुक्तये'* था तथा मोक्ष-प्राप्ति हेतु आध्यात्मिक ज्ञान आवश्यक था, इसलिए उस समय आध्यात्मिक ज्ञान की पाठ्यचर्चा पर अधिक बल दिया जाता था तथा भौतिक ज्ञान को गौण स्थान पर रखा जाता था, परंतु आज समय की आवश्यकता को देखते हुए आध्यात्मिक के साथ ही वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं तार्किकता का विकास छात्र के जीवन में महत्त्वपूर्ण है।

एक शिक्षा प्रणाली, जो विद्यार्थियों में बोधात्मक शक्ति जाग्रत् करने में असमर्थ है, जो सत्य ज्ञान की पिपासा को शांत नहीं करती तथा भविष्य के लिए अनुपयोगी है। जो शिक्षार्थियों के बौद्धिक ज्ञान के साथ-साथ नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों को भी विकसित कर सके, ऐसी होनी चाहिए। मानवीय सामाजिक जीवन में तीव्रगति से हो रहे परिवर्तन (जैसे परंपरागत खान-पान, रहन-सहन, भाषा-संस्कृति, आधुनिकीकरण आदि) के कारण उत्पन्न समस्याओं से छुटकारा पाने के लिए नवीन एवं प्राचीन विचारों के मध्य सामंजस्य करने का कार्य नैतिक मूल्य ही करते हैं। नैतिक मूल्यों से समाज की संगठनकारी शक्तियाँ

सद्मार्ग पर गतिमान होती हैं। जबकि समाज को विघटित करनेवाली शक्तियों का नाश होता है।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली भौतिकता को ध्यान में रखकर विकास करती है, परंतु नैतिक मूल्यों पर ध्यान दिया जाना भी आवश्यक है, जिससे व्यक्ति के नैतिक पक्ष का समुचित विकास हो पाए। वर्तमान में मूल्य शिक्षा का विकास नितांत आवश्यक हो जाता है। मूल्य शिक्षा ही वह माध्यम है, जो प्राचीन एवं नवीन के मध्य सेतु का निर्माण कर सकती है। इस कार्य में विद्यालय महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकते हैं। शिक्षा का आशय डिग्री प्राप्त करना या नौकरी प्राप्त करने से नहीं लगाना चाहिए। भौतिकता के इस युग में डिग्री, नौकरी वाले व्यक्ति भी अपनी जीवन-शैली से सुखी नहीं हैं। जॉन डी.वी. का कहना है, "विद्यालय समाज का लघु रूप है।" विद्यालय औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा का महत्त्वपूर्ण केंद्र है। विद्यालय सामाजीकरण की प्रक्रिया के द्वारा मूल्य शिक्षा के दायित्वों को पूरी तरह निभा सकता है। यह बालकों में उन आदतों, रुचियों, अभिवृत्तियों और भावनाओं को जाग्रत् करती है, जो उसके जीवन का अंग बन जाती हैं।

प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से विद्यालय ही वह स्थान है, जो विभिन्न माध्यमों से विद्यालयों में मूल्य विकसित करने का कार्य करता है। विद्यालय ही एकमात्र वह साधन है, जो सामाजिक, नैतिक, राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय एवं सशक्त जनतांत्रिक मूल्यों की शिक्षा देते हैं। विद्यालय में रहकर बालक शिक्षकों एवं सहपाठियों के व्यवहार को एवं आदर्शों का प्रत्यक्षीकरण कर उन मूल्यों का अनुकरण करता है, जो उसे समाज की दृष्टि से श्रेष्ठ प्रतीत होते हैं। डी.वी. का कथन है, "विद्यालय एक ऐसा विशिष्ट वातावरण है, जहाँ जीवन के कुछ गुणों और कुछ विशेष प्रकार की क्रियाओं और व्यवस्थाओं की शिक्षा इसलिए दी जाती है कि बालक का विकास वांछित दिशा में हो।"

स्वामी विवेकानंदजी ने कहा है, "ज्ञान मनुष्य में स्वभाव से है। कोई भी ज्ञान बाहर से नहीं आता।" यथार्थ में कहना चाहिए कि हमारा स्वभाव ही ज्ञान को प्रकट करता है। शिक्षा का उद्देश्य स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा था कि सभी शिक्षाओं का, अभ्यासों का, अंतिम ध्येय मनुष्य का सर्वांगीण विकास करना है।

नैतिक मूल्यों पर आधारित शिक्षा राष्ट्र में सुख-समृद्धि तथा शांति का संचार करने में समर्थ होती है। चारित्रिक व नैतिक शिक्षा पर बल देते हुए स्वामीजी ने कहा था, "शिक्षा मनुष्य की अंतर्निहित पूर्णता का विकास करती है।" वह शिक्षा जन-समुदाय को जीवन संघर्ष के लिए उपयुक्त नहीं बना सकती, जो उनकी चारित्रिक शक्ति का विकास नहीं कर सकती, जो उनके मन में परोपकार की भावना और सिंह के समान साहस पैदा नहीं कर सकती है। उसे हम शिक्षा का नाम नहीं दे सकते। यह शिक्षक का ही दायित्व है कि छात्रों में इन मूल्यों को डालकर उसे भविष्य के लिए तैयार करे।

समय के साथ शिक्षा की परिभाषा और उद्देश्य के साथ उसका स्वरूप ही बदल जाता है, इसलिए शिक्षण संस्थाओं का महत्त्व मूल्यों के विकास के लिए और भी बढ़ जाता है। शिक्षा और शिक्षण संस्थाओं की सबसे बड़ी भूमिका यह भी है कि वह अपनी संस्कृति, धर्म तथा अपने इतिहास को अभिन्न अंग बनाए रखें, जिससे कि राष्ट्र का गौरवशाली अतीत भावी पीढ़ी के समक्ष ला सकें और युवा पीढ़ी अपने अतीत से हटकर न रह जाए।

शिक्षण संस्थाएँ राष्ट्र निर्माण का आधार है, जिससे निकलनेवाले नागरिकों की सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनैतिक, तकनीकी, भौतिक, नैतिक, आध्यात्मिक उन्नति में यह संस्थाएँ योगदान करती हैं। नीतिशास्त्र में युक्ति है कि *'ज्ञानेन हीना: पशुभि: समाना:।'* अर्थात् ज्ञान हीन व्यक्ति पशु के समान होता है। ज्ञान की प्राप्ति शिक्षा या विद्या से होती है, जो शिक्षण संस्थाओं द्वारा प्रदान की जाती है। पारिवारिक परिवेश के बाद मानव का जीवन और चरित्र शिक्षण संस्थाओं में ही विकसित होता है, जहाँ से उसे परिपक्वता और ज्ञान मिलता है। शिक्षा मनुष्य के विकास के लिए उसको प्रशिक्षित करने की प्रक्रिया है। इसके द्वारा लोगों में आत्मसात् करने, ग्रहण करने, बोध करने तथा रचनात्मक कार्य करने की कुशलता का विकास होता है। शिक्षण संस्थाओं द्वारा परोपकार की भावना, राष्ट्रीय महत्त्व के कार्यक्रमों में पूर्ण सहयोग देने की भावना का विकास होता है, साथ ही 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना विकसित होती है। इसके साथ-साथ विद्यालयों में विभिन्न क्रियाकलापों के माध्यम से भी विद्यार्थियों में मूल्यों का विकास किया जाता है, जैसे एन.सी.सी., स्काउटिंग एवं गाइडिंग। खेलकूद,

नाटक, सांस्कृतिक क्रियाकलाप, समाज-सेवा, मतदान जागरूकता अभियान, सफाई अभियान, सामुदायिक कार्य, हिमालय एवं पर्यावरण बचाव अभियान, वन महोत्सव, जल-संरक्षण, नुक्कड़ नाटक के माध्यम से सांस्कृतिक संरक्षण, जनतांत्रिक भावना एवं सहयोग की भावना का विकास किया जाता है।

छात्रों में मूल्यों का विकास करने के लिए हम विद्यालयों की शिक्षण प्रक्रिया को सरल एवं सुव्यवस्थित अध्ययन करने के लिए निम्न तीन वर्गों में विभाजित कर सकते हैं—

1. प्राथमिक स्तर पर मूल्यों का विकास,
2. माध्यमिक स्तरीय विद्यालय में मूल्यों का विकास,
3. उच्च स्तरीय विद्यालय में मूल्यों का विकास।

1. प्राथमिक स्तर पर मूल्यों का विकास

- प्राथमिक स्तर पर बालकों को शारीरिक स्वच्छता के साथ-साथ अपने आसपास के वातावरण को स्वच्छ बनाने का ज्ञान कराना और उसके महत्त्व को समझाना।
- आदर एवं सत्कार जैसे गुणों का विकास कराना और उनके महत्त्व से परिचित कराना। जैसे—अपनों से बड़ों तथा अतिथि के पैर छूना, प्रणाम करना, सम्मान करना, भाषा में शालीनता आदि।
- विद्यालय में प्रत्येक शिक्षक को सम्मान देना।
- बालकों में नियमों के पालन का ज्ञान कराना। बालकों को इस बात से परिचित कराना कि प्रकृति की प्रत्येक क्रिया नियमित रूप से संचालित होती है। जैसे—सूर्य का सुबह समय से उगना तथा समय से ही अस्त होना, नियम से सूर्य उगने पर चिड़ियों का चहकना, फूलों का खिलना आदि, अत: नियमितता ही जीवन का आधार है—ऐसे मूल्यों का विकास करना।
- मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, जिसके बिना उसका अस्तित्व संभव नहीं है। समाज का ज्ञान एवं समाज के प्रति कर्तव्य, समाज के प्रति सहयोग की भावना का विकास करना।

2. माध्यमिक स्तर पर मूल्यों का विकास

- विद्यालयों में विभिन्न ऐसे विद्वानों को आमंत्रित किया जाना चाहिए, जो मूल्य शिक्षा के संबंध में विद्यार्थियों का मार्गदर्शन कर सकें। इन मूल्यों के विकास हेतु अध्यापकों द्वारा समय-समय पर उनको सहयोग तथा प्रोत्साहन को बढ़ावा देना।
- सभी धर्मों के प्रति सम्मान एवं आदर की भावना का विकास करना, जिससे उनमें धर्मनिरपेक्षता की भावना विकसित हो सके। उनके अंदर अनेकता में एकता जैसे गुणों की भावना का विकास करके कक्षा-सहपाठियों के प्रति सहयोग तथा आदर का भाव जाग्रत् करना।
- सरकारी संपत्ति, राष्ट्रीय धरोहरों तथा पर्यावरण संरक्षण के उत्तरदायित्व की भावना का विकास करना।
- भारत के महापुरुषों, शहीदों, अध्यात्म ग्रंथ आदि के बारे में जानकारी दी जाए, जिससे उनके चरित्र का निर्माण हो सके तथा उनके अंदर भारतीय संस्कृति, राष्ट्रीय तथा विश्वबंधुत्व की भावना का विकास हो सके।
- आज के समय में मूल्य शिक्षा के वैज्ञानिक दृष्टिकोण से विद्यार्थियों को अवगत कराना तथा उसके महत्त्व के ज्ञान को विद्यार्थियों में संचारित करना।

मूल्य-आधारित शिक्षा से संबंधित विभिन्न योजनाएँ

- हर्टांग कमेटी (1929) में सबसे पहले आई, जिसमें उन्होंने कहा कि जो धर्म की चीजें हैं, वे केवल स्कूल के पाठ्यक्रम एवं उसके बाहर भी पढ़ाई जानी चाहिए।
- CABE (Central Advisory Board of Education) (1946) में कहा गया कि हम न सिर्फ धार्मिक चीजें ही पढ़ाएँ, अपितु नैतिक चीजें भी पढ़ाएँ।
- राधाकृष्णन कमीशन (1948), जिसमें कहा गया कि आध्यात्मिक प्रशिक्षण पर भी बल दिया जाना चाहिए।
- माध्यमिक शिक्षा आयोग ने भी मूल्यों एवं नैतिक शिक्षा हेतु अपनी संस्तुतियाँ दी हैं।

- सेंट्रल एजुकेशन रिपोर्ट (1953), जिसमें कहा गया था कि स्कूल का आर्ट ऑफ इंडक्सन है। उसके बाहर नैतिक मूल्य को किस तरीके से बढ़ाने का प्रयास कर सकते हैं, यह विचार का विषय है।
- 1959 में श्री प्रकाश समिति की स्थापना की गई, जिसमें मूल्यों एवं नैतिक शिक्षा पर बल दिया गया।
- कोठारी कमीशन (1964-66) में भी ये संस्तुतियाँ की गईं कि सभी विश्वविद्यालय एवं उच्च शिक्षा के जो संस्थान हैं, उसमें एक 'सेंटर फॉर वैल्यू एजुकेशन' की स्थापना की जाएगी। इसको 'प्रोग्राम ऑफ ऐक्शन' के अंतर्गत किया गया था।
- छावन कमेटी रिपोर्ट (1999) में, जिसमें राज्यसभा में मूल्य-आधारित शिक्षा का विचार रखा गया, जिसमें पाँच मुख्य बिंदुओं पर फोकस किया गया। बौद्धिक, शारीरिक, मनोवैज्ञानिक, आध्यात्मिक व संवेगात्मक विकास पर बल दिया गया है।
- कॉमन मिनिमम प्रोग्राम फॉर वैल्यू एजुकेशन (2014-19), जिसके तहत कहा गया कि बहुत से विद्यालयों में हम शैक्षिक सत्र 2019-20 से, जो मूल्य शिक्षा का कार्यक्रम अनिवार्य किया जाएगा, वह सभी जगह लागू होगा। इसको कॉमन मिनिमम प्रोग्राम फॉर वैल्यू एजुकेशन कहा जाएगा। इसके निर्देशन में WSA (Whole School Approach) की स्थापना की गई। WSA, NCERT द्वारा संस्तुति की गई थी। इसका उद्देश्य मुख्यत: यह था कि विद्यार्थियों में नेतृत्व की क्षमता को कैसे बढ़ाया जाए? लोगों में अनुभव और क्रियात्मकता को कैसे बढ़ाया जाए? शिक्षण मूल्यांकन किस प्रकार किया जाए। WSA में मुख्यत: छह बिंदु उत्तदायित्व, कृतज्ञता, आधारभूत, बुद्धिमानी, धैर्य व अखंडता को जोड़ा गया।

विद्यार्थी के जीवन में सबसे अधिक प्रभाव उसके शिक्षक का पड़ता है, जिसे आदर्श मानकर वह उसका अनुसरण करता है। हमारे यहाँ हमेशा गुरु को भगवान् एवं सर्वपूज्य माना जाता है। *'गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वर:।'* यहाँ यह स्मरण करना अति आवश्यक है कि शिक्षक स्वयं उन गुणों एवं मूल्यों से परिपूर्ण होना चाहिए, जिससे वह विद्यार्थी रूपी पौधे को सींचना चाहता है।

वास्तविक ज्ञान की अनुभूति गुरु के सान्निध्य में ही संभव है। गुरु को भी उच्च आदर्शों एवं कर्तव्यों का पालन करके अपने शिक्षक धर्म को निभाना चाहिए। गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर ने गुरु की महिमा का ज्ञान करते हुए कहा, "गुरु एक जलते हुए दीपक के समान है और एक दीपक दूसरे दीपक को तब तक प्रज्वलित नहीं कर सकता, जब तक स्वयं न जल रहा हो।" इसलिए शिक्षक को हमेशा दीपक की भाँति जलकर नित नई-नई प्रवृत्तियाँ एवं नवाचार को जानने एवं खोजने का प्रयास करते रहना चाहिए। विद्यार्थियों में मूल्यों को विकसित करने में शिक्षक अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है।

शिक्षक की कथनी और करनी में अंतर नहीं होना चाहिए, क्योंकि कक्षा में दिए गए ज्ञान एवं भाषण उस समय अर्थहीन हो जाएँगे, जब वह कक्षा में बड़ी-बड़ी बातें करे तथा व्यावहारिक जीवन में उसका पालन न करे। व्यावहारिक जीवन में उसे अपनाकर महत्त्वपूर्ण रोल अदा कर सकते हैं।

विभिन्न वैश्विक समस्याएँ, जैसे पर्यावरण से संबंधित इत्यादि के प्रति प्रशिक्षण संस्थानों को समय-समय पर पर्यावरण चेतना का विकास करके तथा पर्यावरण संबंधी मूल्यों को विकसित करने के लिए विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन करके उनमें पर्यावरणीय मूल्यों का विकास करना चाहिए, ताकि उन पर्यावरणीय मूल्यों को शिक्षक अपने व्यवहार में उपयोग करके विद्यार्थियों के चेतना तथा उनके व्यवहार अभ्यासों में पर्यावरणीय मूल्य शिक्षा का आदर्श प्रस्तुत कर सकें।

मूल्य शिक्षा एवं पाठ्यक्रम

बिना पाठ्यक्रम के शिक्षा की प्रक्रिया असंभव है। विद्यालय के समस्त उद्देश्य एवं क्रियाकलापों का संचालन पाठ्यक्रम को आधार मानकर पूर्ण किए जाते हैं। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में पाश्चात्य जगत् का अंधानुकरण करके भौतिक विषयों पर अधिक बल दिया जाता है। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य केवल परीक्षा पास करके आगे की कक्षा में प्रवेश पाना ही होता है। आज स्कूलों में मूल्य शिक्षा पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता है। वर्तमान शिक्षा की सबसे बड़ी माँग यह है कि शिक्षा का पाठ्यक्रम इस प्रकार से निर्धारत किया जाए, जिसमें नैतिकता,

सौंदर्यानुभूति, सामाजिक, सांस्कृतिक, राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय मूल्यों का विकास किया जा सके। मूल्यों को शिक्षा के निश्चित पाठ्यक्रम में बाँधना अत्यंत कठिन कार्य है, क्योंकि मूल्यों को एक सीमा में नहीं बाँधा जा सकता है। फिर भी मूल्य शिक्षा के पाठ्यक्रम में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका रखते हैं। मूल्य शिक्षा में पाठ्यक्रम से ज्यादा महत्त्वपूर्ण है समस्त अच्छे कार्यों को अपने व्यावहारिक जीवन में अपनाना। हाँ, परंतु शिक्षक को विभिन्न महापुरुषों की जीवनियों, प्रेरणादायक नैतिक कहानियाँ एवं विभिन्न सामूहिक क्रियाकलाप आदि को पाठ्यचर्चा में शामिल करना चाहिए। विद्यार्थियों में सामूहिक कार्य, खेल, सहयोगात्मक कार्य, सामाजिक कर्तव्यों का पालन करना जोड़ा जा सकता है। अब यह एक प्रश्न हमेशा से उठता रहा है कि पाठ्यक्रम अलग से मुक्त विषय के रूप में हो या विभिन्न विषयों में सम्मिलित आधुनिकता एवं विज्ञान खोज में मानवीय जीवन-शैली को सुविधाजनक एवं सृजनात्मक तो बनाया है, परंतु आत्मसंतोष का सुख आधुनिक शिक्षा के आधार पर नहीं मिलता। व्यक्ति के पास आज आत्मसंतोष एवं समस्याओं से छुटकारा पाने का एक ही मूल्य मार्ग है, वह है—बालकों को मूल्य-शिक्षा के समुचित विकास की व्यवस्था करना।

परिवार एवं विद्यालय में अर्जित शिक्षा तथा मूल्यों का असली रणक्षेत्र तो समाज ही होता है और उनका उद्देश्य भी एक 'मूल्य-आधारित समाज तथा विश्व' ही होता है। परिवार में पिता से खाई एक डाँट हमें भविष्य में अनेक दूषित कर्म करने से रोकती है। शिक्षक की एक सलाह जीवन में पथ-प्रदर्शन का कार्य करती है।

बचपन में मूल्यों की जो पौध विद्यालय लगाता है, वह कुछ समय उपरांत, कुछ वर्षों के पश्चात् पूरे विश्व को फल देती है। आखिर में हम सब इस विश्व के नागरिक हैं और अपने-अपने राष्ट्र, राज्य या गाँव के प्रति उत्तरदायी हैं और सभी अपने क्षेत्र को समृद्ध तथा खुशहाल देखना चाहते हैं। मूल्य रहित समाज में खुशियाँ एक छलावे की तरह हैं, क्योंकि वहाँ नागरिकों की लालसा, इच्छाएँ कभी तृप्त नहीं होंगी। मूल्य न तो साम्यवाद का प्रतिपादन करते हैं, न ही राजशाही का। वह तो सरल लोकतंत्र का विचार सर्वश्रेष्ठ मानते हैं, जहाँ वैचारिक-विमर्श का स्थान हो, लोग एक-दूसरे का सम्मान करें तथा विश्व अनावश्यक परेशानियों

से आगे बढ़कर एक समृद्ध समाज की रचना कर सके। आज हम 'संयुक्त राष्ट्र संघ', 'विश्व स्वास्थ्य संगठन' जैसे संस्थानों के साक्षी हैं, पर भारतवर्ष तो सदैव से ही 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का स्रोत रहा है, चाहे वह पुरातन काल में नालंदा, तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालयों का योगदान हो या आज के काल में योग का ज्ञान, भारत हमेशा से ही विश्व को एक परिवार मानकर चला है।

आज कोरोना महामारी के समय में जब लगभग सभी देश थम गए हैं, नागरिकों के आय के साधन संकट में हैं, गरीब वर्ग भूख से जूझ रहा है, मुझे लगता है कि हमारे वही मानवीय, नैतिक, सांस्कृतिक मूल्य जो विद्यालयों में सिखाए गए, लोगों की मदद के लिए प्रेरित करते हैं और करते रहेंगे।

उपर्युक्त बिंदुओं से स्वत: प्रमाणित है कि मूल्य शिक्षा में अध्यापक सबसे महत्त्वपूर्ण कड़ी है। यह कड़ी जितनी मजबूत होगी, उतना ही भलीभाँति छात्र मूल्यों को ग्रहण कर पाएँगे। शिक्षक को अपने आचरण द्वारा छात्रों के समक्ष उदाहरण प्रस्तुत करना होगा, क्योंकि बालकों में अनुकरण की प्रवृत्ति होती है। वह अध्यापक के प्रत्येक क्रियाकलाप की नकल करते हैं व जाने-अनजाने उससे प्रभावित होते हैं। यह भी निर्विवाद तथ्य है कि मूल्य शिक्षा के पाठ्यक्रम का निर्धारण बहुत कठिन है। ऐसे में यह शिक्षक के अनुभव, ज्ञान व विवेक पर यह निर्भर है कि वह यह निर्णय ले कि छात्र में चारित्रिक विकास व श्रेष्ठ मूल्यों की नींव डालने के लिए क्या आवश्यक है, भारतीय मनीषियों ने 'आत्मदीपो भव' व 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के उद्दात मूल्यों को प्रधानता दी है, अत: अच्छे शिक्षक को चाहिए कि वह छात्र को आत्म-कल्याण के लिए आवश्यक मूल्यों की शिक्षा दे। □

6

राष्ट्रीय मूल्य-आधारित शिक्षा

राष्ट्रीय मूल्य राष्ट्र के सामान्य सांस्कृतिक अनुभव के दौरान सर्वोपरि मूल्यों का प्रतिनिधित्व करते हैं। वे विश्वदृष्टि को भी परिभाषित करते हैं और वे उन पहलुओं का मार्गदर्शन करते हैं, जो लोगों की पहचान को परिभाषित करते हैं। राष्ट्रीय मूल्यों में आमतौर पर देशभक्ति, राष्ट्रीय एकता, साझाकरण और शक्ति का विचलन, कानून का शासन, लोकतंत्र और लोगों की भागीदारी शामिल है। मानव गरिमा, न्यायप्रियता, सामाजिक न्याय, समावेशिता, समानता, मानवाधिकार, गैर-भेदभाव और वंचितों का संरक्षण, सुशासन, अखंडता, पारदर्शिता और जवाबदेही और सतत विकास आते हैं। देशप्रेम व देशहित पर अपना सर्वस्व बलिदान करना श्रेष्ठ राष्ट्रीय मूल्य है। यहाँ पर एक प्रसिद्ध गीत मुझे याद आता है—

सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है,
देखना है, जोर कितना बाजु ए कातिल में है,
वक्त आने दे बता देंगे तुझे ऐ आस्माँ,
हम अभी से क्या बताएँ क्या हमारे दिल में है।

रामप्रसाद बिस्मिल द्वारा रचे गए गीत ने युवाओं को स्फूर्ति से भर दिया था। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में अनेक लोगों ने राष्ट्रीय मूल्यों का परिचय दिया। एक घटना जो मुझे रोमांचित करती है, वह है काकोरी कांड। 19 अगस्त, 1925 के दिन रामप्रसाद बिस्मिल ने अशफाकुल्ला खान, राजेंद्र लाहिड़ी, रोशन सिंह और चंद्रशेखर आदि स्वंत्रता सैनानियों के साथ स्वतंत्र भारत के लिए युद्ध को वित्तपोषित करने के लिए औपनिवेशिक सरकार के खजाने को काकोरी में लूटा।

आजाद को गिरफ्तार नहीं किया जा सका, लेकिन अन्य चारों को गिरफ्तार कर लिया गया। लाहिड़ी को 17 दिसंबर, 1927 को गोंडा जेल में फाँसी दी गई। 19 दिसंबर, 1927 को बिस्मिल, अशफाक और रोशन सिंह को क्रमशः गोरखपुर, फैजाबाद और इलाहाबाद की जेल में फाँसी दे दी गई। युवा अवस्था में देश-प्रेम के मूल्य पर चारों वीर बलिदान होकर, भारतीय स्वतंत्रता के इतिहास में अमर हो गए।

बचपन से ही एक गीत जो हर हृदय में देशभक्ति की अलख जलाता है—

मेरा रंग दे बसंती चोला··
हो मेरा रंग दे बसंती चोला··
इसी रंग में रंग के शिवा ने माँ का बंधन खोला,
यही रंग हल्दीघाटी में था प्रताप ने घोला;
नव बसंत में भारत के हित वीरों का यह टोला,
किस मस्ती में पहन के निकला यह बसंती चोला।
मेरा रंग दे बसंती चोला··
हो मेरा रंग दे बसंती चोला··

यह जानकर आपको आश्चर्य होगा कि यह गीत रामप्रसाद बिस्मिलजी ने जेल में लिखा था। उपर्युक्त पंक्तियों के साथ देश की स्वाधीनता के यज्ञ में सर्वोच्च बलिदान देते हुए 30 वर्षीय रामप्रसाद बिस्मिल ने आनेवाली पीढ़ियों और सभी युवाओं के लिए उदाहरण प्रस्तुत प्रेरणा दी।

राष्ट्रीय मूल्यों में राष्ट्रप्रेम सर्वोपरि है। विचारणीय है कि वह कौन से मूल्य रहे होंगे, जिनके कारण देश के लिए प्राण न्योछावर करते हुए रामप्रसाद बिस्मिल के चेहरे पर कोई खौफ या शिकायत नहीं, अपितु मुसकराहट और गर्व था। एक वर्णन के तहत फाँसी से एक दिन पूर्व उनकी माता उनसे मिलने आईं। माता को देख बिस्मिल भाव-विभोर हो गए। अनायास ही उनकी आँखों में माता के प्रति प्रेम के आँसू झलक गए। जिसे देख साहसी, देश-प्रेमी, वीर जननी माता ने अखंड स्वर में कहा, "मैं तो समझती थी कि मेरा बेटा बहादुर है, जिसके नाम से अंग्रेज सरकार भी काँपती है। मुझे नहीं पता था कि वह मौत से डरता है। यदि

तुम्हें रोकर ही मरना था तो व्यर्थ इस काम में क्यों आए।" इस पर बिस्मिल ने आत्मविश्वास से जवाब दिया, "ये मौत के डर के आँसू नहीं हैं। यह माँ का स्नेह है। मौत से मैं नहीं डरता माँ, तुम विश्वास करो।" देश के प्रति प्रेम से भरी माँ के अंतिम शब्द थे, "पार्टी के लिए कोई संदेश देना हो तो कह दो।" फाँसी के दिन बिस्मिल से उनकी अंतिम इच्छा पूछी गई, तख्ते पर चढ़ने से पहले उन्होंने अपनी अंतिम इच्छा व्यक्त करते हुए कहा, "I Wish the downfall of British Empire", अर्थात् 'मैं ब्रिटिश साम्राज्य का नाश चाहता हूँ।' इसके बाद वे फाँसी के फंदे पर झूल गए।

स्वतंत्रता संग्राम में राष्ट्रीय मूल्यों के अनेक रूप और रंग दिखते हैं। सर्वप्रथम स्वदेश प्रेम की नूतन परिभाषा, राष्ट्रवाद केवल एक राष्ट्र तक सीमित नहीं है, अपितु संपूर्ण विश्व कल्याण की भावना से निहित है। अर्थात् अपने देश के लिए देशभक्त होना या राष्ट्रवादी होना हमें कभी भी दूसरों के लिए नफरत करने या दूसरे देशों के प्रति राष्ट्र विरोधी नहीं बनाता। कुछ ऐसे मूल्य ही हैं, जो नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने हमें सिखाए। 1920 में नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने 24 वर्ष की अल्प आयु में इंग्लैंड में भारतीय सिविल सेवा परीक्षा उत्तीर्ण की। जिसे उन्होंने अप्रैल 1921 में भारतीय स्वतंत्रता की लड़ाई में शामिल होने के लिए इस्तीफा दे त्याग दिया। अपने स्वयं के ऊपर राष्ट्रीय हित पर विचार करने का भाव राष्ट्रीय मूल्य का एक और रंग है और राष्ट्र सेवा के निहित किस प्रकार दूसरे देशों को संगठित कर स्वाधीनता संग्राम को निर्णायक स्थिति तक पहुँचा दिया, यह मूल्यों की शिक्षा को एक नया आयाम प्रदान करता है। द्वितीय विश्वयुद्ध की शुरुआत के बाद उन्होंने सोवियत संघ, नाजी, जर्मनी और इंपीरियल जापान सहित कई देशों की यात्रा की, ताकि प्रत्येक के साथ गठबंधन की स्थापना कर भारत में ब्रिटिश सरकार पर हमला करने की योजना कार्यान्वित की जाए। राष्ट्रवाद, मेल-मिलाप और मानवता के अद्‌भुत मूल्यों का परिचय देते हुए उन्होंने इंपीरियल जापान की सहायता से, ब्रिटिश मलय, सिंगापुर और दक्षिण-पूर्व एशिया के अन्य हिस्सों से भारतीय युद्ध-बंधकों और वृक्षारोपण श्रमिकों के साथ 'आजाद हिंद फौज' का पुन: संगठन किया और स्वयं उसका नेतृत्व किया। 'भगवद्‌गीता' को परम प्रेरणा माननेवाले नेताजी सुभाषचंद्र बोस

ने जापानी मौद्रिक, राजनीतिक, राजनयिक और सैन्य सहायता के साथ निर्वासन में आजाद हिंद सरकार का गठन किया। दूरदर्शी सुभाष चंद्र बोस की आजाद हिंद फौज की एक रेजिमेंट रानी झाँसी रेजिमेंट थी, जो केवल महिलाओं से बनी थी। बीसवीं शताब्दी की शुरुआत में महिलाओं को बराबरी से स्वाधीनता संग्राम का योद्धा बनाकर, उन्होंने महिलाओं के साथ समानता का व्यवहार करते हुए उच्च मूल्यों का प्रदर्शन किया। इससे पूर्व भी यदि भारतीय इतिहास में पीछे झाँककर देखें तो छत्रपति प्रताप, महाराणा शिवाजी, बाजीराव पेशवा, तात्या टोपे, रानी लक्ष्मीबाई, बहादुरशाह जफर तथा अन्य अनेक देशभक्त हुए हैं, जिनके जीवनमूल्यों से छात्रों का परिचय मात्र ही उनमें राष्ट्रीय गुणों का सृजन करने के लिए पर्याप्त होगा।

राष्ट्रवादी नेता मात्र हिंदुस्तान में नहीं, अपितु दुनिया के सभी देशों में होते हैं। यासिर अराफात एक ऐसे अंतरराष्ट्रीय नेता रहे है, जो अपने देश के लिए कट्टर राष्ट्रवादी थे और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर 'नोबेल शांति पुरुस्कार' से सम्मानित हुए हैं। 1929 में काहिरा में जनमे यासिर अराफात को 40 साल बाद फिलिस्तीन लिबरेशन ऑर्गनाइजेशन का चेयरमैन नामित किया गया था। वर्ष 1988 ने अराफात और पी.एल.ओ. के लिए एक बदलाव को चिह्नित किया, जब अराफात ने संयुक्त राष्ट्र में एक भाषण दिया, जिसमें कहा कि सभी देश शांति से रह सकते हैं। परिणामस्वरूप शांति प्रक्रिया में 1993 के 'ओस्लो समझौते' का नेतृत्व किया, जिसने फिलिस्तीनी क्षेत्र में फिलिस्तीनी स्व-शासन और चुनावों के लिए अनुमति दी। (जिसमें अराफात राष्ट्रपति चुने गए थे।) अराफात ने 1991 में मैड्रिड सम्मेलन में इजराइल के साथ एक स्व-शासन समझौते पर हस्ताक्षर किए और इजराइली नेताओं के साथ मिलकर जल्द ही स्थायी शांति के कई प्रयास किए, (विशेष रूप से ओस्लो समझौते (1993) और 2000 के कैंप डेविड शिखर सम्मेलन के माध्यम से) ओस्लो समझौते के कारण अराफात और इजराइल के यित्जाक राबिन और शिमोन पेरेस ने नोबेल शांति पुरस्कार साझा किया।

राष्ट्रीय मूल्य शासन के सिद्धांतों के लिए आधारशिला रखते हैं। राष्ट्रीय मूल्य एक नागरिक की पसंद, कार्य और व्यवहार का मार्गदर्शन कर राष्ट्र की

मूलभूत मान्यताएँ परिभाषित करते हैं। इसके अलावा राष्ट्रीय मूल्य निवासियों के परस्पर संबंधों और सामुदायिक व्यवहारों पर भी प्रभाव डालते हैं। नागरिक विचारधाराओं और सरकारी संरचनाओं का निर्माण भी राष्ट्रीय मूल्यों पर निर्धारित होता है। आज के समय में भारत का संविधान ही भारतीय मूल्यों का सबसे महत्त्वपूर्ण परिचय देता है। संविधान के बाहर किया गया कृत्य कानून और समाज की दृष्टि में गलत है। गलत मतलब मूल्यों की परिभाषा से परे, अत: सर्वप्रथम संवैधानिक मूल्यों से परिचय आवश्यक है।

भारत के संविधान की प्रस्तावना में पाँच सार्वभौमिक मूल्य हैं। प्रस्तावना को उद्देशिका समझकर देखा जाए तो यह भारत के महत्त्वपूर्ण मूल्य हैं, जो प्रत्येक नागरिक को मनसा-वाचा-कर्मणा अपनाने हैं। प्रस्तावना इस प्रकार है—

"हम, भारत के लोग, भारत को एक संपूर्ण प्रभुत्वसंपन्न, समाजवादी, पंथनिरपेक्ष, लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को—

1. सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय,
2. विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता,
3. प्रतिष्ठा और अवसर की समानता, प्राप्त कराने के लिए तथा उन सब में,
4. व्यक्ति की गरिमा और
5. राष्ट्र की एकता और अखंडता सुनिश्चित कराने वाली बंधुता बढ़ाने के लिए,

दृढ़ संकल्पित होकर अपनी संविधान सभा में आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ईसवी (मिति मार्गशीर्ष शुक्ल सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।"

पुन: भारतीय संविधान अनुच्छेद 51ए में शिक्षा के मूल्यों को मौलिक कर्तव्यों के रूप में प्रदर्शित किया गया है। अनुच्छेद 51ए कुछ इस प्रकार है—

"भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह—

1. संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्र ध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

2. स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करनेवाले उच्च आदर्शों को हृदय में सँजोए रखे और उनका पालन करें;
3. भारत की प्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखे;
4. देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;
5. भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे, जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभाव से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे, जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध हैं;
6. हमारी सामाजिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे; प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;
7. वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे;
8. सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;
9. व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू ले;
10. यदि माता-पिता या संरक्षक हैं तो वह छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयुवाले अपने, यथास्थिति, बालक या प्रतिपाल्य के लिए शिक्षा के अवसर प्रदान करें, अत: शिक्षा का अवसर भारतीय संविधान की मूल आत्मा है।

स्व-पहचान और विश्वास प्रणाली के साथ एक राष्ट्र के निर्माण के लिए राष्ट्रीय मूल्यों का संस्थागतीकरण आवश्यक है, ताकि राष्ट्र-निर्माण और विकास का मार्गदर्शन किया जा सके। इसके अलावा राष्ट्रीय मूल्यों की पहचान और कार्यान्वयन राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक विकास को भी प्रेरित कर सकती है। राष्ट्रीय मूल्यों की शिक्षा में शिक्षा की व्यापक अर्थों में कल्पना

करना है। समाज में अपनी भूमिका निभाने में शिक्षा ही सबसे महत्त्वपूर्ण है। औपचारिक शिक्षा प्रणाली संस्कृति का हिस्सा है। प्रत्येक शिक्षा प्रणाली में मूल्यों को अनिवार्य रूप से संस्कृति द्वारा निर्धारित किया जाता है। शिक्षा को मानवता का दोहन करने के लिए एक उपकरण के रूप में देखा जाता है और परिणाम के रूप में यह कुछ हद तक व्यवहार संशोधन की एक विधि बन जाती है। शिक्षा सामाजिक मूल्यों को बदलने के बजाय संरक्षित करती है। शिक्षा को समाज के मौजूदा संस्कृति मानदंडों का पालन करते देखा जाता है, इसलिए शिक्षा को मूल्यों के निर्माण एवं निर्वहन का महत्त्वपूर्ण माध्यम माना जाता है।

राष्ट्रीय मूल्यों का अभाव राष्ट्र की एकता और अखंडता को अशक्त करता है। शांति और सद्भाव को क्षीण करता है। राष्ट्रीय मूल्यों और सिद्धांतों की अनुपस्थिति, राष्ट्र-निर्माण और विकास के प्रति नागरिकों के कार्यों को दिशाहीन कर देती है, इसलिए राष्ट्रीय मूल्यों की शिक्षा अनिवार्य है, क्योंकि राष्ट्रीय मूल्यों की शिक्षा का मुख्य उद्देश्य समाज को बढ़ावा देना है। राष्ट्रीय मूल्य किसी भी राष्ट्र के विश्वासों को, विश्वदृष्टि प्रतिमान को आकार देते हैं। नागरिकों के नैतिक आचरण को आकार देकर संस्थागत और व्यक्तिगत व्यवहार को परिभाषित करते हैं। राष्ट्र मूल्य नैतिकता और उत्पादकता पर सकारात्मक प्रभाव डालते हैं। देश के नेतृत्व की गुणवत्ता, प्रबंधन प्रथाओं और सभी स्तरों पर राष्ट्रीय संसाधन के उपयोग में सुधार लाने के लिए राष्ट्रीय मूल्य अहम भूमिका निभाते हैं। देशवासियों में सकारात्मक छवि को बढ़ावा देने के लिए भी राष्ट्रीय मूल्यों की आवश्यकता है। देशवासियों के मध्य राष्ट्रीय सामंजस्य और स्थिरता को बढ़ावा देने के लिए भी मूल्यों का समावेश अनिवार्य है। राष्ट्रीय मूल्य राष्ट्र की राज्य और गैर-राज्य दोनों संस्थाओं में सुशासन को सुनिश्चित करने में सक्षम है। राष्ट्र के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और पर्यावरणीय विकास में सुधार हेतु राष्ट्रीय मूल्यों का ज्ञान और निर्वहन आवश्यक है।

नागरिको में पारदर्शिता, जवाबदेही, विश्वास, धारणा को बढ़ावा दे, निवेश, धन और रोजगार सृजन के उच्च स्तर का नेतृत्व राष्ट्रीय मूल्यों से ही निर्देशित होता है। लोगों के जीवन की गुणवत्ता और मानक में सुधार की नीति और योजना राष्ट्रीय मूल्यों पर आधारित होती है।

भारत के राष्ट्रीय चिह्न राष्ट्रीय चेतना और धर्मनिरपेक्षता की भावना का आह्वान करते हैं। राष्ट्रीय चिह्न, जैसे कि राष्ट्र का ध्वज, राष्ट्रीय गान, राष्ट्रीय गीत आदि राष्ट्रीय प्रतीक होते हैं। राष्ट्रीय चिह्नों का सम्मान और संरक्षण प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है। उनका अनादर करना दंडनीय अपराध है।

राष्ट्रीय मूल्यों को स्थापित करने के तरीके

1. सफलता को सही ढंग से परिभाषित कर इस प्रश्न का उत्तर खोजने के लिए विद्यार्थी को प्रेरित करें क्या नैतिक और सफल होना संभव है?
2. राष्ट्रीय विश्वास और लोकाचार के उल्लंघन के लिए कानून और कठोर दंड का नियम बनाने से।
3. सच्चे नायकों को पहचान देकर और उनकी उपलब्धियों का जश्न मनाकर सच्चे आदर्शों को स्थापित कर।
4. नागरिकों को सुशासन की 'माँग' करने के लिए सशक्त बनाकर। उदाहरणत: लोकपाल या सूचना के अधिकार का ज्ञान और उपयोग।
5. मूल्य-आधारित शिक्षा प्रदान करके।
6. जीवन का अर्थ, ईश्वर का भय, उच्च उद्देश्य, सद्गुणों की खोज की शिक्षा देकर मूल्यों को पोषित करना।
7. मूल्य से समझौता न करने की शिक्षा देकर।
8. राष्ट्रीय आयोजनों को मनाकर, जैसे कि स्वतंत्रता दिवस।
9. विभिन्न शिक्षण तकनीकों का उपयोग करके राष्ट्रीय नायकों के जीवन के बारे में शिक्षित करके, शिक्षण तकनीक जैसे कि भूमिका निभाना, कहानी सुनाना, जन्मदिन का जश्न मनाना, आदि।
10. राष्ट्रीय अखंडता सुनिश्चित करने के लिए स्कूल में सभी धर्मों के सभी त्योहार मनाकर।
11. राष्ट्रीय प्रतीक का ज्ञान और उनके लिए सम्मान बढ़ाना भी राष्ट्रीय अखंडता के प्रति शिक्षा की जिम्मेदारी है।

एडबर्क कहते हैं—बुराई को बढ़ावा देने के लिए अच्छे लोगों का शांत रहना आवश्यक होता है, अत: शिक्षा का दायित्व है कि विद्यार्थी को बुरा नकारने

के साथ बुरा देख चुप न रहने की शिक्षा भी दे।

आज के परिप्रेक्ष्य में, जबकि भूगोलीकरण के कारण संपूर्ण विश्व तेजी से सिकुड़ता जा रहा है, राष्ट्रवाद की शिक्षा का महत्त्व पहले से कहीं अधिक बढ़ गया है। देश के हर नागरिक का कर्तव्य है कि वह 'जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' की भावना को मन में समाहित करते हुए अपने स्तर से सदैव राष्ट्रहित में संलग्न रहे। ये मूल्य शिक्षा द्वारा ही बालकों में डाले जा सकते हैं। निश्चित तौर पर हमें समझना है कि राष्ट्रीय मूल्य कभी भी मानव के विश्वबंधुत्व की भावना में बाधा नहीं डालते। प्रत्येक राष्ट्र उतना ही ऊँचा उठता है, जिस परिमाण में उस राष्ट्र के नागरिकों में देशप्रेम की भावना होती है।

□

7

भारतीय ज्ञान परंपरा में मूल्य-आधारित शिक्षा

प्राचीनकाल से ही भारत की गौरवगरिमा पूरे विश्व में संव्याप्त रही है। इसी ज्ञान-परंपरा की वजह से भारत 'विश्व गुरु' कहलाता आया है। भारत 'ज्ञान' शब्द का पर्याय माना जाता रहा है। इस भारतभूमि से उत्पादित ज्ञान संसार के कोने-कोने को चिरकाल से ही लौकिक करता आ रहा है। ज्ञान-विज्ञान की संपत्ति की समर्थता का कोई ऐसा पक्ष न था, जिससे इस देश के नररत्न सुसंपन्न न रहे हो। इस भारत भूमि की महान् उपलब्धियाँ इतनी आकर्षक और उपयोगी थीं कि संसार के कोने-कोने से लोग इन्हें सीखने-समझने आते थे। यही वह प्राचीन पवित्र धारा है, जहाँ तत्त्वज्ञान ने आकर इसे अपना निवासस्थान बनाया। यही वह भारतभूमि है, जहाँ के ज्ञान का आध्यात्मिक प्रवाह पूरी दुनिया पर अपना प्रभाव छोड़ता आया है। इसी आर्यावर्त्त की भूमि पर संसार के सर्वश्रेष्ठ ऋषियों की चरणरज पड़ी है, जिन्होंने भारत को पूरे संसार में ज्ञान का पर्याय बनाया व विश्व कल्याण के लिए अपना संपूर्ण जीवन समाज के नाम कर दिया। इसी भारतभूमि पर सबसे पहले मनुष्य, प्रकृति तथा अंतर्जगत् के रहस्योद्घाटन की जिज्ञासाओं का अंकुर फूटा था, जिसने इस ज्ञान-परंपरा को जन्म दिया। इसी परंपरा के तहत आत्मा का अमरत्व, सर्वव्यापी ईश्वर तथा मनुष्य के भीतर सर्वव्यापी, कण-कण में निवास करनेवाले परमात्मा विषयक मत-वादों का पहले पहल उद्भव हुआ। कहा जाता है, जब विश्व के अन्य देशों की सभ्यताएँ व परंपराएँ अपनी शैशव अवस्था में थीं, तब भारतभूमि में नालंदा, तक्षशिला तथा वल्लभी जैसे विश्वविद्यालय इस ज्ञान-परंपरा से जगमगा रहे थे, जो यहाँ आनेवाले दीपक रूपी छात्रों को प्रकाशित

कर रहे थे। सच्चे अर्थों में तो संपूर्ण भारत ही पूरे विश्व को अपने मूल्य-आधारित ज्ञान से प्रकाशित कर रहा था। भारत में ही धर्म और दर्शन के आदर्शों ने अपनी चरम उन्नति प्राप्त की थी। यही से उमड़ती हुई नदी की धारा ने धर्म, नीति और दार्शनिक तत्त्वों के कंकड़ों को बहाते हुए समग्र संसार को आप्लावित कर दिया था। इसी ज्ञान परंपरा ने धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष को इस अर्थ में गढ़ा कि संसार का अन्य ज्ञान इसके सामने फीका रह गया। यह वही भारत है, जो शताब्दियों से विदेशी आक्रांताओं के शत-शत आक्रमण और सैकड़ों बार लूटपाट के दश सहकर भी अक्षय बना हुआ है, जिसका मूल कारण भारत की वो ज्ञान चेतना व मूल्य हैं, जो आज भी कहीं-न-कहीं बिंदु स्वरूप में ही सही परंतु कण-कण में विद्यमान है। इसी ज्ञान परंपरा व मूल्यों की उपज होने की वजह से आज भी हम विश्व बंधुत्व व रामराज्य का सपना देखते हैं, जहाँ किसी भी प्रकार का ताप व संताप (दैहिक, दैविक, भौतिक) न हो। वैदिक काल में शिक्षा मात्र कर्मकांड से संबंधित नहीं थी, वरन् छात्र का जीवन के प्रति दृष्टिकोण विकसित हो जाए, वह सुसंस्कृत व सुचरित्र बन जाए, इस पर शिक्षा आधारित थी। यह भारत भूमि हमेशा से ही धार्मिक, आध्यात्मिक एवं नैतिक शिक्षा का केंद्र रही है व आज भी अपने इतिहास को गौरवान्वित करती हुई भविष्य के लिए भी एक आशा की किरण के तौर पर प्रकाशित होती रहेगी। भारतीय दर्शन के मूलभूत तत्त्व के रूप में 'कर्मयोग' हमेशा ही भारतीय जनमानस का पथ-प्रदर्शन करता रहा है एवं करता रहेगा। आज भी हमारी गौरवमयी परंपरा हमें सत्य की ओर बढ़ने की प्रेरणा देती है और अज्ञानरूपी अंधकार से दूर रहने का मार्ग बताती है। 'विद्या ददाति विनयम्' ध्येय को सिद्ध करना ही भारतीय ज्ञान परंपरा की मूल्य-आधारित शिक्षा का केंद्र बिंदु है। गुरु-शिष्य परंपरा व वाणी और मन की अक्षतता इसी मूल्य-आधारित ज्ञान परंपरा व शिक्षा का प्राणबिंदु है।

हिंदू धर्म के पवित्रतम ग्रंथ 'श्रीमद्भगवद्गीता' में ज्ञान परंपरा की महत्ता पर बल देते हुए स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा है, "न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते (4 : 48)।" अर्थात् इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र अन्य कुछ भी नहीं है। छात्रों में ज्ञान के मूल्य को स्थापित करने के साथ ही हमें यह भी स्पष्ट करना होगा कि यह ज्ञान शक्ति प्रदर्शन हेतु या किसी अन्य व्यक्ति या राष्ट्र पर

अपना वर्चस्व स्थापित करने की कामना से नहीं वरन् स्वयं को संयमित रखने व अपनी पाशविक प्रवृत्तियों (जो कि प्रत्येक मानव में स्वाभाविक रूप से रहती है) के क्षरण के लिए होना चाहिए, इसी में ज्ञान की सार्थकता है।

विश्व में सर्वप्रथम मानव मूल्यों से आप्लावित ज्ञान की किरण भारत से ही प्रस्फुटित हुई। सबसे पहले ऋग्वेद की अपुरुषेय रचना हुई, उसके उपरांत अन्य वेद उपनिषद् व दर्शनशास्त्रों की रचना हुई। वेद शब्द का अर्थ ही ज्ञान है। वैदिक काल के नाम से विख्यात वह स्वर्णिम युग भारत को युग-युगांतर तक ज्ञान की ज्योति से प्रकाशित करता रहेगा। विद्या-अध्ययन के केंद्र गुरुकुल थे। जहाँ गुरु को सर्वपूज्य मानकर 'महेश्वर' का दर्जा देकर वंदना की जाती थी। गुरु शिष्य में प्राय: पिता-पुत्र का संबंध होता था। गुरु अपने शिष्य को निस्स्वार्थ भाव से शिक्षा प्रदान करके उसके सर्वांगीण विकास को अपना परम ध्येय समझते थे। गुरु अपने अंदर विद्यमान समस्त परा व अपरा विद्या को शिष्य को प्रदान करते थे। शिष्य भी अपने गुरु को सर्वस्व मानकर उस शिक्षा को तत्परता और तल्लीनता से ग्रहण करते थे। भारतीय उस ज्ञान को अधूरा व छिछला मानते थे, जो ज्ञान आत्मदर्शन कराने में समर्थ न हो। शिक्षा का मूल उद्देश्य सभी ऋणों से मुक्त होकर मोक्ष प्राप्त करना था।

"कस्त्वं कोऽहं कुत आयात: को मे जननी का मे तात:" (भजगोविंदम आदि शंकराचार्य), इन प्रश्नों के उत्तर भी केवल भारतीय ज्ञान ही प्रदान कर सकता है। भारतीय ज्ञान का केंद्रीय तत्त्व है—अध्यात्म। भौतिकता के साथ आध्यात्मिकता का समन्वय यहाँ की सर्वोपरि विशेषता है, जिसे कहीं अन्य नहीं देखा गया है। यहाँ 'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा' का सूत्र भोग के साथ-साथ त्याग करने की प्रेरणा व मूल्य भी प्रदान करता है। भारतीयों की आध्यात्मिक व नैतिक चेतना ही उनका जीवन रक्त है।

भारत की राजनीति भी प्राचीनकाल से ही मूल्यों की राजनीति है। चाणक्य नीति का स्थान इस क्षेत्र में सर्वोपरि है, प्रजा का हित अथवा प्रजातंत्र का मूल्य ही भारतीय राजनीति की मूल अवधारणा है। प्राचीनकाल से लेकर आधुनिक काल तक न्याय व्यवस्था का स्वरूप लगभग समान है। जहाँ न्याय के तराजू का आधार केवल व केवल सत्य है। न्याय की दृष्टि में राजा व प्रजा समान है।

यहाँ पर विज्ञान आज की खोज या देन नहीं माना जाता है। यह अत्यंत प्राचीन विद्या है। भारतीय ऋषियों व मनीषियों ने जो ज्ञान का भंडार अपनी योग शक्ति द्वारा समस्त मानवजाति को विभिन्न ग्रंथों के रूप में प्रदान किया है, उसका ऋण कोई भी नहीं चुका सकता। आज का विज्ञान प्रकृति के दोहन व शोषण को बढ़ावा देता है, परंतु प्राचीन विज्ञान प्रकृति के साथ समन्वय बनाकर आत्मीयता व नैतिकता को संबल प्रदान करनेवाला था। प्राचीन भारत में प्रकृति के प्रत्येक घटक की महत्ता सिद्ध करने व उसके संरक्षण, संवर्धन करने हेतु उसको जनमानस की आस्था से जोड़ दिया गया था। भारत की सबसे बड़ी नदी गंगा को माता के समान जीवनदायिनी मानकर पूजने के पीछे यही कारण है। पर्यावरण संरक्षण का मूल्य ही था कि हिंदू दर्शन में एक वृक्ष को दस पुत्रों के समान माना गया है—

'दशकूपसमा वापी दशवापीसमो ह्रदः।
दशह्रदेसमः पुत्रो दशपुत्रसमो द्रुमः॥'

आज वृक्षारोपण के महत्त्व अर्थात दस कुँओं के बराबर एक बावड़ी होती है दस बावड़ी के बराबर एक सरोवर, दस सरोवर के समान एक पुत्र एवं दस पुत्रों के समान एक वृक्ष का महत्त्व होता है व लाभ की पूरा विश्व सराहना कर रहा है। वैदिक वाङ्मय में स्पष्ट उल्लेख मिलता है कि "वृक्षाद् वर्षति पर्जन्यः पर्जन्यादन्नसम्भवः", अर्थात् वृक्षारोपण से वर्षा होती है एवं वर्षा से अन्न उत्पन्न होता है। प्रकृति संरक्षण का यह मूल्य भारतीय ज्ञान-परंपरा द्वारा विश्व को प्रदान की गई अनुपम भेंट है।

जीवन के विविध पक्षों को जानने एवं इस पर सार्थक प्रयोग करने के लिए जीवन विज्ञान का उपयोग अत्यंत पुरातन है, जो समस्त विश्व को भारत की ही देन है। भारत और भारतीय ज्ञान मूल्य-आधारित है, जो कि एक अजेय शक्ति है। यही भारतीय शिक्षा का प्राचीनकाल से आधारभूत तत्त्व रहा है। जो भारतीयों को मूल्यों के साथ जीवन जीने की शिक्षा देता है व 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना को बल प्रदान करता है। भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षा का अंतिम लक्ष्य जीवन-यापन के साथ ही आत्मा के अमरत्व को प्राप्त कर परमात्मा में मिल जाना व 'सत्यं, शिवं, सुंदरम्' को साकार कर जीवन के परम उद्देश्य सत्-चित्-आनंद को प्राप्त करना है।

ज्ञान, परंपरा व मूल्य-आधारित शिक्षा

प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा व शिक्षा प्रणाली अपने आप में अनुपम है। शिक्षा का जो सबसे मुख्य पहलू है, वह है छात्रों में मूल्यों का विकास करना, क्योंकि ज्ञान, अनुशासन व मूल्यों के बिना उनके जीवन का मर्म ही खो जाएगा, परिणामस्वरूप धीरे-धीरे पूरे समाज की नींव खोखली होती जाएगी। वह मनुष्य होते हुए भी पशुत्व जीवन जीने के लिए मजबूर हो जाएगा। भारतीय ग्रंथ, वेद, पुराण, उपनिषद्, नीति शास्त्र, ज्ञान, अनुशासन, सहनशीलता, परोपकार, शांति, धर्मपरायणता व कर्म का संदेश देते हैं, जो कि किसी भी समाज को प्रगतिशील बनाने में सहायक होता है। प्राचीनकाल से ही भारतीय गुरुकुल परंपरा का शिक्षा प्रणाली में अनूठा स्थान है। भले ही आज आधुनिकता की दौड़ में यह गुरुकुल प्रथा कहीं लुप्त हो गई है, लेकिन वापस वही गौरवमयी इतिहास प्राप्त करने के लिए समाज को गुरुकुल शिक्षा पद्धति को वर्तमान समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप ढालकर किसी अन्य रूप में अवश्य अपनाना चाहिए व मूल्य-आधारित शिक्षा के प्रकाश-पुंज से भारतीय परंपरा व गौरव को उज्ज्वल करना चाहिए। मूल्य-आधारित शिक्षा छात्रों के चरित्र-निर्माण में सहायक होगी।

मूल्य-आधारित शिक्षा का अर्थ है, वह शिक्षा जिससे मानव-जीवन का पूर्ण एवं सर्वांगीण विकास हो सके। मूल्य-आधारित शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् छात्र के अंदर धर्म, अर्थ, ध्यात्म, ज्ञान व नैतिकता की चेतना आ सके, उसका आचरण समाज के अनुकूल हो। वह अपना व समाज दोनों के लिए ही हितकर सिद्ध हो सके। मूल्य-आधारित शिक्षा प्राप्त कर व्यक्ति सांसारिक व पारमार्थिक विकास को उपलब्ध कर सके। यही प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा थी, जिसके अंतर्गत गुरु अपने शिष्य को एक कुम्हार की तरह कच्ची मिट्टी से सुंदर बरतनों का आकार प्रदान करता था, अर्थात् उसका सर्वांगीण विकास करके उसे भौतिक व अलौकिक शांति के पथ पर अग्रसर करता था। छात्र भी स्वयं को विश्व शांति के दूत के रूप में प्रतिष्ठित करते थे। धर्म, अर्थ काम और मोक्ष के मध्य समन्वय बनाने की कला भारतीय शिक्षा प्रणाली सिखाती थी, परंतु आज विडंबना इस बात की है कि इन चार स्तंभों में समन्वय न बनाते हुए केवल अर्थ व काम पर ही कार्य किया जाता है, जिससे हमारे मूल्यों का धीरे-धीरे ह्रास होता जा रहा है।

मूल्य-आधारित शिक्षा के तहत गुरुकुलों में वेदों का अध्ययन कराया जाता था। सच का आचरण रखते हुए दान, तप, यज्ञ को छात्रों को अपने दैनिक जीवन में अपनाना होता था। समाज के लिए बने नियमों का उत्कृष्ट ग्रंथ मनुस्मृति छात्रों को धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इंद्रिय निग्रह, सत्य व अक्रोध की शिक्षा देता है। जिससे छात्र अपने जीवन में कभी असफल न हों। उपनिषद् 'दया', 'दमयता' व 'दयाध्वम' को जीवन मूल्यों के रूप में अपनाने की ओर पथ-प्रदर्शित करता है। वैदिक काल के पश्चात् बौद्ध व जैन दर्शन में भी मूल्य-आधारित शिक्षा पर विशेष बल दिया गया। बौद्ध व जैन दर्शन भी सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य जैसे महान् मूल्यों को अपनाने की शिक्षा देता है। इसके अतिरिक्त वेदांत दर्शन भी मूल्यों को ही महत्त्व देता है। जीवन में मित्रता, करुणा, उपकार, जीवों पर दया भारतीय ज्ञान परंपरा की शिक्षा प्रणाली के मुख्य आधार बिंदु रहे हैं।

श्रीमद्भगवतगीता, जो कि ईश्वर की स्वयं की वाणी हैं, जो पूरी मानव सभ्यता के लिए एक अनुपम भेंट है, वह भी नैतिक मूल्यों को अपनाते हुए धर्मपरायण व निष्काम कर्म करने की प्रेरणा देती है। 'अहम से वयम' की यात्रा करना ही मूल्य-आधारित शिक्षा का ध्येय है। भारतीय परंपरा, मातृदेवो, पितृदेवो व अतिथिदेवो भव: की सीख देती है, जिस पर चलकर मनुष्य समाज एक उत्कृष्ट जीवन-शैली को प्राप्त कर सकता है। भारतीय मूल्यों में परोपकार का सदैव उच्च स्थान रहा। बिना किसी प्रतिकार की आशा करते हुए दूसरे पर उपकार के मूल्य की ग्रंथों में प्रशंसा की गई है। 'अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचयद्दयम्, परोपकार: पुण्याय पापाय परपीड़नम्।' इन्हीं मूल्यों पर चलकर आज भी वास्तविक शांति एवं प्रसन्नता प्राप्त की जा सकती है।

आधुनिक शिक्षाविदों ने भी मूल्य-आधारित शिक्षा को अपनाने पर बल दिया है। स्वामी विवेकानंद, महात्मा गांधी, श्री अरविंद आदि सभी विद्वान् भारतीय ज्ञान परंपरा को अपनाने पर बल देते हैं। स्वामी विवेकानंद के मतानुसार छात्रों के अंदर निहित प्रतिभा को मूल्य-आधारित शिक्षा द्वारा सींचकर बाहर निकालने को ही सही अर्थों में शिक्षा कहना उचित होगा। महात्मा गांधी भी छात्रों को स्वावलंबी बनने की तालीम देकर देश व समाज के लिए हितकर बनने को ही शिक्षा का अर्थ मानते थे। श्री रवींद्रनाथ ठाकुर भी एक ऐसे समाज की कल्पना करते हैं, जहाँ मनुष्य

सभी प्रकार के भयों से मुक्त होकर एक शांतिपूर्ण जीवन जी सकें। श्रीअरविंद भी मूल्य-आधारित शिक्षा पर बल देते हैं, उनके अनुसार, "जबसे जीवन-मूल्यों का शिक्षा से विद्रोह हो गया है, तब से देशवासी धर्मभ्रष्ट तथा लक्ष्यभ्रष्ट हो गए हैं।" सन् 1947 में भारत को अंग्रेजों की गुलामी से स्वतंत्रता प्राप्त करने के पश्चात् आए हुए शिक्षा आयोगों ने भी मूल्य-आधारित शिक्षा को उचित ठहराते हुए महत्त्वपूर्ण सुझाव दिए। राधाकृष्णन आयोग (1948-49) ने धर्मनिरपेक्षता, आध्यात्मिक ज्ञान व नैतिक मूल्यों पर विशेष बल दिया। इस आयोग ने 'ध्यान' को विशेष रूप से विद्यालयों को अपनाने का सुझाव दिया। छात्रों को धर्मग्रंथों का सार पढ़ाने का भी सुझाव इस शिक्षा आयोग द्वारा दिया गया। उसके पश्चात् आए 'मुदालियर आयोग' (1952-53) ने भी विद्यालयों में सामूहिक प्रार्थना व प्रेरक-प्रसंगों को छात्रों के दैनिक जीवन में समावेश करते हुए उनके चरित्र-निर्माण पर बल दिया। 'कोठारी आयोग' (1964) के अनुसार भी छात्रों के नैतिक, आध्यात्मिक व चारित्रिक गुणों के विकास पर विशेष बल दिया गया।

आज के आधुनिक दौर में भारतीय ज्ञान प्रणाली लुप्त होती जा रही है। शिक्षा केवल व्यवसायपरक होकर छात्रों को जीवन में अर्थ के पीछे भागने पर बल दे रही है। भारतीय ज्ञान-परंपरा में मूल्य-आधारित शिक्षा का उद्देश्य मुख्य रूप से ईश्वर भक्ति व आध्यात्मिकता का विकास, सत्यं, शिवं, सुन्दरम् की अनुभूति चरित्र-निर्माण, व्यक्तित्व के सभी आयामों का विकास, सामाजिक कर्तव्यों का विकास, राष्ट्र की परंपरा व संस्कृति का संरक्षण, ज्ञानवान बनने व बनाने पर बल, धर्मपालन व सत्याचरण का अनुसरण, शांतिपूर्ण व सुखद समन्वय स्थापित करना, विद्या और बुद्धि का समन्वय, ज्ञान व कर्म के मध्य संबंध स्थापित करना था। सही मायनों में भारतीय ज्ञान-परंपरा की यह शिक्षा नीति अपने आप में पूर्ण है, जो मनुष्य को इहलोक से परलोक तक की यात्रा को सुगमता से पूर्ण करने योग्य बनाती है। मूल्य-आधारित शिक्षा व्यक्ति को पूर्णता प्रदान करती है। इन मूल्यों से युक्त होकर व्यक्ति कभी भी अज्ञान रूपी अधर में नहीं फँसता है, वरन् 'विश्व बंधुत्व' व 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' का ध्येय वाक्य लेकर जीवन-पथ पर धर्म का साथ देते हुए आगे बढ़ता है। यह हमारे ज्ञान-परंपरा की ही देन है कि आज भी भारत देश अपनी गौरवमयी गरिमा के साथ दिव्य रूप में पूरे संसार में जगमग है व 'विश्व गुरु' की संज्ञा रखता है।

भारतीय दर्शन और पाश्चात्य दर्शन

शिक्षा को भारतीय दर्शन में आत्मज्ञान की उपलब्धि का आधार माना जाता रहा है। को 'अहम्' से 'सो' अहम्' तक का अन्वेषय तथा पर्यवेक्षण ही भारतीय दर्शन की देन है। भारतीय दर्शन ने भौतिकता के मायाजाल से ऊपर उठकर परमतत्त्व की खोज पर बल दिया। जहाँ पाश्चात्य दर्शन केवल दुनिया के बनने व इस तत्त्वों की खोज में लगे रहने के कारण भौतिकवाद की ओर चला गया, जिसके कारण पाश्चात्य जगत् में मूल्यों का कोई आधार नहीं रह गया। भारतीय दर्शन जीवन की वास्तविकता, जीवन का उद्देश्य और बाह्य माध्यमों में न फँसकर आंतरिक चिंतन पर बल देता है, सत्य की खोज ही भारतीय दर्शन की नींव है, जहाँ पाश्चात्य दर्शन के लिए किसी चीज को पाना ही सर्वोपरि है। भारतीय दर्शन त्याग तो पाश्चात्य दर्शन पाने की अवधारणा देता है। भारतीय दर्शन की महानता यह भी है कि पाश्चात्य जगत् भी कई मायनों में इसे अपनाने से अछूता नहीं रहा। भारतीय दर्शन में भी नास्तिक दर्शन व भौतिकता (चार्वाक दर्शन) विद्यमान है, परंतु फिर भी वह अस्तित्ववाद की तरह पूर्ण रूपेण खोखला नहीं है, जो मनुष्य को अथाह अंधकार में डूबा रहा है।

भारतीय दर्शन का मूल आधार यहाँ के वेद है, जो मनुष्य को 'सत्यं वद' व 'मनुर्भव:' का संदेश देते हैं, न कि पाश्चात्य दर्शन की तरह संसार के अस्तित्व पर ही प्रश्नचिह्न लगाते हैं। भारतीय दर्शन में स्वतंत्र दृष्टिकोण है, जो किसी भी व्यक्ति को सीमित से असीमित की ओर ले जाने का प्रयत्न करता है। जीवन के विविध पक्षों को जानने एवं इस पर सार्थक प्रयोग करने का जज्बा ही भारतीय दर्शन की पुरातन देन है। अमृततत्त्व को प्राप्त करना व 'अहं ब्रह्मास्मि' को साकार करना ही भारतीय ज्ञान-परंपरा की शिक्षा नीति का प्रमुख गुण है।

मूल्य-आधारित शिक्षा का उद्देश्य

भारतीय परंपरा में मूल्य-आधारित ज्ञान को सर्वोच्च स्थान देने का प्रश्न भी विचारणीय है। मूल्य-आधारित शिक्षा ही क्यों? इस प्रश्न का उत्तर बहुत ही स्पष्ट है, क्योंकि भारतीय दर्शन में शिक्षा के बहुआयाम हैं। शिक्षा व्यक्ति को धनोपार्जन करने का मार्ग मात्र नहीं बताती, बल्कि 'सा विद्या या विमुक्तये', अर्थात् विद्या वही जो सभी बंधनों से मुक्त कर दे, का व्यापक मार्ग दिखाती करती है। भारतीय

ज्ञान–परंपरा के अनुसार जो वृत्त मानव को असत्य से सत्य, कुमार्ग से सन्मार्ग, अज्ञान से ज्ञान व मरण से जीवन की ओर ले जाती है, वही मूल्य–आधारित शिक्षा नीति है। मानव की श्रेष्ठता उसकी बुद्धि और आचरण पर निर्भर करती है। भारतीय ज्ञान व्यक्ति में नीति, धर्म और चरित्र का निर्माण करता है। मनुष्य जीवन में धर्म व नीति का संयुक्त संगठन ही चरित्र है, जो केवल मानवीय मूल्यों के विकास से ही संभव है। मनु के द्वारा कथित दस लक्षण धृति, क्षमा, दान, अस्तेय, शौच, इंद्रिय निग्रह, धी, विद्या, सत्य एवं अक्रोध आदि चरित्रवान् के लक्षण हैं। इस ज्ञान की धरती पर अनेक विद्वान् और विदुषियों ने जन्म लिया है, जिन्होंने अपने मूल्यों और आचरण के कारण विश्वपटल पर अपनी अलग ही छाप छोड़ी है। सीता, अनसूया, अहल्या, गार्गी, अपाला आदि गुणवती महिलाएँ स्त्रियों के लिए हमेशा से ही आदर्श रही हैं। पुरुषों के आदर्शों में स्वयं श्रीराम है। भारतीय संस्कृति, परंपरा, इतिहास, धार्मिक व आध्यात्मिक ग्रंथ अपने साथ हिमालय की सी ऊँचाई व महासागरों सी गहराई को समाते हुए जनमानस के लिए अद्वितीय उपहार है, जो हर संकट व आपदा–विपदा से उबरने का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

भारत का बदलता परिवेश

आधुनिकता के दौर में भारतीयों का अपने ज्ञान–परंपरा व मूल्यों को भूल जाना आज भारतीय समाज के लिए सबसे बड़ी समस्या बनता जा रहा है। आज विद्यार्थी एक प्रशिक्षार्थी बनकर रह गया है। वह ज्ञानार्जन नहीं वरन् जीवन–यापन हेतु प्रशिक्षण मात्र प्राप्त कर रहा है। पाश्चात्य जगत् की चकाचौंध भरी जिंदगी किशोरों के लिए आकर्षक बनती जा रही है, जिससे वे अपनी जड़ों को भूलते जा रहे हैं। जिस कारण उनका जीवन केवल व्यावसायिक शिक्षा में पढ़कर खोखला होता जा रहा है और वे अपने जीवन का मर्म खोते जा रहे हैं। मनुष्य के चरित्र का निर्माण माता के गर्भ से ही होना शुरू हो जाता है, उसके बाद उसकी शैशवावस्था अनुकरणी अवस्था होती है, फिर आती है किशोरावस्था, जो अत्यंत संवेदनशील अवस्था होती है। इस अवस्था में बालक का मानसिक, शारीरिक, बौद्धिक व भावनात्मक विकास सबसे अधिक होता है। यही वह अवस्था है, जब बालक के भीतर मानवीय मूल्यों का समावेश हो सकता है, जिसके लिए भारतीय पुरातन

ज्ञान-परंपरा से बालक को रू-ब-रू कराना अत्यंत आवश्यक है, परंतु आज आवश्यकता है कि मूल्यों का समावेश इस प्रकार किया जाए कि जो छात्र को आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में आत्मचिंतन की ओर ले जा सके, केवल उसे बिना सोच-समझ वाला रेस का घोड़ा बनने से बचाए। मूल्य-आधारित शिक्षा ही छात्र को संवेदनशील, चैतन्य मानव बना सकती है।

कई देशों की आधुनिक मूल्यरहित शिक्षा प्रणाली के कारण ही आज संपूर्ण विश्व में छात्र कम उम्र में अपनी चेतना खो रहे हैं और आत्महत्या, आतंकवाद, लूटपाट, व्याभिचार, नशा इत्यादि अंधकार की ओर बढ़ते चले जा रहे हैं, इसका एकमात्र कारण मूल्यविहीन शिक्षा प्रणाली का होना है, जिसके कारण छात्र स्वयं का आत्मघात कर रहे हैं। प्राचीन भारतीय ज्ञान प्रणाली में छात्रों को इस विष से बचाने के लिए अमृतरूपी गुरु होते थे, जिनकी छत्रच्छाया में छात्र आत्मबल प्राप्त करते थे, गुरु उन्हें जीवन की हर कसौटी को पार करने के लिए उपयुक्त बनाते थे। वेद-शास्त्रों व मूल्यों के द्वारा उन्हें सशक्त बनाया जाता था। उन्हें ऋग्वेद की संहिता, "सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्। देवाभागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते॥" (इष भास्य) अर्थात सायं-सायं एक स्वर में बोले। हमारा मन एक जैसा हो हमारे विचार समान हो। हम मिलकर रहे। प्राचीन समय में हमारे देवताओं का यही आचरण था हम ऐसा ही आचरण करें। जनमानस के हृदय में समरस होने को बढ़ावा देता है। आज भी यह संभव है बशर्ते फिर से पवित्र गंगारूपी ज्ञानधारा से छात्रों को अवगत कराया जाए। भारत के असीम, अद्वितीय और अनंत ज्ञानधारा को छात्रों के मन-मस्तिष्क में आरोपित करके उन्हें पाश्चात्य जगत् का अनुकरण करने से रोकना होगा, जिससे वो अपनी जड़ों को फिर से प्राप्त कर सकें।

छात्रों के अंदर मूल्य-आधारित शिक्षा का समावेश करके उन्हें धैर्यवान, संयमी, परोपकारी, मानवतावादी व आत्मचिंतन करनेवाला बनाकर, भारतीय ज्ञान-परंपरा को आगे बढ़ाया जाए व आधुनिकता की चकाचौंध के दलदल से बाहर निकाला जाए। छात्र अपने मूल्यों व ज्ञान-परंपरा को समझने वाले बनें व भारत भूमि को फिर से एक बार 'विश्वगुरु' के रूप में सिरमौर बनाएँ तथा 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की अवधारणा का पुनः मार्ग प्रशस्त हो।

□

8

वैश्विक चुनौतियाँ और मूल्यपरक शिक्षा

"अयं बन्धुरयं नेति गणना लघुचेतसां उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्,"

अर्थात्के वल क्षुद्र बुद्धि के व्यक्ति ही यह कहते हुए भेदभाव करते हैं कि यह मेरा है, यह मेरा रिश्तेदार है और वे अजनबी हैं, परंतु जो लोग कुलीन आचरण के हैं (या जो परम सत्य को जानते हैं) उनके लिए पूरी दुनिया एक परिवार है।

'वसुधैव कुटुम्बकम्' वाक्यांश तीन संस्कृत शब्दों की संधि से बना है। वसुधा + इवा + कुटुम्बकम् यहाँ वसुधा का अभिप्राय है, पृथ्वी अथवा दुनिया, इवा अर्थात् जैसे और कुटुम्बकम् मतलब बड़े अथवा विस्तारित परिवार। इस छंद का उल्लेख महा उपनिषद् (VI. 72) में मिलता है। यह भारत के हितोपदेश और अन्य साहित्यिक पुस्तकों में निर्दिष्ट हैं। 21 वर्षों के अल्प अंतराल में दो विश्व युद्धों के कारण राष्ट्रों को दृढ़ विश्वास हो गया था कि एक स्थायी शांति बनाने के लिए राजनीतिक और आर्थिक समझौते पर्याप्त नहीं हैं। मानव की नैतिक और बौद्धिक एकजुटता के आधार पर ही शांति स्थापित हो सकती है, अत: 1945 में संयुक्त राष्ट्र का एक घटक निकाय, संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन यूनेस्को (UNESCO) की स्थापना की गई। यूनेस्को के संविधान की प्रस्तावना इस तथ्य को निम्नलिखित शब्दों में वर्णित करती है—

"क्योंकि युद्ध पुरुषों के मन में ही सर्वप्रथम शुरू होते हैं, इसलिए पुरुषों के मन में शांति द्वारा बचाव अवश्य किया जाना चाहिए।" यह सर्वविदित तथ्य

है कि विश्व में वैश्वीकरण का प्रारंभ पूँजीवादी तथा औद्योगिक क्रांति के साथ हुआ, किंतु कालांतर में यह शोषण का दर्शन बनकर रह गया है। आवश्यकता है भारतीय सभ्यता में स्थापित उच्चादर्शों, मूल्यों को समकालीन समस्याओं एवं चुनौतियों के संदर्भ में रखकर देखा जाए। वैश्विक दृष्टि से संपन्न मानवीय मूल्यों एवं तकनीकी उपलब्धियों को आत्मसात् करते हुए उन आदर्शों, मूल्यों को स्थापित किया जाए, जो भौतिकवादी आदर्शों से उत्पन्न अंतर्विरोधों से संपूर्ण मानवता को बचा सकें।

विकास के वर्तमान मॉडल ने मनुष्य के लिए ही नहीं, बल्कि समूचे प्राणिमात्र के लिए ही अस्तित्व का संकट खड़ा कर दिया है। पर्यावरण ह्रास, प्रदूषण के स्तर में वृद्धि, वैश्विक तपन व जलवायु परिवर्तन, बेरोजगारी, आतंकवाद, जनसंख्या वृद्धि, जैसी घटनाओं के कारण समूची पृथ्वी का अस्तित्व ही संकट में पड़ता जा रहा है। नैतिक संस्कृति एवं मानवीय मूल्यों में गिरावट तथा पारिवारिक एवं सामुदायिक जीवन के ह्रास ने स्थिति को और अधिक खराब बना दिया है। अकेलापन, सूनापन, व्यभिचार, नशाखोरी, स्वच्छंदता, तनाव, अवसाद से ग्रस्त जीवन तथा सामाजिक संघर्षों की बढ़ती प्रवृत्तियाँ, एवं घटनाएँ समुचित सामाजिक ताने-बाने को ध्वस्त करती जा रही हैं। इसके परिणामस्वरूप भाव व भावनाएँ, मानवीय संबंध और संवेदनाएँ भी प्रदूषित होती जा रही हैं।

इसके अलावा समूचे संसार में आतंकवाद, उग्रवाद, अलगाववाद, हिंसाचार, मतांतरण, कठमुल्लापन, भोगवाद एवं अनाचरण की प्रवृत्तियाँ तेजी से बढ़ती जा रही है। वर्तमान वैश्विक परिदृश्य अनेक विरोधाभासों एवं विसंगतियों का पिटारा है। पिछली दो शताब्दियों के दौरान मनुष्य ने विज्ञान की सहायता से भौतिक क्षेत्र में अनेक असाधारण उपलब्धियाँ हासिल की हैं, जीवन की सुख-सुविधाओं के लिए अनेक उपकरण विकसित हुए हैं। यातायात एवं संचार क्षेत्र में हुई क्रांति ने समूचे विश्व की दूरी को इतना कम कर दिया है कि अब वैश्विक ग्राम (Global Village) की चर्चा होने लगी है। हिंसा, असमानता, बहिष्कार और संप्रदायवाद, जैसी वैश्विक चुनौतियों के बढ़ने से एक व्यापक सामाजिक असहिष्णुता भी पैदा हुई है, जो मानवता को अलग करती है। इन से लड़ने के लिए सबसे सशक्त अस्त्र है शिक्षा। वह शिक्षा जो लोगों को एक-

दूसरे को समझने और स्थायी शांति बनाने के लिए एक साथ काम करने का समर्थन कर विविधता और भविष्य की पीढ़ियों के लिए एक सुरक्षित दुनिया बनाने का केंद्रबिंदु बन सके। इस दिशा में मूल्यपरक शिक्षा का दायित्व है कि वह समन्वित, सहयोगी सुसंचरित के साथ-साथ करुणामय हृदय और शांतिमय सह-अस्तित्व के लक्ष्य हेतु मार्गदर्शन करे।

मौजूदा समय की सबसे बड़ी चुनौती यह है कि मनुष्य के बीच दूरियाँ बढ़ रही हैं। मन का संताप, अवसाद व तनाव का घेरा गहरा होता जा रहा है। मन का संतोष एवं आनंद विलुप्त हो रहा है। विभिन्न दर्शनों, सिद्धांतों एवं नीतियों की आधार भूमि खिसकती जा रही है। समस्याओं के समाधान के प्रयास विफल हो रहे हैं, बल्कि नित नई समस्याएँ खड़ी कर रहे हैं। ऐसे में प्रश्न उठता है कि हमारे चिंतन की दिशा तो नहीं भटक गई, लगता तो ऐसा ही है। ऐसी स्थिति में भारतीय चिंतन की आधारभूमि का सहारा लेकर भारत के समाज वैज्ञानिकों को विश्व मंगल के लिए एवं वैश्विक चुनौतियों का सामना करने के लिए मूल्यों पर आधारित शिक्षा का चिंतन करना अति आवश्यक हो गया है।

वैश्विक चुनौतियाँ वे हैं, जिनके द्वारा आधुनिक विश्व की मानवजाति का सामना जटिल समस्याओं से होता है। यह मुद्दे वास्तव में हमारे अस्तित्व पर संकट उत्पन्न कर देते हैं। अन्य शब्दों में वैश्विक समस्याओं का अंतर्संबंध एक ऐसे तंत्र से है, जिसमें व्यक्तिगत तत्त्वों का समावेश होता है तथा जो मानवता पर मँड़राते हुए खतरे व पृथ्वी पर मानव जीवन के खिलाफ स्पष्ट रूप से सह-संबंधित है। एकजुट होकर ही हम इस वैश्विक चुनौती का सामना कर सकते हैं। धार्मिक व नैतिक जीवन द्वारा हम स्वयं को सुधार सकते हैं और राष्ट्र, समाज एवं विश्व को भी उन्नति के मार्ग पर ले जा सकते हैं। आवश्यकता है तो मूल्यपरक शिक्षा द्वारा स्वयं के आत्मशोधन की।

सी.एस. लेविस के अनुसार, 'मूल्य रहित शिक्षा मनुष्य को एक चतुर शैतान बना देती है। लेविस का यह कथन आधुनिक शिक्षा प्रणाली पर सत्य सिद्ध होता है। शिक्षा के वैश्वीकरण, बाजारीकरण, शिक्षकों की वर्तमान स्थिति, शिक्षा में अधिक पाश्चात्यकरण, धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा के अभाव में वर्तमान साक्षर व्यक्ति केवल किताबी ज्ञान तक सीमित है। जिसमें प्रेम, सौहार्द, विनम्रता,

भ्रातृत्व, स्नेह दया, समर्पण आदि मूल्यों का सर्वथा अभाव है। वह केवल एक चतुर आत्मकेंद्रित भौतिकवादी व्यक्तित्व ही रह गया है। सत्य ही कहा गया है कि शिक्षा हमें केवल ज्ञान प्रदान करती है, पर मूल्य-आधारित शिक्षा हमें ज्ञान के साथ-साथ विवेक भी प्रदान करती है। विचारकों का मत है कि मूल्य को ग्रहण किया जाए न कि पढ़ाया जाए। मूल्य शिक्षा भावनाओं एवं संवेग के विकास से संबंधित है।

स्वामी विवेकानंद ने भी मूल्यों को पूरी तरह से आवश्यक माना। स्वामी विवेकानंद के अनुसार, "शिक्षा आपके मस्तिष्क में डाली जानेवाली सूचना मात्र नहीं है। हमारे पास जीवन-निर्माण, मानव-निर्माण, विचारों का सृजन, चरित्र-निर्माण और विचारों को आत्मसात् करने की क्षमता होनी चाहिए। यदि आपने इन पाँच विचारों को संचित कर लिया और उन्हें अपना जीवन और चरित्र बना लिया है तो आपके पास किसी भी ऐसे व्यक्ति की तुलना में अधिक शिक्षा है, जो पूरे पुस्तकालय को कंठस्त कर चुका है। यदि शिक्षा और सूचना समान होते तो पुस्तकालय दुनिया में सबसे बड़े संत होते और विश्वकोश ऋषि होते।"

गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर, अंतरराष्ट्रीय सहकारिता को बढ़ावा देने और वैश्विक नागरिक बनाने के उद्देश्य को शिक्षा की एक प्रणाली बनाने का विचार रखते थे। इस दिशा में टैगोर ने एक ऐसी शिक्षा की परिकल्पना की थी, जो निकटवर्ती परिवेश में गहराई से निहित थी, लेकिन व्यापक दुनिया की संस्कृतियों से जुड़ी थी, जो आनंददायक शिक्षा पर आधारित थी और बच्चे के व्यक्तित्व के लिए आवश्यक थी। वैश्विक नागरिक के निर्माण हेतु उन्होंने शिक्षा के उद्देश्यों में मानवता के लिए प्यार, अंतरराष्ट्रीय समझ और सार्वभौमिक भाईचारे का समर्थन किया। उन्होंने शिक्षा द्वारा एकता का अहसास उत्पन करने की बात भी की। इसके साथ ही गुरुदेव ने विश्व शांति के मूल्यों को भी शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बताया है। इस दृष्टि से शांति के लिए रचनात्मक शिक्षा का उद्देश्य मानवता में सुधार है, ताकि मानव व्यक्तित्व का आंतरिक विकास संभव हो सके और मानवजाति के मिशन और सामाजिक जीवन की वर्तमान स्थितियों के बारे में अधिक सचेत दृष्टि विकसित की जा सके। टैगोर वैश्विक मूल्यों को शिक्षा का उद्देश्य मानते थे, अत: वे अंतरराष्ट्रीय समझ और सार्वभौमिक भाईचारे के लिए शिक्षा को ध्येय

मानते थे। विश्वकवि रवींद्रनाथ टैगोर एक सार्वभौमिकवादी व्यक्ति थे। उनकी भावनाओं को समझने में निम्नलिखित छंद प्रासंगिक है। गुरुदेव की भावना को राष्ट्रीय शिक्षानीति में चरितार्थ करने के उद्देश्य से कई सार्थक बदलाव किए गए है। सार्वभौमिकता, समानता पहुँच के स्तंभों पर आधारित समावेशी शिक्षा नीति से हम नव भारत निर्माण का संकल्प साकार करना चाहते हैं।

"Where the mind is without fear
And the head is held high,
Where knowledge is free.
Where the world has not been broken in to
Fragments by narrow domestic walls,
Into that heaven of freedom, my father
Let my country awake"

जिन वैश्विक समस्याओं पर संयुक्त राष्ट्र विभिन्न माध्यमों से काम कर रहा है, वह ही संसार के ज्वलंत मुद्दे हैं। मूल्यों को समझने और मूल्यपरक शिक्षा का प्रसार करने के लिए आइए, एक बार उन समस्यायों को समझने का प्रयास करते हैं।

1. चिकित्सा विज्ञान और जीवन–शैली में उन्नति बढ़ती उम्र के मुद्दे को जन्म देती है। वस्तुत: दुनिया का हर देश जनसांख्यिकीय बदलाव का सामना कर रहा है, जहाँ उनकी आबादी में वृद्ध व्यक्तियों की संख्या और अनुपात बढ़ रहा है। साठ वर्ष या उससे अधिक आयु के वृद्ध व्यक्तियों की संख्या में हाल के वर्षों में अधिकांश देशों में काफी वृद्धि हुई है और आनेवाले दशकों में इस वृद्धि में तेजी आने का अनुमान है। बढ़ती उम्र के लोगों के समाज में संख्या और अनुपात बढ़ने से बहुत से सामाजिक, श्रमिक, वित्तीय, पारिवारिक संरचना और पीढ़ियों के आपस के संबंधों में प्रतिमान बदल जाते हैं। जिसके लिए यथोचित नीतियों और कार्यक्रमों का बनाया जाना आवश्यक है। बढ़ती पुरानी, आबादी के लिए स्वास्थ्य देखभाल, पेंशन और सामाजिक सुरक्षा की सार्वजनिक प्रणालियों के संबंध में वित्तीय और राजनीतिक दबावों की दृष्टि से युवा

वर्ग को संवेदना और सहानुभूति के मूल्यों की आवश्यकता होगी।

2. वैश्विक महामारी और संबंधित रोग अभी तक संयुक्त राष्ट्र की एक और चिंता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) नामक अपनी एजेंसी के माध्यम से संयुक्त राष्ट्र सदस्य राष्ट्रों के मध्य एड्स, कोरोना, आदि वैश्विक रोगों पर शोध, समर्थन, जागरूकता पैदा करने और संसाधनों, उपचार और अन्य सुविधाओं को साझा करने के ध्येय से काम करता है। शुरू में यह ज्यादातर एड्स या दूसरी महामारी के लिए काम कर रहा था, लेकिन सन् 2019 के अंत में कोविड-19 का आगमन अधिक गंभीर दिखता है और WHO विश्व जनसंख्या की शारीरिक, सामाजिक और भावनात्मक भलाई को सुनिश्चित करते हुए शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व बनाए रखने की कोशिश कर रहा है।
3. लुईस पास्चर का कथन युद्ध की विभीषिका के बारे में ध्यान आकर्षित करता है। "हम शांति के बारे में जितना जानते हैं, उससे अधिक युद्ध के बारे में जानते हैं, जितना कि हम जीने के बारे में जानते हैं, उससे कहीं, अधिक हत्या के बारे में जानते हैं।"
4. परमाणु युग का प्रथम प्रारंभ द्वितीय विश्वयुद्ध में हिरोशिमा और नागासाकी में हुए परमाणु विस्फोटों के साथ हुआ। इसी के साथ परमाणु युग की भयावहता, परमाणु मुद्दे को हल करने की आवश्यकता की जनक बनी। इस मुद्दे को हल करने, परमाणु ऊर्जा का डर रोकने, आगे किसी भी युद्ध की स्थिति को नियंत्रित करने और परमाणु ऊर्जा के शांतिपूर्ण रचनात्मक उपयोग को बढ़ावा देने की दृष्टि से संयुक्त राष्ट्र की स्थापना की गई थी। अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी के माध्यम से संयुक्त राष्ट्र अपने सदस्य राष्ट्रों और कई सहयोगियों के साथ परमाणु प्रौद्योगिकियों के सुरक्षित और शांतिपूर्ण उपयोग को बढ़ावा देने के लिए काम करती है।
5. कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence) और इंटरनेट ऑफ थिंग्स (Internet of Things) के उद्भव से सूचना क्रांति सी आ गई है। छोटे समय में डेटा को संसाधित और विश्लेषण करने की

सुगमता ने एक छोर पर निर्णय लेने और जवाबदेही के लिए अवसरों का सृजन किया है, वहीं दूसरी ओर मानव अधिकारों के मौलिक तत्त्वों के लिए एक उच्च जोखिम उत्पन्न किया है। डेटा की संप्रभुता के लिए गोपनीयता, नैतिकता और सम्मान की सुरक्षा के मुद्दों को सामूहिक लाभों के साथ-साथ व्यक्तियों के अधिकारों का आकलन करने की आवश्यकता होती है। यह एक तकनीकी चुनौती है, जिसका समाधान करने के लिए मूल्यों और नैतिकता की आवश्यकता होती है। एक वैश्विक समुदाय के भीतर और सामान्य मानदंडों के अनुसार विकास और मानवीय काररवाई के लिए डेटा के सुरक्षित उपयोग के आसपास सामूहिक काररवाई का मार्गदर्शन करने के लिए सिद्धांतों और मानकों की स्थापना के लिए मूल्य शिक्षा और अभ्यास का एक न्यूनतम स्तर आवश्यक है। व्यक्तियों और समूहों पर डेटा के दुरुपयोग से गोपनीयता और मानव अधिकारों के दुरुपयोग से बचने और डेटा का उत्पादन, उपयोग और उपयोग में असमानता को कम करने की जरूरत है।

6. संयुक्त राष्ट्र बाल कोष, यूनिसेफ 1946 में संयुक्त राष्ट्र द्वारा द्वितीय विश्वयुद्ध से तबाह हुए देशों में बच्चों को राहत प्रदान करने हेतु स्थापित किया गया। यूनिसेफ ने लाखों बच्चों को प्रभावित करनेवाली बीमारी के खिलाफ एक सफल वैश्विक अभियान शुरू किया और सफलता भी प्राप्त की। सशस्त्र संघर्षों और अन्य अनैतिक उद्देश्यों में आतंकवादियों द्वारा बच्चों और युवा किशोरों की मासूमियत और वीरता का दुरुपयोग किया जाता है। संयुक्त राष्ट्र बाल कोष, बाल अधिकारों की पुष्टि करने और उनके भविष्य को सुनिश्चित करने, शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल, आश्रय और अच्छे पोषण के लिए संयुक्त राष्ट्र का एक स्थायी हिस्सा बन गया। पूरे विश्व में बच्चों से संबंधित मुद्दों को दूर करने के लिए उचित जागरूकता और मूल्यों को विकसित करने की आवश्यकता है, क्योंकि युद्ध बाहरी दुनिया के बारे में है, जबकि शांति और न्याय एक ऐसा विषय है, जिसे शिक्षा के माध्यम से हृदय में विकसित किया जा सकता है।

7. मनुष्य अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्यावरण को नुकसान पहुँचा रहा है। शहरीकरण और पेड़ों की अभूतपूर्व कटाई, ओजोन छिद्र के निर्माण से पृथ्वी की प्राकृतिक जलवायु परिवर्तित हुई है, इसलिए जलवायु परिवर्तन (Climate Change) हमारे समय का एक निर्णायक मुद्दा बन गया है और हम एक निर्णायक समय में हैं। मौसम के बदलाव खाद्य उत्पादन को और बढ़ते समुद्र के स्तर से जीवन को खतरे में डालते हैं। यह विनाशकारी बाढ़ के जोखिम को बढ़ाते हैं, जलवायु परिवर्तन के प्रभाव वैश्विक और पैमाने में अभूतपूर्व हैं। आज कठोर काररवाई के बिना, भविष्य में इन प्रभावों का पालन करना अधिक कठिन और महँगा होगा। पर्यावरण के मुद्दों के प्रति ईमानदार प्रयासों और संवेदीकरण दुनिया की सख्त जरूरत है और जीवन को बचाने और पारिस्थितिक संतुलन को बनाए रखने के लिए पर्यावरण मूल्यों की शिक्षा पर ध्यान देने की जरूरत है।
8. जाति, लिंग, राष्ट्रीयता, जातीयता, भाषा, धर्म या किसी भी अन्य स्थिति से पहले सब मानव हैं। इन सभी भिन्नताओं की परवाह किए बिना, सभी का मानव जीवन पर निहित अधिकार है। मानवाधिकारों में जीवन और स्वतंत्रता का अधिकार, दासता और यातना से मुक्ति, राय और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, काम और शिक्षा का अधिकार इत्यादि शामिल हैं। बिना भेदभाव के हर कोई इन अधिकारों का हकदार है। उपनिवेश एक अभिशाप है और क्षेत्र के लोगों के लिए कठिनाई का कारण बनता है। 1945 में जब संयुक्त राष्ट्र की स्थापना हुई थी तो दुनिया की आबादी की लगभग एक तिहाई जनसंख्या उन क्षेत्रों में रहती थी, जो औपनिवेशिक शक्तियों पर निर्भर थे। आज गैर-स्वशासित प्रदेशों में दो मिलियन से भी कम लोग औपनिवेशिक शासन के अधीन रहते हैं। 200 साल भारत भी उपनिवेश रहा, उस समय सामाजिक-सांस्कृतिक, आर्थिक ह्रास के अतिरिक्त गिरती जीवन प्रत्याशा और न के बराबर राष्ट्रीय विकास था। संयुक्त राष्ट्र द्वारा किए गए कृत्य की सराहना और ऐसे देशों के प्रति सहानुभूति 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का अंश है। मूल्यों

का इस ओर झुकाव भी मानवता के लिए महत्त्वपूर्ण है।

9. लोकतंत्र सुशासन का एक मुख्य मूल्य है। मानव अधिकारों को बढ़ावा देने के आधार पर विकास, शांति और सुरक्षा हेतु लोकतंत्र नागरिक समाज का समर्थन करने और जवाबदेही तय करने के लिए आवश्यक मूल्य है।
10. गरीबी मात्र आय और उत्पादक संसाधनों की कमी नहीं अपितु भूख और कुपोषण, शिक्षा और अन्य बुनियादी सेवाओं तक सीमित पहुँच, सामाजिक भेदभाव, बहिष्करण और निर्णय लेने में भागीदारी की कमी का प्रतिबिंब है। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, 2018 में दुनिया के लगभग 8 प्रतिशत श्रमिक और उनके परिवार गरीबी रेखा से नीचे थे। सयुक्त राष्ट्र के 2018 के मानकों के आधार से प्रतिदिन प्रति व्यक्ति यूएस $1.90 से कम की आयवाले व्यक्ति गरीबी रेखा के नीचे हैं और ऐसे अधिकांश लोग दो क्षेत्रों में रहते हैं, दक्षिणी एशिया और उप-सहारा अफ्रीका। संयुक्त राष्ट्र ने सतत विकास के लिए 2030 एजेंडा में सतत विकास के 17 लक्ष्य निर्धारित किए हैं। इसमें गरीबी हटाने का पहला सतत विकास लक्ष्य रखा गया है। गरीबी उन्मूलन की दिशा में सतत विकास लक्ष्य का उद्देश्य राष्ट्रीय और क्षेत्रीय स्तर पर रणनीति की रूपरेखा तैयार करना है, जो गरीबी और लिंग-संवेदनशील विकास रणनीतियों के आधार पर यह सुनिश्चित करने के लिए है कि 2030 तक सभी पुरुषों और महिलाओं को आर्थिक संसाधनों के समान अधिकार हों, साथ ही बुनियादी सेवाओं, स्वामित्व और भूमि और संपत्ति के अन्य रूपों, विरासत, प्राकृतिक संसाधनों, उपयुक्त नई तकनीक और वित्तीय सेवाओं पर नियंत्रण, जिनमें माइक्रोफाइनेंस भी शामिल है, तक भी सबकी पहुँच हो।
11. भोजन का महत्त्व कोई ऐसी चीज नहीं है, जिसके लिए किसी बड़े स्पष्टीकरण की आवश्यकता हो, लेकिन भूख के खिलाफ लड़ाई में प्रगति अभी जारी है। अस्वीकार्य रूप से बड़ी संख्या में लोगों के पास अभी भी सक्रिय और स्वस्थ जीवन के लिए पर्याप्त भोजन नहीं है।

दूसरा स्थायी विकास लक्ष्य भूख को समाप्त करना, खाद्य सुरक्षा प्राप्त करना, पोषण में सुधार और स्थायी कृषि को बढ़ावा देना है। यह सब करने के लिए संवेदनशील हृदय और कार्यान्वयन की जरूरत है।

12. विश्व खाद्यान्न कार्यक्रम के अनुसार, खाघान्नों का बढ़ता हुआ अभाव एक महासंकट की ओर संकेत दे रहा है। विश्व बैंक ने अपने एक अध्ययन में पाया कि संपूर्ण विश्व के करीब 800 मिलियन लोग भुखमरी से प्रभावित हैं। इसके अनुसार विश्व के 36 देश खाद्यान्न संकट से गंभीर रूप से प्रभावित हैं। विश्व खाद्य कार्यक्रम के अंतर्गत खाद्यान्न प्राप्त करनेवाले विश्व के 78 देशों के 73 मिलियन लोगों के समक्ष आज इस संकट के कारण एक गंभीर चुनौती खड़ी हो गई है।

जब हम खाद्य आवश्यकता की बात करते हैं तो यहाँ हमारा अभिप्राय केवल खाद्यान्न से नहीं होता, वरन् अन्न, फल, दूध, सब्धियाँ, अंडे, मांस आदि सब मिलाकर मनुष्य की खाद्य आवश्यकताएँ पूरी करते हैं। यदि हम इन का समावेश न करें तो कुपोषण की स्थिति उत्पन्न हो जाएगी।

खाद्य संकट के महत्त्वपूर्ण कारकों में निर्धनता का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है। वर्तमान भौतिकवादी परिवेश में खाद्यान्न केवल उन्हीं को सुलभ है, जो भुगतान करने में सुलभ है न कि जिन्हें इसकी आवश्यकता है, इसके अतिरिक्त सामाजिक, राजनीतिक कारण, जैसे भ्रष्टाचार, अनाचार, पूँजीवादी व्यवस्था, आय का आसमान वितरण, घूसखोरी, जमाखोरी, भौतिकवादी विचारधारा, प्रेम सौहार्द, आपसी भाईचारा, जैसे मानवीय मूल्यों का ह्रास भी विश्व में खाद्यान्न संकट हेतु जिम्मेवार महत्त्वपूर्ण कारण है।

थोड़ा विचार कीजिए, क्या हमारे प्राचीन समय में यह स्थितियाँ उत्पन्न हुई थीं? नहीं। आज के युग और प्राचीन युग में केवल अंतर सिर्फ मूल्यों का ही है, विश्व को प्रेम, दया, दान, सहयोग, संतोष, सेवाश्रम, आपसी भाईचारा, समानता, भातृत्व एवं विनम्रता आदि द्वारा संचालित होना चाहिए। वहीं विश्व आज घृणा, हिंसा, लूटपाट, संग्रह, असहयोग,

असंतोष, अकर्मणयता, असमानता आदि मूल्य को आधार बनाए हुए है। कर्म का सिद्धांत आज शून्य भाव में समाहित हो गया है। यदि विश्व को इस भयावह खाद्यान्न संकट से उबरना है तो सर्वप्रथम भौतिक मूल्यों के साथ साथ सामाजिक आध्यात्मिक व मानवीय मूल्यों को अंगीकृत करना ही होगा।

13. दुनिया की आधी आबादी का प्रतिनिधित्व करनेवाली महिलाएँ विश्व की आधी जनसंख्या और क्षमता की स्वामिनी हैं। लैंगिक समानता एक मौलिक मानव अधिकार होने के अलावा पूर्ण मानव क्षमता और सतत विकास के साथ शांतिपूर्ण समाज की स्थापना करने के लिए भी आवश्यक है। इसके अलावा शोध प्रमाणित करते हैं कि महिलाओं को सशक्त बनाने से उत्पादकता और आर्थिक विकास होता है। दुर्भाग्य से पुरुषों और महिलाओं के बीच अधिकारों और अवसरों की पूर्ण समानता आज भी व्याप्त नहीं है। लैंगिक हिंसा के कई रूप संसार में व्याप्त हैं। लैंगिक हिंसा को समाप्त करने की दृष्टि से मूल्यपरक शिक्षा, स्वास्थ्य और आर्थिक संसाधनों में महिलाओं और पुरुषों दोनों का समान अधिकार सुनिश्चित करना समस्त विश्व का कर्तव्य है। समान अधिकार सुनिश्चित करने के लिए राजनीतिक निर्णयों में समान अधिकार सुरक्षित रखना सबसे महत्त्वपूर्ण है। रोजगार और सभी स्तरों पर नेतृत्व और निर्णय लेने की स्थिति में समान अवसर प्राप्त करना भी आवश्यक है। मनुस्मृति के अध्याय 3 के श्लोक 58 में लिखा है—

'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफला: क्रिया:।'

अर्थात् जहाँ स्त्रियों की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं और जहाँ उनका सम्मान नहीं होता है, वहाँ किए गए समस्त अच्छे कर्म निष्फल हो जाते हैं। आधुनिक युग में पूजा का अर्थ है समान अधिकार और यथोचित सम्मान। जिससे महिलाओं का सर्वांगीण विकास सुनिश्चित हो सके।

14. सभी उम्र के लोगों के लिए स्वस्थ जीवन और अच्छे हाल-चाल

सुनिश्चित करना संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास का तीसरा लक्ष्य है। विश्व स्वास्थ्य संगठन नामक अपनी एजेंसी के माध्यम से संयुक्त राष्ट्र इस ओर काम कर रहा है। बिगड़ते स्वास्थ्य और अमीर और गरीब के बीच की व्यापक खाई ने दुनिया की आबादी के एक हिस्से को अच्छे स्वास्थ्य के संसाधनों से दूर रखा है। अच्छे स्वास्थ्य को बनाए रखना एक और मुद्दा है, जिस पर चिंता की आवश्यकता है। न केवल संचारी रोग जीवन के लिए खतरा हैं, बल्कि गैर-संचारी रोग भी जीवन-शैली पर निर्भर बीमारी का कारण हैं। स्वस्थ जीवन का समावेश अभी तक एक और मूल्य है, जिसे हमें अपने युवाओं में आत्मसात् करने की आवश्यकता है। कोविड-19 की घटना और संबंधित मूल्यों को मानवता द्वारा सकारात्मक अर्थों में लेना होगा। कोविड की शृंखला को तोड़ने का एकमात्र तरीका सामाजिक दूरी है। यह स्थापित करता है कि स्वास्थ्य केवल एक व्यक्तिगत मुद्दा नहीं है, बल्कि एक सामाजिक मुद्दा है। अपने को ही नहीं, अपितु दूसरों को भी सुरक्षित रखना सब का सामूहिक उत्तरदायित्व है।

15. संसार के समस्त राष्ट्रों को एक सूरत में बाँधने, न्यायिक व्यवस्था को बनाए रखने के लिए संयुक्त राष्ट्र में अंतरराष्ट्रीय कानून के एक निकाय का विकास किया गया है। आर्थिक और सामाजिक विकास को बढ़ावा देने के साथ-साथ अंतरराष्ट्रीय शांति और सुरक्षा को आगे बढ़ाने के लिए अंतरराष्ट्रीय कानून व्यवस्था की जरूरत है; हालाँकि इस क्षेत्र में संयुक्त राष्ट्र के काम पर हमेशा ध्यान नहीं दिया जाता है, लेकिन इसका हर जगह के लोगों के जीवन पर नियमित प्रभाव पड़ता है।

16. 2019 में अंतरराष्ट्रीय प्रवासियों में वैश्विक आबादी का 3.5 प्रतिशत (27.2 करोड़) शामिल है। अपनी जन्मभूमि को छोड़कर लोग विभिन्न कारणों से पलायन करते हैं, जिसमें मानव निर्मित और प्राकृतिक दोनों कारणों का समावेश है। मानव निर्मित में काम या आर्थिक अवसरों की तलाश, परिवार में शामिल होने या अध्ययन करना शामिल हैं। वहीं कुछ अन्य संघर्ष, उत्पीड़न, आतंकवाद या मानवाधिकारों के

उल्लंघन से बचने के लिए पलायन करते हैं। प्राकृतिक कारणों में जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक आपदाओं या अन्य पर्यावरणीय कारकों के प्रतिकूल प्रभावों के जवाब शामिल हैं। सतत विकास के लिए संयुक्त राष्ट्र के 2030 एजेंडा में पहली बार स्थायी विकास के लिए प्रवास के योगदान को मान्यता दी गई। सतत विकास लक्ष्यों में से एक प्रवासन या गतिशीलता से संबंधित लक्ष्य और संकेतक हैं। एजेंडा का मूल सिद्धांत है, 'किसी को पीछे नहीं छोड़ना है, प्रवासियों को भी नहीं।' प्रवासियों में लचीलापन उन्हें नए स्थान के लिए अनुकूल बनाता है और मूल निवासियों में उन्हें स्वीकार्य करने हेतु भी मूल्यों का समावेश होना आवश्यक है।

17. समुद्री स्वतंत्रता के सिद्धांत में समुद्र को किसी भी राष्ट्रीय सीमाओं से बाहर रखा गया है। राष्ट्र का अधिकार समुद्र तट के आसपास एक संकीर्ण समुद्र बेल्ट तक सीमित होता है, परंतु बीसवीं सदी में तटीय संसाधनों पर दावों का विस्तार होने लगा, जिसने विभिन्न राष्ट्रों के बीच संघर्ष की स्थिति पैदा कर दी थी। इस संघर्ष की समाप्ति के लिए खुला दिमाग और समावेशी शिक्षा चाहिए।

18. आतंकवाद हिंसा या लोगों और संपत्ति के खिलाफ हिंसा या धमकी देना है। राजनीतिक, धार्मिक या वैचारिक उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए सरकारों या समाजों को डराना या धमकाना आतंकवाद के अंतर्गत आता है। अहिंसा का मूल्य सिखाते हुए महात्मा गांधी बदले की भावना से दूर रहने की शिक्षा देते हुए कहते हैं कि "आँख के बदले आँख का सिद्धांत पूरी दुनिया को अंधा बना देगा।" जैसा कि यूनेस्को के पूर्व महानिदेशक इरीना बोकोवा ने कहा है, "शांति मात्र युद्ध की अनुपस्थिति नहीं है, अपितु यह हमारे जाति, भाषा, धर्म या संस्कृति के मतभेदों के सामने सार्वभौमिक सम्मान को आगे बढ़ाना और सह-अस्तित्व का अनुमान है।"

19. जनसंख्या एक वैश्विक मुद्दा है। जनसंख्या का असमान वितरण भी एक मुद्दा है। कुछ स्थानों पर उच्च घनत्व और दूसरे में कम, एक

ओर जनसंख्या वृद्धि और दूसरी ओर बढ़ती उम्र। सभी का दुनिया को मुकाबला करने की आवश्यकता है। एक और भारत और चीन, जैसे देश हैं, जिनकी औसत आयु 29 साल और 37.4 साल क्रमश है, जो जनसंख्या विस्फोट से जूझ रहे हैं, जबकि जापान जैसे देश में जनसंख्या में वृद्धि की संख्या बढ़ने का मुद्दा मुख्य है। अफ्रीका की औसत आयु 19.7 वर्ष है, यह भी एक चिंता का विषय है, जहाँ अधिकतम जनसंख्या अपनी प्रजनन आयु तक पहुँच जाएगी और जनसंख्या की वृद्धि दर अधिक (अमूमन दुगुनी) होगी। सहानुभूति के साथ इस मुद्दे पर काम करने के लिए आँकड़ों और विश्लेषणों की बड़ी समझ की आवश्यकता है।

संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि अगर आबादी इसी रफ्तार से बढ़ती रही तो जल्द ही वैश्विक स्तर पर इसका आँकड़ा दस बिलियन के आसपास होगा। वर्तमान में दुनिया की कुल आबादी सात बिलियन के पार हो गई है। जिसमें से कुल आबादी का आधे से भी बड़ा भाग केवल एशिया महाद्वीप में रहता है। संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट 'वर्ल्ड पापुलेशन प्रास्पेक्टस 2019 हाइलाइट्स' में बताया गया है कि अगले तीन दशकों में दुनिया की आबादी दो अरब और बढ़ जाएगी। जनसंख्या वृद्धि के दो प्रमुख कारण हैं—

1. व्यक्तियों के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक मूल्य जनसंख्या को प्रभावित करते हैं।
2. वैश्विक जनसंख्या में बड़ी संख्या में युवा जनसंख्या का पाया जाना।

   जनसंख्या परिवर्तन जैविकीय एवं सामाजिक एवं सांस्कृतिक तथ्यों पर आधारित होता है। बच्चे का जन्म पूर्णतया जैविकीय प्रक्रिया है, परंतु बच्चे का जन्म परिवार का आकार, जैसे निर्णय के पीछे सामाजिक, सांस्कृतिक मूल्य, परंपराएँ व रीति-रिवाज होते हैं। समय-समय पर यह सामाजिक व सांस्कृतिक मूल्य परिवर्तित हो जाते हैं।

20. हम एक ऐसी दुनिया में रहते हैं, जहाँ लगभग एक व्यक्ति संघर्ष या उत्पीड़न के परिणामस्वरूप हर दो सेकंड में जबरन विस्थापित किया जाता है। अपने घर शहर या देश से निकले व्यक्ति का जीवन संघर्षमय होता है। शरणार्थियों के लिए संयुक्त राष्ट्र के शरणार्थियों के उच्चायुक्त (UNHCR) का काम इस दिशा में मानवता के लिए अधिक महत्त्वपूर्ण है। शरणार्थियों का पुनर्वास अभी तक एक और ज्वलंत मुद्दा है। उत्पीड़न और संघर्ष से भाग रहे लोगों को हजारों वर्षों से विदेशी भूमि में शरण दी गई है। अंतरराष्ट्रीय कानून और परिवार की एकता के सिद्धांत के अनुसार, शरणार्थियों के बच्चे और उनके वंशजों को भी शरणार्थी माना जाता है, जब तक कि एक स्थायी समाधान नहीं मिलता है। इस समस्या के समाधान के लिए दोनों पक्षों में सहानुभूति और व्यापक स्वीकार्यता के मूल्य होना आवश्यक है।
21. विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) और संयुक्त राष्ट्र अंतरराष्ट्रीय बाल आपातकालीन कोष (UNICEF) 2019 की रिपोर्ट के अनुसार, दुनिया भर में 2.2 बिलियन लोगों की सुरक्षित रूप से शुद्ध पेयजल सेवाओं तक पहुँच नहीं है। पानी भी अधिकार का मुद्दा है, जैसे-जैसे वैश्विक आबादी बढ़ती है, जल संसाधनों पर प्रतिस्पर्धात्मक वाणिज्यिक माँगों को संतुलित करने की बढ़ती आवश्यकता होती है, ताकि समुदायों को उनकी जरूरतों के लिए पर्याप्त जल उपलब्ध हो। विशेष रूप से, महिलाओं और लड़कियों को गरिमा और सुरक्षा में मासिक धर्म और मातृत्व का प्रबंधन करने के लिए स्वच्छ, निजी स्वच्छता सुविधाओं तक पहुँच होनी चाहिए। मानव स्तर पर, पानी को स्वच्छता से अलग नहीं देखा जा सकता है। साथ में वे रोग के वैश्विक बोझ को कम करने और आबादी के स्वास्थ्य, शिक्षा और आर्थिक उत्पादकता में सुधार के लिए महत्त्वपूर्ण हैं।
22. 2008 में अमेरिका से प्रारंभ हुई वैश्विक मंदी व वैश्विक वित्तीय संकट अब समूचे विश्व में फैल गया है। अमेरिका व यूरोप सहित अधिकांश देश कर्ज में डूब गए, बैंक दिवालिया हो गए, बेरोजगारी बढ़ती जा

रही है। स्पेन, पुर्तगाल, इटली एवं ग्रीस, जैसे देशों ने तो समूचे यूरोपीय अर्थव्यवस्था की स्थिरता के लिए ही संकट पैदा कर दिया है। इस प्रकार इस वैश्विक आर्थिक संकट ने स्वतंत्र एवं अनियंत्रित बाजारों वाले उन्मुक्त पूँजीवादी दर्शन के खोखलेपन को जगजाहिर कर दिया है। इस पूँजीवादी दर्शन ने शोषक वर्ग व शोषित वर्ग के व्यक्तियों में तथा शोषक राष्ट्र व शोषित राष्ट्र या अन्य शब्दों में विकसित राष्ट्र व विकासशील राष्ट्र के बीच परस्पर घृणा-द्वेष का भाव उत्पन्न कर दिया है। परिणामस्वरूप विश्व भर में लगातार विषमता बढ़ती जा रही है। अन्याय एवं असमानता के मूल्यों पर टिकी व चल रही इस प्रणाली से विश्व व्यापक वित्तीय आर्थिक संकट उत्पन्न हो गया है।

ऐसी स्थिति में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' आदि मूल्यों एवं अन्य आर्थिक मूल्यों को अपनाकर इस भयावह संकट से विश्व को उबारा जा सकता है, क्योंकि इन आर्थिक मूल्यों का संबंध व्यक्ति के जीवन में अर्थ की जरूरत एवं उसे अर्जित करने के तरीकों से है, यदि किसी समाज में व्यक्ति धन को लेकर अधिक आग्रही होंगे तो उन्हें अन्य कुछ मूल्यों का त्याग अवश्य करना पड़ेगा, ऐसे समाज में आध्यात्मिकता, भाईचारे, विश्वबंधुत्व, प्रेम आदि मूल्य कम हो सकते हैं। विश्व की समावेशी संस्कृति के लिए आवश्यक है कि वह समाज की बुनियादी आर्थिक न्याय के मूल्यों पर आधारित हो, परंतु इसके अतिरिक्त कई सारे मूल्य हैं, जैसे कमजोर राष्ट्र की मदद, परिवारिक मूल्य, वैश्विक सौहार्द, आर्थिक समदृष्टि, शोषक व शोषित वर्ग संघर्ष को कम करना तथा पर्यावरणीय मूल्य आदि, जो विश्व की समावेशी संवृद्धि के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। कुल-मिलाकर यह कहा जा सकता है कि आर्थिक क्षेत्र में मानवीय एवं आर्थिक मूल्यों के समावेशीकरण द्वारा ही वैश्विक आर्थिक उन्नति संभव है।

23. आतंकवादी गतिविधियों ने मानवीयता का गला ही नहीं घोंटा है, वरन् इन मूल्यों के अस्तित्व को ही खतरे में डाल दिया है। मानो यह मूल्य सदा के लिए विश्व परिदृश्य से विलीन हो गए हो। मानवीय मूल्यों से

रहित आतंकवाद की अलग मान्यता, विचारधारा, चिंतन, सिद्धांत व मानसिकता रही हैं। वर्तमान में विश्व का प्रत्येक देश किसी-न-किसी प्रकार के आतंकवाद से पीड़ित है। वर्तमान में आतंकवाद एक सबसे बड़ी वैश्विक चुनौती है। संघर्ष क्षेत्रों से लेकर दूरदराज के शहरों की गलियों तक आतंकवाद एक भयावह कीमत वसूलता है।

24. आज का युवा वर्ग ऐसे ही दु:खद एवं चिंताजनक परिस्थितियों में रू-ब-रू होता है। आदर्श समाज से उसे उपयुक्त मार्गदर्शन नहीं मिलता। उसे और अधिक भ्रमित करती है भोगवादी आधुनिकता के दुष्प्रभाव। युवा पीढ़ी दुष्ट प्रवृत्तियों के दलदल में धँसती जा रही है। विश्व के कई विकसित देश जैसे अपने युवा पीढ़ी के नैतिक व सामाजिक मूल्यों में आती कमी व अपने नैतिक पतन को लेकर काफी चिंतित हैं। विश्व की अधिकांश युवा शक्ति आज संचार क्रांति के साधनों के प्रयोग द्वारा हिंसा, अश्लीलता, फैशन परस्ती, स्वच्छंदता, फूहड़ता, नशाखोरी, उन्मुत्त यौनाचार आदि अमानवीय व अनैतिक आत्मघाती दुष्चक्रों में उलझती जा रही है।

25. ऐसे अंधकारमय परिदृश्य में भी आशा की किरण तो होती ही है। लगभग सौ वर्षों पूर्व स्वामी विवेकानंद द्वारा कही गई इस बात पर गंभीरता से विचार करें—"आज हमारी जो स्थिति बन रही है, उसका कारण क्या यह नहीं है कि हम धर्म के पथ से भटक गए हैं अपनी संस्कृति व परंपराओं की उपेक्षा करने लगे हैं। भौतिक अंधानुकरण के कारण स्वयं ही अपनी जड़ें काटते जा रहे हैं।" स्वामीजी की इन बातों को आत्मसात् कर मूल्य-संकट के बारे में गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है।

26. वैश्विक पर्यावरणीय संकट या दूसरे शब्दों में कहें तो वैश्विक तपन की समस्या पूरे विश्व के लिए चिंता का विषय बनी हुई है। 'ग्लोबल वार्मिंग' एक मानव जनित समस्या है, न कि प्रकृति जनित। पृथ्वी के वातावरण में जो कुछ टूट रहा है, उसके लिए केवल मानव ही जिम्मेदार है। वैश्विक तपन के कारण जलवायु में आए अवांछित परिवर्तन ने पृथ्वी के

जीव धारियों एवं वनस्पति जगत् के समक्ष विभिन्न प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न कर दी हैं। कहीं असामान्य वर्षा हो रही है तो कहीं असमय भीषण गरमी, कहीं ग्लेशियर पिघलते जा रहे हैं, कहीं बाढ़ तो कहीं रेगिस्तान पसरता जा रहा है। ग्लोबल वार्मिंग अब तक के मानव इतिहास की सबसे बड़ी वैश्विक चिंता है। अगर यह समस्या इसी तरह बढ़ती रही तो दुनिया भर के करीब 1.2 करोड़ लोग तटीय क्षेत्रों में रहते हैं, वैश्विक तपन के कारण इन्हें विस्थापित होना पड़ेगा। आई.यू.सी.एन. के अनुसार, 'कार्बन उत्सर्जन एवं वैश्विक तपन के कारण जीवों और वनस्पतियों के 420 प्रजातियाँ 2020 तक लुप्त हो जाएँगी।' वैश्विक तपन के कारण गैर-ध्रुवीय ग्लेशियर अपनी जगह से पीछे खिसक गए हैं।

पृथ्वी एक है, परंतु विश्व नहीं। वर्तमान में प्रत्येक देश व प्रत्येक समुदाय को पर्यावरणीय नैतिकता का पालन करना अनिवार्य हो गया है। यह आवश्यक है कि मनुष्य को प्रकृति के साथ सद्भाव से जीना सीखना चाहिए, इसके लिए नैतिक मूल्यों एवं इसकी शिक्षा की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। यदि मानवजाति को जीवित रहना है तो उसे पर्यावरण का सुरक्षा करनी पड़ेगी, इस ग्रह पर जीवित रहने के लिए हमें हमेशा पर्यावरणीय मूल्यों का पालन करना होगा। हम सभी के अस्तित्व के लिए जरूरत व उपयोग की सारी वस्तुएँ हमें प्रकृति से मिलती हैं, अत: इसका सम्मान करें।

27. श्रेष्ठता की भावना विश्व बंधुत्व की भावना के विपरीत है एवं विश्वशांति के गठन में बाधक भी। वर्तमान में विश्व के अधिकांश राष्ट्र उग्र राष्ट्रीयता, साम्राज्य विस्तार एवं धार्मिक कट्टरता के कारण बाकी सभी देशों के साथ युद्ध, संघर्ष करने के लिए प्रतिक्षण तैयार रहते हैं।

इन सभी कारणों से विश्व में केवल तनाव की स्थिति उत्पन्न होती है। इन युद्धों के कारण भारी जन व धन की हानि, पर्यावरण को नुकसान, आर्थिक मंदी, भुखमरी, जातीय संघर्ष मानवता का अंत तथा वृहद रूप से मानवजाति के अस्तित्व पर ही खतरा उत्पन्न हो जाता है।

पढ़ने-लिखने, सीखने और समझने के माध्यम से व्यक्ति एक विविध

दुनिया के भीतर रहनेवाली समृद्धि को समझने में और अधिक सक्षम बन जाता है। इसके परिणामस्वरूप स्थायी शांति के निर्माण की नींव रखी जाती है। शांति का आधार विविधता को अस्वीकार करने के बजाय सराहना करने से तैयार होता है। बहुलवाद और आपसी समझ के मूल्यों के अनुसार, संघर्ष प्रबंधन करने के लिए भी शिक्षा में मूल्यों का प्रभाव आवश्यक है।

संयुक्त राष्ट्र के कार्यक्षेत्र में जलवायु परिवर्तन, शरणार्थियों और एड्स जैसी नई चुनौतियाँ, सात दशकों में शांति की रक्षा के अपने प्रारंभिक लक्ष्यों के लिए, मानव अधिकारों की रक्षा करना, अंतरराष्ट्रीय न्याय के लिए रूपरेखा स्थापित करना और आर्थिक और सामाजिक प्रगति को बढ़ावा देना शामिल है। दुनिया भर में लोगों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए संयुक्त राष्ट्र अनेक रूप से अपनी एजेंसी के माध्यम से आपदा राहत, शिक्षा और महिलाओं की उन्नति, परमाणु ऊर्जा के शांतिपूर्ण उपयोग की दिशा में विस्तृत कार्य करता है।

रंग, लिंग या राष्ट्रीय, जातीय या धार्मिक पहचान की परवाह किए बिना सभी लोगों के लिए स्वीकृति और सम्मान प्राप्त करने के लिए मूल्यपरक शिक्षा महत्त्वपूर्ण है। विशेष रूप से औपचारिक शिक्षा के माध्यम से अपने प्रारंभिक वर्षों के दौरान बच्चों और युवाओं में मूल्यों का समावेश महत्त्वपूर्ण है। UNESCO ने भी इस दिशा में 2012 में एक परियोजना शुरू की थी 'टीचिंग रिस्पेक्ट फॉर ऑल', जिसका उद्देश्य नस्लवाद से लड़ने और सहिष्णुता को बढ़ावा देने के लिए एक पाठ्यक्रम की रूपरेखा तैयार करना था।

भारतीय सभ्यता का आधार 'वसुधैव कुटुम्बकम्' है। जो मात्र अपने देश को ही नहीं अपितु संपूर्ण मानवजाति को एक परिवार के रूप में देखती और मानती है। भारत के 'वसुधैव कुटुम्बकम्' सिद्धांत में निहित त्रासदियाँ ही नहीं अपितु अपने संसाधनों और विकास को भी साझा करना होगा। इस दिशा में विश्व का नेतृत्व करना भारत का अधिकार ही नहीं, नैतिक कर्तव्य भी है। भावी पीढ़ी का इस नेतृत्व की दिशा में निर्माण शिक्षा का बहुत बड़ा उत्तरदायित्व है। जिस दुनिया में हम रहते हैं, वह तकनीकी विकास और वैश्वीकरण द्वारा संचालित त्वरित गति से बदल रही है।

विश्व में मूल्य-आधारित शिक्षा

उपर्युक्त वैश्विक समस्याओं से लड़ने के लिए संयुक्त राष्ट्र ने 2015 में 17 सतत विकास लक्ष्य एजेंडा 2030 के तहत निर्धारित किए।

हमारी दुनिया को बदलने के लिए 17 सतत विकास लक्ष्य (एस. डी.जी.)—

- लक्ष्य 1 : कोई गरीबी नहीं (No Poverty)
- लक्ष्य 2 : शून्य भूख (Zero Hunger)
- लक्ष्य 3 : अच्छा स्वास्थ्य और कल्याण (Good Health and Well-being)
- लक्ष्य 4 : गुणवत्तापूर्ण शिक्षा (Quality Education)
- लक्ष्य 5 : लैंगिक समानता (Gender Equality)
- लक्ष्य 6 : स्वच्छ जल और स्वच्छता (Clean Water and Sanitation)
- लक्ष्य 7 : सस्ती और स्वच्छ ऊर्जा (Affordable and Clean Energy)
- लक्ष्य 8 : उचित कार्य और आर्थिक विकास (Decent Work and Economic Growth)
- लक्ष्य 9 : उद्योग, नवाचार और बुनियादी ढाँचा (Industry, Innovation and Infrastructure)
- लक्ष्य 10 : कम असमानता (Reduced Inequality)
- लक्ष्य 11 : सतत शहर और समुदाय (Sustainable Cities and Communities)
- लक्ष्य 12 : जिम्मेदार उपभोग और उत्पादन (Responsible Consumption and Production)
- लक्ष्य 13 : जलवायु क्रिया (Climate Action)
- लक्ष्य 14 : पानी के नीचे जीवन (Life Below Water)
- लक्ष्य 15 : जमीन पर जीवन (Life on Land)
- लक्ष्य 16 : शांति और न्यायवाली मजबूत संस्थाएँ (Peace and

Justice Strong Institutions)

- लक्ष्य 17 : लक्ष्य प्राप्त करने के लिए साझेदारी (Partnership to achieve the Goal)

यह लक्ष्य भविष्य में वैश्विक साझेदारी में विकसित और विकासशील, सभी देशों के लिए शांति और समृद्धि हेतु एक साझा खाका प्रदान करता है। गरीबी और अन्य अभावों को खत्म कर, स्वास्थ्य और शिक्षा में सुधार करने की प्रेरणा देते लक्ष्य विश्व में समानता, समावेश एवं समग्रता का संदेश देते हैं। असमानता की समस्या को हल कर आर्थिक विकास की ओर बढ़ते सतत लक्ष्य विश्व को शांति की ओर ले जाते हैं। जलवायु परिवर्तन से निपटने और हमारे महासागरों और जंगलों को संरक्षित करने की दिशा भी सतत विकास लक्ष्य निर्धारित करती है। इन समस्याओं के समाधान हेतु हर लक्ष्य मानवता, सहानुभूति, प्रेम, एकता, एकजुटता, समावेश और समग्र विकास के मूल्यों पर आधारित है। यदि विश्व का प्रत्येक राष्ट्र गंभीरतापूर्वक उपर्युक्त लक्ष्यों की प्राप्ति की दिशा में कार्य करे तो सभी देशों में शांति व समृद्धि हो पाएगी, यह निश्चित है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में हमने गुणवत्तापरक, नवाचार युवल, संस्कारयुवल शिक्षा पर ध्यान केंद्रित कर अपने विद्यालयों को वैश्विक नागरिक लिया है। मेरा हमेशा से मानना रहा है कि शिक्षा के माध्यम से हम समस्त वैश्विक चुनौतियों पर विजय पा सकते हैं। सभी सत्रह के सत्रह सतत विकास लक्ष्य शिक्षा द्वारा किसी-न-किसी रूप में आच्छादित होते हैं। विश्व कल्याण हेतु गुणवत्तापरक मूल्यों पर आधारित शिक्षा उत्प्रेरक का काम कर सकती है।

□□□